बाँसुरी

कक्षा 5 के लिए
कला की पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

0538

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

0538 – बाँसुरी
कक्षा 5 के लिए कला की पाठ्यपुस्तक

ISBN 978-93-5729-154-5

प्रथम संस्करण
दिसंबर 2025 अग्रहायण 1947

PD 120T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 65.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा चंदू प्रेस, 469, पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एस्टेट, दिल्ली-110092 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फ़ोटो प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 **फोन : 011-26562708**

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे, बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरू 560 085 **फोन : 080-26725740**

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 **फोन : 079-27541446**

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस, निकट : धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 **फोन : 033-25530454**

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 **फोन : 0361-2676869**

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम.वी. श्रीनिवासन*
मुख्य संपादक	:	*बिज्ञान सुतार*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अमिताभ कुमार*
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	:	*दीपक जैसवाल*
सहायक संपादक	:	*मीनाक्षी*
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	*प्रकाश वीर सिंह*

डिजाइन, चित्रांकन एवं लेआउट : संतोष मिश्रा, एमार्ट्स, दिल्ली

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का बुनियादी स्तर, विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए, उन्हें न केवल हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था के अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने में सक्षम बनाता है, अपितु बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता अर्जित करने का भी अवसर देता है जिससे वे अधिक चुनौतीपूर्ण आरंभिक स्तर के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो सकें।

आरंभिक स्तर, जो बुनियादी और मध्य स्तरों के बीच एक सेतु का कार्य करता है, विद्यालयी शिक्षा की वह तीन वर्षीय अवधि है, जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 सम्मिलित हैं। यह कहना अनावश्यक होगा कि इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, आवश्यक रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खेल-आधारित, खोज और गतिविधि प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ सतत रहेंगी, परंतु इसी बीच इस स्तर पर बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से अधिक औपचारिक रूप में परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति में डालना नहीं है, अपितु उनका पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों द्वारा आधार तैयार करना है।

अतः इस स्तर पर बच्चे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा व पर्यावरण शिक्षा के साथ-साथ भाषा, गणित, आरंभिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से भी परिचित होंगे। यहाँ यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों का संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक तथा भौतिक-प्राणिक स्तरों पर समग्र विकास हो ताकि वे सहजता से मध्य स्तर में प्रवेश कर सकें।

कक्षा 5 की कला की पाठ्यपुस्तक *बाँसुरी* को इन उद्देश्यों के अनुरूप सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। यह *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* की अनुशंसाओं का पालन करती है। यह पाठ्यपुस्तक वैचारिक समझ, समालोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता, मूल्यों और इस विकासात्मक अवस्था के लिए आवश्यक प्रवृत्तियों पर विशेष बल देती है।

© NCERT not to be republished

यह पाठ्यपुस्तक समावेशन, बहुभाषावाद, जेंडर समानता और सांस्कृतिक मौलिकता जैसे व्यापक विषयों को समाहित करती है, साथ ही उपयुक्त आईसीटी और विद्यालय-आधारित मूल्यांकन को भी एकीकृत करती है। इसकी रोचक विषयवस्तु और गतिविधियाँ विद्यार्थियों की रुचि को बनाए रखने के साथ-साथ सामूहिक अधिगम को प्रोत्साहित करती हैं, जिससे शिक्षार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए शैक्षणिक अनुभव और भी समृद्ध होता है।

यह स्मरण रखना अत्यंत आवश्यक है कि इस पाठ्यपुस्तक का शैक्षणिक दृष्टिकोण समझ, समालोचनात्मक चिंतन, तर्क और निर्णय क्षमता के विकास पर केंद्रित है। इस अवस्था में विद्यार्थियों के प्रश्नों का समाधान करके और मुख्य अधिगम सिद्धांतों पर आधारित गतिविधियाँ तैयार करके उनकी स्वाभाविक जिज्ञासा को पोषित करना चाहिए। यद्यपि खेल आधारित पद्धति रहेगी किंतु शिक्षण में प्रयुक्त खिलौनों और खेलों का स्वरूप अब केवल आकर्षण तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता और जुड़ाव को बढ़ाने की दिशा में विकसित होगा।

यह पाठ्यपुस्तक बहुत उपयोगी है, परंतु विद्यार्थियों को विषय से संबंधित अन्य संसाधनों का भी अन्वेषण करना चाहिए। विद्यालय के पुस्तकालयों को इस विस्तृत अधिगम में सहायक भूमिका निभानी चाहिए और अभिभावकों व शिक्षकों को विद्यार्थियों के प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। एक प्रभावी अधिगम परिवेश विद्यार्थियों को प्रेरित करता है, उनकी सक्रिय भागीदारी बनाए रखता है तथा अधिगम के लिए आवश्यक जिज्ञासा व विस्मय की भावना को विकसित करता है।

मैं आत्मविश्वास के साथ, इस पाठ्यपुस्तक की अनुशंसा प्रारंभिक अवस्था के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए करता हूँ। इसके विकास में योगदान देने वाले सभी लोगों के प्रति मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पाठ्यपुस्तक सभी की अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

परिषद प्रणालीगत सुधारों और प्रकाशनों की गुणवत्ता को निरंतर बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। हम पाठ्यपुस्तक की सामग्री को और अधिक परिष्कृत करने हेतु आपके सुझावों का स्वागत करते हैं।

नई दिल्ली
दिसंबर, 2025

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

पुस्तक के विषय में

जैसा कि आप जानते हैं, यह पुस्तक *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* जैसे नवीनतम दस्तावेजों के आधार पर विकसित की गई है। इन दस्तावेजों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी विद्यार्थी पाठ्यचर्या लक्ष्यों और आयु एवं अवस्था के अनुरूप आवश्यक दक्षताओं को प्राप्त करें। पाठ्यचर्या लक्ष्यों, दक्षताओं तथा अधिगम प्रतिफलों के आधार पर एक पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* ने कला शिक्षा को कक्षा 10 तक एक अनिवार्य पाठ्य विषय के रूप में अपनाने की अनुशंसा की है। साथ ही, यह भी सुझाव दिया गया है कि विद्यालय प्रत्येक शैक्षणिक सत्र में कला के लिए 100 घंटे अवश्य दें। कला की यह शिक्षा चार मुख्य घटकों में विभाजित है— दृश्य-कला, रंगमंच, संगीत और नृत्य।

इसी आधार पर *बाँसुरी* पाठ्यपुस्तक को चार इकाइयों में बाँटा गया है, जिनमें प्रत्येक इकाई में संबंधित अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में ऐसी कई गतिविधियाँ दी गई हैं, जिन्हें इस कक्षा के विद्यार्थी आपके सहयोग से सहजतापूर्वक कर सकते हैं।

इस पाठ्यपुस्तक की समग्र भावना आपको प्रेरित करती है कि आप समूह में मिलकर कार्य करें, अपने विचारों, भावनाओं और अनुभूतियों को अभिव्यक्त करें, अपने मित्रों की कलात्मकता को स्वीकार करें, समावेशी वातावरण में कार्य करें तथा अपने राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ने का भाव जागरूकता एवं गर्व के साथ अनुभव करें।

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक (*बाँसुरी*) का उपयोग कैसे करें

यह पाठ्यपुस्तक चार इकाइयों में विभाजित है और पिछली कक्षा की पुस्तक की तरह प्रत्येक इकाई को एक अलग रंग दिया गया है, जिससे अब तक अधिकांश विद्यार्थी इन रंगों के उपयोग के अभ्यस्त हो चुके होंगे—

- ☞ **पीला** दृश्य-कला के लिए है
- ☞ **बैंगनी** रंगमंच के लिए है
- ☞ **नीला** संगीत के लिए है
- ☞ **गुलाबी** नृत्य के लिए है

प्रत्येक इकाई में संबंधित कलारूप से जुड़ी रोचक गतिविधियाँ और अध्याय दिए गए हैं, जिनका आप आनंदपूर्वक अभ्यास कर सकते हैं। चारों कलारूपों के लिए एक-एक स्वतंत्र इकाई निर्धारित की गई है। यद्यपि ये सभी कलारूप अपनी-अपनी विशेषताओं में अद्वितीय हैं, फिर भी इनके मध्य कई रोचक समानताएँ हैं— बिलकुल बच्चों की तरह। प्रत्येक इकाई का प्रारंभ उस कला रूप के संक्षिप्त परिचय से होता है, जिसे विद्यार्थी अनुभव करेंगे। प्रत्येक अध्याय में आपके लिए गतिविधियाँ आयोजित करने और संसाधनों को खोजने के लिए कई संकेत दिए गए हैं, विशेषकर वे संसाधन जो अध्याय में दिए गए क्यू.आर. कोड में समाहित हैं।

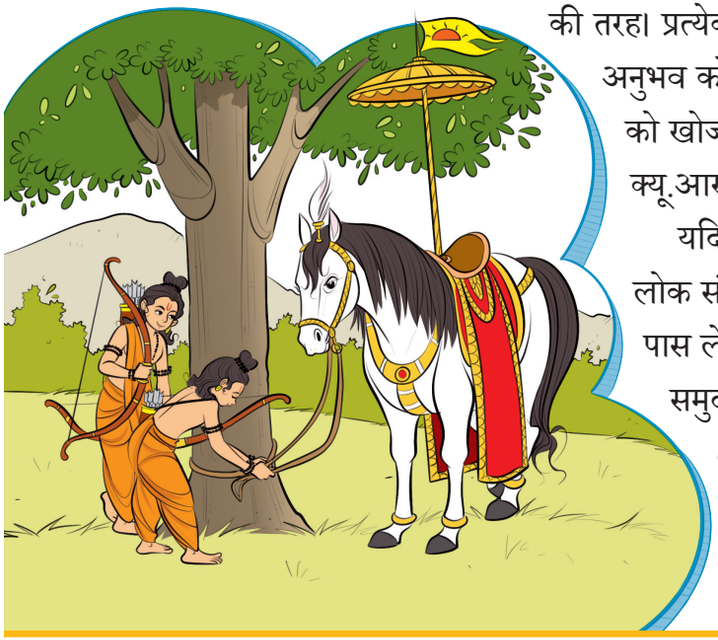

यदि आपके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं है, तो आप विद्यार्थियों को स्थानीय कलाकारों, लोक संगीतकारों, नर्तकों और अन्य प्रदर्शनकारी कलाकारों से परिचित कराने हेतु उनके पास ले जा सकते हैं या उन्हें विद्यालय में आमंत्रित कर सकते हैं। कई अभिभावक और समुदाय के सदस्य, जो किसी कला रूप में निपुण हैं, विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुति देने के लिए सहर्ष तैयार हो सकते हैं। विद्यालय में कलाकारों और प्रदर्शकों के साथ संवाद

© NCERT not to be republished

सत्रों का नियमित आयोजन किया जा सकता है, जहाँ विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। यह उनके लिए अत्यंत प्रेरणादायक अनुभव होगा।

आपको विद्यार्थियों को केवल कक्षा तक सीमित नहीं रखना चाहिए, अपितु उन्हें कक्षा और विद्यालय से बाहर ले जाकर उनके आस-पास की दुनिया को देखने, प्रकृति को अनुभव करने और लोगों की दैनिक गतिविधियों को देखने का अवसर देना चाहिए। नाटक, नृत्य-प्रस्तुति, संगीत-कार्यक्रम और कला-प्रदर्शनी को देखने के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन विद्यार्थियों को प्रेरित करने में सहायक होगा। पाठ्यपुस्तक में अनेक गतिविधियों का सुझाव दिया गया है, किंतु आप इच्छानुसार और भी नवीन गतिविधियाँ तैयार कर सकते हैं तथा उन्हें स्थानीय संदर्भों, उपलब्ध सामग्री एवं संसाधनों के अनुसार अनुकूलित भी कर सकते हैं।

समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जानी चाहिए कि विद्यार्थियों को सप्ताह में चारों कला-रूपों (दृश्य कला, रंगमंच, संगीत और नृत्य) के लिए निश्चित कालांश मिल सके। जहाँ संभव हो, वहाँ कालांश या दो संयुक्त कालांश रखे जा सकते हैं, ताकि विद्यार्थी गतिविधियों को सहजता से संपादित कर सकें, क्योंकि ये सभी गतिविधियाँ रुचिकर और आनंददायक होती हैं। कक्षा 4 की तरह ही, प्रत्येक कला-कक्षा के आरंभ के कुछ क्षणों में विद्यार्थी अपनी आँखें मूंदकर पिछली कक्षा की स्मृति को दोहरा सकते हैं। अपनी गतिविधियाँ आरंभ करने से पूर्व वे *नाट्यशास्त्र* को आधार बनाकर नंदिकेश्वर द्वारा रचित *अभिनय-दर्पण* में वर्णित इस श्लोक का उच्चारण कर सकते हैं—

आङ्गिकं भुवनं यस्य
वाचिकं सर्व वाङ्मयम्
आहार्यं चन्द्र तारादि
तं वंदे सात्विकं शिवम्

अर्थ—

जहाँ शरीर समस्त ब्रह्मांड है, वाणी समस्त ध्वनियों का सार है और आभूषण चंद्रमा व तारों के समान है, मैं उस परम दिव्यता को नमन करता हूँ।

© NCERT not to be republished

अंतिम 10 मिनट को 'आइए घेरा बनाएँ'(सर्कल टाइम) के रूप में रखा जा सकता है। जैसा कि रंगमंच अनुभाग में सुझाया गया है, इस समय सभी विद्यार्थी शिक्षक के साथ गोल घेरे में बैठते हैं और स्वतंत्र रूप से अपने विचार, अनुभव और भावनाएँ व्यक्त करते हैं। यह समय बच्चों के लिए अनौपचारिक होता है, परंतु शिक्षकों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण अवलोकन का अवसर होता है। शिक्षक इस दौरान टिप्पणियाँ और नोट्स बनाकर अगली पाठ्य योजनाओं में उनका उपयोग कर सकते हैं।

बच्चे में कौशल विकास और दक्षताओं के स्तर की प्रगति को चिह्नित किए जाने हेतु आकलन उपकरण भी सुझाए गए हैं। कला विषय में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण जैसा कोई मापदंड नहीं होता। इस स्तर पर कुछ भी न अच्छा है और न बुरा, प्रत्येक रचना में सुधार की संभावना होती और विद्यार्थियों को गतिविधियाँ करते समय सिद्धांतों की समझ के साथ कार्य पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यदि वे चूक जाएँ तो उन्हें हतोत्साहित नहीं, अपितु प्रेरित किया जाना चाहिए, वे निश्चित रूप से कार्य पूर्ण करेंगे। प्रत्येक विद्यार्थी एक-दूसरे से भिन्न होता है, उसी तरह उनकी क्षमताएँ और अभिव्यक्तियाँ भी भिन्न होती हैं और यही विविधता उनके बचपन की सुंदरता है। अत: उनकी और उनकी प्रस्तुति की तुलना कक्षा के अन्य विद्यार्थियों से नहीं करनी चाहिए, अपितु उनकी निजी प्रगति का आकलन किया जाना चाहिए। उन्हें केवल स्वयं से प्रतिस्पर्धा करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

कला-कक्षा के लिए क्या आवश्यक है?

किसी भी कला गतिविधि के लिए एक प्राकृतिक प्रकाश से युक्त खुला और आरामदायक स्थान आवश्यक है। यह कक्षा के भीतर या बाहर हो सकता है, जहाँ बच्चे स्वतंत्र रूप से घूम-फिर सकें। आपको कुछ सरल और सहज रूप से उपलब्ध सामग्री की आवश्यकता होगी, जैसे— रंगमंच सामग्री (थिएटर) के लिए साधारण वस्तुएँ, चित्रकला व शिल्प के लिए कला सामग्री, उपकरण और बुनियादी स्टेशनरी और बच्चों की कलाकृतियों को सुरक्षित एवं व्यवस्थित रूप से रखने के लिए स्थान, प्रदर्शन-पट या सूचना-पट, जिस पर बच्चों के कार्य को प्रदर्शित और साझा किया जा सके, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, स्पीकर, ताकि दृश्य-श्रव्य

© NCERT not to be republished

0_Prelims_Hindi_1.indd 9 16-Dec-25 10:54:58 AM

संसाधनों का प्रयोग किया जा सके और कुछ सरल वाद्ययंत्र। यह सुनिश्चित करें कि ये सभी सामग्री और संसाधन स्थानीय रूप से उपलब्ध हों और उनका समुचित उपयोग किया जाए।

हम आशा करते हैं कि यह पाठ्यपुस्तक सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए उपयोगी, रोचक और समृद्ध सामग्री से युक्त सिद्ध होगी, जो प्रत्येक कला-कक्षा को रोमांचक और उत्कृष्ट बना देगी। हम पुस्तक की संरचना और विषयवस्तु को अधिक उत्तम बनाने हेतु आपके सुझावों का स्वागत करते हैं। हमारा निरंतर प्रयास है कि दृश्य और प्रदर्शन कलाएँ प्रत्येक विद्यार्थी के विकास के वर्षों का अभिन्न भाग बनें, जिससे वे भविष्य में आत्मविश्वासी, भावनात्मक रूप से सशक्त और संतुलित नागरिक बन सकें।

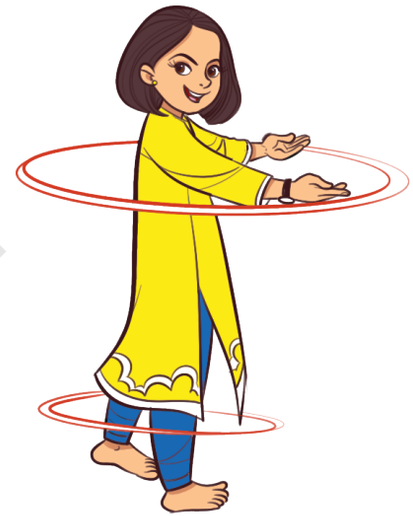

ज्योत्स्ना तिवारी
सदस्य-समन्वयक
आचार्य एवं *अध्यक्ष*
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

© NCERT not to be republished

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

1. महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान **(अध्यक्ष)**
2. मञ्जुल भार्गव, *आचार्य*, प्रिंसटन विश्वविद्यालय **(सह-अध्यक्ष)**
3. सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित *लेखिका* एवं *शिक्षाविद*
4. बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
5. शेखर मांडे, पूर्व *महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित *आचार्य*, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
6. सुजाता रामदोरई, *आचार्य*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा
7. शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई
8. यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरु
9. मिशेल डैनिनो, *अतिथि आचार्य*, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, गांधीनगर
10. सुरीना राजन, *भारतीय प्रशासनिक सेवा* (सेवानिवृत्त), हरियाणा, *पूर्व महानिदेशक*, एच.पी.ए.
11. चमू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
12. संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
13. एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, नीति अध्ययन केंद्र, चेन्नई
14. गजानन लोंढे, *प्रमुख*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.
15. रबिन छेत्री, *निदेशक*, रा.शै.अ.एवं.प्र.प, सिक्किम
16. प्रत्यूष कुमार मंडल, *आचार्य*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17. दिनेश कुमार, *आचार्य*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18. कीर्ति कपूर, *आचार्य*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19. रंजना अरोड़ा, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (सदस्य-सचिव)

© NCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

अध्यक्ष

संध्या पुरेचा, *अध्यक्ष*, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

योगदान

आराधना गुप्ता, *कलाकार* और *अध्यक्ष,* ग्लोबल नॉलेज नेटवर्क सोसाइटी (जी.के.एन.एस.)

कपिल शर्मा, *सहायक प्रोफेसर*, नाट्य विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

ज्योति भट, *भरतनाट्यम संकाय*, पूर्ण प्रमति, बेंगलुरु

प्रियदर्शिनी घोष, *नृत्यांगना*, *नृत्य संयोजक* एवं *नृत्यविद*, कलात्मक निदेशक, प्रियदर्शिनी आर्ट्स

बिंदु सुब्रमण्यम, *गायिका-संगीतकार* और *सह-संस्थापक*, सुब्रमण्यम अकादमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (एस.ए.पी.ए.—सा.पा.)

बिदिशा हाजरा, *सहायक प्रोफेसर*, कला शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

मानसी प्रसाद, *कर्नाटक संगीत गायिका*, बोर्ड सदस्य (पूर्व *निदेशक*), इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियंस म्यूजियम, कला परामर्शदाता

मालविका राजनारायण, *दृश्य कलाकार* और *शिक्षिका* तथा *अतिथि आचार्य* , अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, भोपाल

राजश्री एस.आर., रा.पा.एवं.एन.एस.टी.सी. कार्यक्रम कार्यालय, *वरिष्ठ रंगमंच सलाहकार*, संस्थापक-निदेशक, व्योमा आर्टस्पेस एंड स्टूडियो थिएटर, बेंगलुरु

शिवांगी पुरोहित, *उप-प्रधानाचार्य*, ज्योति पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

सिद्धि गुप्ता, *संकाय सदस्य*, सृष्टि मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी, बेंगलुरु

सुधनवा ए.के., *नाट्य संकाय*, श्री विद्या केंद्र तथा संस्थापक, नवक्षितिज रंगमंच, बेंगलुरु

अनुवादक

आलोक तिवारी, *पी.जी.टी.* हिंदी, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर स्कूल ऑफ स्पेशलाइज्ड एक्सीलेंस, नई दिल्ली

आशीष देवांगन, *मुख्य अधीक्षक*, सांस्कृतिक प्रभारी, दक्षिण पूर्वी मध्य रेलवे, बिलासपुर

कपिल शर्मा, *सहायक आचार्य*, नाट्य विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

पुरुषोत्तम पाटिल, *सहायक आचार्य*, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण परिषद्, आगरा, भारत सरकार

समीक्षक

अनुराग बेहर, *सदस्य*, एन.एस.टी.सी.

मञ्जुल भार्गव, *आचार्य* एवं *सह-अध्यक्ष*, एन.एस.टी.सी.

अनुराधा पाल, *तबला वादक*, संगीतकार

स्वस्ति शर्मा, *वरिष्ठ परामर्शदाता*, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.

सदस्य-समन्वयक

ज्योत्स्ना तिवारी, *सदस्य समन्वयक*, *विभागाध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

© NCERT not to be republished

0_Prelims_Hindi_1.indd 13 16-Dec-25 10:54:59 AM

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनसुंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति (एन.सी.एफ.ओ.सी.) के सम्मानीय अध्यक्ष और सदस्यों, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी.) — कला के अध्यक्ष और सदस्यों एवं अन्य संबंधित पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह के उन सभी सदस्यों का आभार ज्ञापित करती है, जिन्होंने पार-अनुशासनात्मक विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। परिषद् एन.एस.टी.सी. कार्यक्रम कार्यालय के सदस्यों के प्रति भी उनके निरंतर सहयोग और समर्थन के लिए कृतज्ञ है, जिनकी सहायता से इस पाठ्यपुस्तक का विकास संभव हो सका। परिषद् सभी विभागाध्यक्षों और पार-अनुशासनिक क्षेत्रों के संकाय सदस्यों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करती है, जिन्होंने इस पुस्तक की गुणवत्ता सुधारने हेतु अपने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रदान किए।

परिषद् उन संस्थानों, संगठनों, व्यक्तियों का आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए उपयोगी लिखित सामग्री, चित्र, छायाचित्र, दृश्य-श्रव्य सामग्री आदि संसाधन प्रदान किए। इनमें सम्मिलित हैं — संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली; कला उत्सव अभिलेखागार, रा.शै.अ.प्र.प.; व्योमा आर्ट स्पेस एवं स्टूडियो थिएटर, बेंगलुरु; सुब्रमण्यम अकादमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (सापा), बेंगलुरु; प्रियदर्शिनी आर्ट्स, कोलकाता; ज्योति पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली; पुरपार्मती पाठशाला, बेंगलुरु; राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली; तथा द मेट्रोपॉलिटन म्यूजियम ऑफ आर्ट (पब्लिक डोमेन छवियाँ); म्यूजेओ दू ओरिएंते; मल्लूक्कारन द्वारा थोलपवाकोथु की छवि (CC BY SA 4.0 लाइसेंस के अंतर्गत); मॉडर्न स्कूल, बाराखंभा रोड, नई दिल्ली; स्मार्ट लर्नर्स अकादमी, कोलकाता; अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन; तमिल संगम, सी.आई.ई.टी., तमिलनाडु; चिल्ड्रेन लिटिल थिएटर, कोलकाता; ग्लोबल नॉलेज नेटवर्क सोसाइटी, देहरादून; संचयिता मुंशी साहा, नृत्यभाष, कोलकाता; और मोज़ेक, कोलकाता।

परिषद् अग्रलिखित व्यक्तियों और संस्थानों के अमूल्य योगदान और सहयोग के लिए भी आभार प्रकट करती है— प्रधानाचार्य, केंद्रीय विद्यालय, आर.के. पुरम, नई दिल्ली; प्रियांका के. मोहन, यक्ष देगुला,

© NCERT not to be republished

बेंगलुरु; सोमशेखर जोइस, *विद्वान* और *कोनाक्कोल विशेषज्ञ*; तथा निधि एम. शास्त्री, एन.एस.टी.सी. कार्यक्रम कार्यालय, भाषा समीक्षा और संपादन सहयोग के लिए।

परिषद् कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग में कार्यरत प्रतीक रंजन झा, *वरिष्ठ अनसुंधान सहयोगी* (संविदा) एवं ऋचा शर्मा, नेहा सिंह, दीपक कुमार ठाकुर, शैलेन्द्र कुमार, *कनिष्ठ परियोजना अध्येता* (संविदा) और मन्नु यादव, *कंप्यूटर टाइपिस्ट* (संविदा) के सराहनीय योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद देती है।

परिषद् कहकशा, *सहायक संपादक* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के इस पाठ्यपुस्तक के संपादन हेतु प्रयासों की सराहना करती है। पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; तथा पूनम डोबरियाल, संजू शर्मा, उपासना और अनीता कुमारी, *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. की इस पुस्तक को अंतिम रूप देने में किए गए परिश्रम और योगदान की भी सराहना की जाती है। परिषद् सुनील कुमार, अचिंका सिंह, *प्रूफ रीडर* (संविदा), प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

© NCERT not to be republished

0_Prelims_Hindi_1.indd 15 16-Dec-25 10:55:02 AM

समय आवंटन और आकलन

इस कला शिक्षा की पाठ्यपुस्तक में चार अनुभाग हैं, जिनमें प्रत्येक अनुभाग भिन्न-भिन्न कलारूप पर केंद्रित है। यह आवश्यक है कि समय-सारणी इस प्रकार बनाई जाए कि सभी कलारूपों के शिक्षण का समान रूप से पूरे वर्ष में वितरण हो।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुसार, कला शिक्षा के लिए पूरे शैक्षणिक वर्ष में 100 घंटे (या 40-40 मिनट के 150 कालांश) का समय निर्धारित किया गया है। इस पुस्तक की रचना इसी समय निर्धारण को ध्यान में रखकर की गई है। सप्ताह के दौरान चारों कलारूपों को समान रूप से वितरित करना अधिक उपयुक्त होगा ताकि सभी अनुभागों में एक साथ प्रगति हो सके। यह उचित नहीं होगा कि एक कलारूप को पूरी तरह समाप्त करने के पश्चात ही अगले अनुभाग को प्रारंभ किया जाए।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार समय वितरण

कलारूप	दृश्य-कला	संगीत	नृत्य	रंगमंच	बहुविषयक/अनुभवात्मक कार्य
समय (घंटों में)	20	20	20	20	20
40 मिनट की अवधि वाले कालांशों की संख्या	30	30	30	30	30

समय-सारिणी

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 की निर्दिष्ट समय-सारणी के अनुसार, कला शिक्षा के लिए सप्ताह में चार कालांश और शनिवार को एक कालांश निर्धारित किया गया है। इस परिपत्र में यह सुझाव भी दिया गया है कि संयुक्त कालांश का उपयोग किया जाए अर्थात् दो 40 मिनट के कालांश को मिलाकर एक 80 मिनट (1 घंटा 20 मिनट) का एक कालांश बनाया जाए। इन विकल्पों के आधार पर सप्ताह के चार कार्यदिवसों में चारों कलारूपों को एक-एक कालांश आवंटित किया जा सकता है, जबकि शुक्रवार और शनिवार को अंतर्विषयक गतिविधियों या कला-आधारित शैक्षिक भ्रमणों के लिए रखा जा सकता है, जैसे—संगीत कार्यक्रम, नाट्य या नृत्य प्रस्तुतियाँ अथवा कला दीर्घाओं का भ्रमण।

© NCERT not to be republished

सप्ताह के अंतर्गत अलग-अलग कालांशों के लिए समय-सारिणी (कालांश अवधि 40 मिनट)					
सोम	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक्र**	**शनि**
	कला शिक्षा (संगीत)		कला शिक्षा (दृश्य-कला)		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)
कला शिक्षा (रंगमंच)		कला शिक्षा (नृत्य)			

सप्ताह के अंतर्गत कालांश इकाई के लिए समय-सारिणी (कालांश अवधि 80 मिनट)						
सप्ताह	**सोम**	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक्र**	**शनि**
सप्ताह 1		कला शिक्षा (संगीत) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (दृश्य-कला) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)
सप्ताह 2		कला शिक्षा (रंगमंच) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (नृत्य) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)

पहली योजना में 40 मिनट के कक्षा कालांश होते हैं जो प्रत्येक सप्ताह सभी चार कलारूपों की कक्षाओं को सम्मिलित करती है। दूसरी योजना में प्रत्येक सप्ताह केवल दो कलारूपों की कक्षाएँ होती हैं। प्रत्येक कलारूप की कक्षा प्रत्येक वैकल्पिक सप्ताह में होगी। यह सुनिश्चित करना अत्यंत आवश्यक है कि सभी कलारूपों की प्रगति एक साथ हो। ऐसा करने से विद्यार्थियों को इन कला रूपों के बीच अंतर्संबंधों को समझने में सहायता मिलेगी, जिससे उनकी कला की समझ अधिक समग्र और व्यापक बन सकेगी।

© NCERT not to be republished

0_Prelims_Hindi_1.indd 17 16-Dec-25 10:55:02 AM

आकलन

कला शिक्षा में आकलन का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों की रचनात्मक क्षमताओं और कलात्मक विकास को समझना तथा प्रोत्साहित करना है। अन्य विषयों के विपरीत कला शिक्षा का आकलन केवल तथ्यों या निष्कर्षों पर आधारित नहीं होता, अपितु इसमें विविध कौशलों का आकलन सम्मिलित होता है, जैसे— रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, तकनीकी दक्षता और अभिव्यक्ति की क्षमता। ये आकलन केवल प्रगति और दक्षता को मापने के लिए नहीं, अपितु विद्यार्थियों को नए प्रयोग करने, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने और कला के प्रति गहरी समझ विकसित करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से किए जाते हैं।

आकलन की विधियाँ

कला शिक्षा में आकलन मुख्यतः कौशल-आधारित होता है। इसलिए यह विद्यार्थी के 'सही' या 'गलत' उत्तरों पर आधारित नहीं होता। अतः यह आवश्यक है कि आकलन के लिए प्रश्नपत्र और लिखित उत्तरों जैसी पारंपरिक 'परीक्षा' की संरचना न की जाए, क्योंकि यह कला शिक्षा पाठ्यक्रम की मूल भावना के विरुद्ध होगा। आकलन के लिए विभिन्न विधियाँ अपनाई जा सकती हैं, जैसे— पोर्टफोलियो आकलन (विद्यार्थी के कार्यों का संकलन), प्रदर्शन आधारित आकलन, परियोजना आधारित आकलन, स्व-आकलन और आत्म-परिवर्तन पर आधारित विचारशील अभिलेख आदि। ये विधियाँ प्रत्येक विद्यार्थी की कलात्मक यात्रा और उनके व्यक्तिगत विकास को समझने में सहायक होती हैं।

रचनात्मक तथा योगात्मक आकलन

- रचनात्मक आकलन प्रत्येक कक्षा में अवलोकन और प्रत्येक गतिविधि में विद्यार्थी के प्रदर्शन पर आधारित होता है। अध्यायों के अंत में दिए गए रूब्रिक वर्षभर के अंकों/दक्षता स्तर को संरचित करने में सहायता करते हैं।
- योग्यता आधारित आकलन के लिए एक अलग दिन निर्धारित करना आवश्यक होता है। पूरे वर्ष कक्षा में कराई गई गतिविधियों और उनके विविध रूपों का उपयोग विद्यार्थियों की समझ और विभिन्न कौशलों व दक्षताओं में उनकी क्षमता का आकलन करने के लिए किया जा सकता है। प्रत्येक इकाई के अंत में कुछ उदाहरण दिए गए हैं ताकि आकलन की उत्तम योजना बनाई जा सके। विद्यार्थियों को दिए गए कार्य के आधार पर स्वयं सृजन करना होता है।

© NCERT not to be republished

दक्षता स्तर और अंक

कला रचनात्मकता, कल्पनाशीलता, अभिव्यक्ति और दृष्टि कौशल पर आधारित होती है। इसमें सही या गलत उत्तर नहीं होते। अतः आकलन में अंक बच्चे द्वारा प्राप्त कौशल का स्तर और प्रदर्शित की गई दक्षताओं के मापदंडों के आधार पर दिए जाते हैं। शिक्षकों के लिए यह आवश्यक है कि वे प्रत्येक गतिविधि से संबंधित दक्षताओं और अधिगम परिणामों से भली-भाँति परिचित हों जिससे आकलन निष्पक्ष रूप से किया जा सके।

मापदंड आधारित आकलन के लिए पाँच-स्तरों की संस्तुति की जाती है। इससे शिक्षकों, अभिभावकों को विद्यार्थियों की प्रगति को स्पष्ट रूप से समझने में सहायता मिलेगी। नीचे दी गई तालिका का उपयोग प्रत्येक अध्याय के बाद दी गई रूब्रिक में पाँच-स्तरों को चिह्नित करने के लिए संदर्भ के रूप में किया जा सकता है।

यह आवश्यक है कि मात्रात्मक आकलन (रूब्रिक के आधार पर अंक/दक्षता स्तर) और गुणात्मक आकलन (व्यवहार, रुचि, प्रगति तथा अन्य पहलुओं पर शिक्षक की टिप्पणियाँ, जो रूब्रिक में उल्लिखित नहीं हो सकतीं) दोनों को मिलाकर आकलन किया जाए।

विद्यार्थी का अधिगम स्तर	अंक तालिका	दक्षता स्तर
प्रारंभिक	1	E
विकासशील	2	D
होनहार	3	C
कुशल	4	B
उत्कृष्ट	5	A

आकलन के मापदंड विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा2023 में उल्लिखित पाठ्यचर्यात्मक लक्ष्यों (CG) और दक्षताओं (C) पर आधारित हैं।

© NCERT not to be republished

0_Prelims_Hindi_1.indd 19 16-Dec-25 10:55:02 AM

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

© NCERT not to be republished

प्रिय विद्यार्थियो,

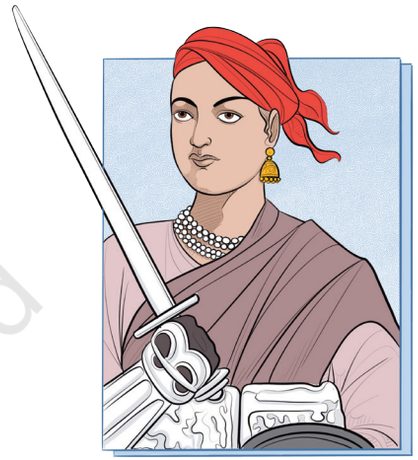

कल्पना कीजिए कि आप ऐसे संसार में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ रंग नृत्य करते हैं, संगीत कथाएँ कहता है और आपको नवीन चरित्र, चित्र और गतियाँ रचने का अवसर मिलता है। कुछ ऐसा ही अनुभव आपको इस पुस्तक में होगा। यह सब प्रारंभ होता है *पंचतंत्र* की एक अद्‌भुत कथा से। एक ऐसी कथा जो ज्ञान, रोमांच और आनंद से भरी हुई है, परंतु यह कोई साधारण कथा नहीं है। प्रत्येक अध्याय में आप इसे चार भिन्न-भिन्न प्रकार से जानेंगे— दृश्य-कला, रंगमंच, संगीत और नृत्य।

जैसे-जैसे आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे, आप जानेंगे कि सभी कलाएँ एक-दूसरे से संबंधित हैं। दृश्य-कला, रंगमंच, संगीत और नृत्य भी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक चित्र उसी प्रकार बिना शब्दों के कहानी कह सकता है, जिस प्रकार एक नाटक भावनाओं को जीवंत बना देता है। जिस प्रकार कोई धुन हमें थिरकने पर विवश कर सकती है, उसी प्रकार एक नृत्य उन भावनाओं को अभिव्यक्त कर सकता है जिन्हें शब्दों में नहीं कहा जा सकता। कला हमारे चारों ओर है और इस पुस्तक के माध्यम से आप नए ढंग से देखना, सुनना, अनुभव करना और अभिव्यक्त करना सीखेंगे।

प्रत्येक अध्याय आपको रोमांचक गतिविधियों के माध्यम से मार्गदर्शन प्रदान देगा। आप कहानी का कोई दृश्य चित्रित कर सकते हैं और मित्रों के साथ कोई रोचक क्षण अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं, चरित्रों से प्रेरित होकर अपनी स्वयं की लय बना सकते हैं या फिर विभिन्न भावनाओं को अंग संचालन के माध्यम से व्यक्त कर सकते हैं। आपको साथ मिलकर कार्य करने का अवसर भी मिलेगा। ठीक वैसे ही जैसे *पंचतंत्र* की कहानी में जानवरों ने किया था। आप यह भी जानेंगे कि समूह में किया गया कार्य कला को कितना अधिक प्रभावशाली बना देता है।

© NCERT not to be republished

यह यात्रा केवल नई कलाएँ सीखने की नहीं है। यह अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम ढूँढ़ने की यात्रा भी है। चाहे आपको चित्र बनाना पसंद हो, अभिनय करना, गाना या नृत्य करना, यह पुस्तक आपको ऐसी विधियों से अभिव्यक्ति करने में आपकी सहायता करेगी, जिनकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। कला में रचना और साझा करने की प्रसन्नता के अतिरिक्त सही या गलत कुछ नहीं होता। तो तैयार हो जाएँ ढूँढ़ने, प्रयोग करने और व्यक्त करने के लिए।

जब तक आप अंतिम पृष्ठ पर पहुँचेंगे, तब तक आप केवल एक कहानी नहीं पढ़ चुके होंगे। आप उसे कला के माध्यम से जी चुके होंगे। आइए, इस चमत्कारी यात्रा का आरंभ साथ मिलकर करें!

© NCERT not to be republished

विषय सूची

आमुख ..... *iii*

पुस्तक के विषय में ..... *v*

समय आवंटन और आकलन ..... *xvi*

प्रिय विद्यार्थियो ..... *xxi*

दृश्य-कला 1

1. गतिशील वस्तुएँ 4

2. झरोखे से 13

3. कथाओं का चित्रांकन 23

4. काल्पनिक जीव 33

5. संदेश का प्रचार-प्रसार 41

रंगमंच 51

6. दृश्य की परिकल्पना 55

7. इसे एक कहानी का रूप दें 63

8. समय, समूह और तकनीक 69

9. देखें और समीक्षा करें 83

© NCERT not to be republished

संगीत 92

10. गायन एवं वादन 95
11. कण-कण में संगीत 101
12. ध्वनियाँ एवं वाद्ययंत्र 106
13. स्वर-संरचना 113
14. विचार और प्रेरणा 124

नृत्य 132

15. नृत्य के विभिन्न रंगों में मेरी दिनचर्या 135
16. लय के साथ नृत्य 143
17. राष्ट्रीय नृत्य 153
18. नृत्य द्वारा भावाभिव्यक्ति एवं कथावाचन 158
19. अपना एवं दूसरों का नृत्य 166

© NCERT not to be republished

भारत का संविधान

भाग-3 (अनुच्छेद 12-35)
(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधन के अधीन)
द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण;
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर;
- लोक नियोजन के विषय में;
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य;
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण;
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण;
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा;
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात श्रम का प्रतिषेध;
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता;
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता;
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता;
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण;
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

© NCERT not to be republished

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओ :

जो सबसे गरीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

© NCERT not to be republished

दृश्य-कला

प्रिय शिक्षक,

आइए हम अपने विद्यार्थियों को एक ऐसे स्थान पर ले चलें जहाँ वे दृश्य-कलाओं में सक्रिय भागीदारी कर सकें और अपनी कल्पनाओं को व्यावहारिक गतिविधियों के माध्यम से अभिव्यक्त कर सकें। दृश्य-कला के आनंददायक अनुभव को प्राप्त करने और साझा करने के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को स्वतंत्रता और स्वेच्छा से कार्य करने की अनुमति दी जाए।

कक्षा की आवश्यकताएँ

1. विद्यार्थियों के सहज रूप से कार्य करने के लिए पर्याप्त हवादार स्थान।
2. कला-सामग्री, उपकरण, आवश्यक स्टेशनरी, श्रव्य-दृश्य (ऑडियो-विज़ुअल) सुविधाओं तथा उनके समुचित भंडारण हेतु उपयुक्त स्थान की उपलब्धता।
3. कलाकृतियों की समय-समय पर प्रस्तुति एवं प्रदर्शनी के लिए समुचित स्थान।

दृश्य-कला का शिक्षणशास्त्र

1. अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझाने के लिए कथा-कथन और दैनिक जीवन के उदाहरणों का उपयोग करें।
2. विद्यार्थियों को अपनी मौलिक कल्पनाएँ, भावनाएँ, विचार और जिज्ञासाएँ अपनी कलाकृतियों के माध्यम से स्वतंत्रतापूर्वक व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. विद्यार्थियों को दैनिक जीवन का सजग अवलोकन करने हेतु प्रेरित करें और फोटोग्राफ या अन्य स्रोतों से चित्रों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करें।
4. विद्यार्थियों को कक्षा में अपने विचारों पर समन्वेषण, प्रयोग, सहयोग और संवाद करने की स्वतंत्रता दें।
5. अपने परिवेश की संस्कृति और जीवन को देखने-समझने के लिए बाह्य गतिविधि और शैक्षणिक भ्रमण सम्मिलित करें।
6. पढ़ाई जा रही विषय-वस्तु से संबंधित विभिन्न कलाकारों और कलाकृतियों से विद्यार्थियों को परिचित कराएँ।
7. विद्यालय परिसर में कला से संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन करें।
8. स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को आमंत्रित कर उनके साथ संवादात्मक सत्रों और व्यावहारिक कार्यशालाओं का आयोजन करें।
9. विद्यार्थियों में सरल व्यावहारिक प्रवृत्ति विकसित करें, जैसे— कला-सामग्री का सावधानी से उपयोग के पश्चात सामग्री को यथास्थान रखें और गतिविधि के बाद प्रयुक्त स्थान को स्वच्छ करें।
10. प्रदर्शन हेतु कलाकृतियों का चयन करते समय विद्यार्थियों को सहभागिता हेतु एवं निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

दृश्य-कला आकलन

कृपया सभी कला-रूपों के लिए आकलन निर्देश पढ़ें।

1. आकलन अधिगम प्रतिफलों पर आधारित होना चाहिए जो प्रारंभिक स्तर की दक्षताओं से संरेखित हो।
2. प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी कलाकृतियों के लिए एक पोर्टफोलियो बनाना और उनका अनुरक्षण करना सीखना चाहिए। इससे विद्यार्थी एवं शिक्षक को सीखने और प्रगति मापने में सहायता प्राप्त होगी।
3. रचनात्मक आकलन के लिए एक अलग परीक्षा तिथि न होकर इसे कक्षा की गतिविधियों के साथ निम्नवत समेकित होना चाहिए—
   - विद्यार्थियों को गुणात्मक प्रतिपुष्टि देकर उनकी शक्ति और सुधार के क्षेत्रों को स्पष्ट करना।
   - विद्यार्थियों की कला-विषयक औपचारिक और अनौपचारिक चर्चाओं में सहभागिता को रिकॉर्ड करना।
   - उनकी अवलोकन क्षमता और कला गतिविधियों में रुचि का आकलन करने के लिए शैक्षिक भ्रमण के दौरान सरल कार्य देना।
4. एक सत्र के अंत में आकलन परियोजना कार्य या प्रायोगिक गतिविधियों के माध्यम से योगात्मक आकलन किया जाना चाहिए। दृश्य-कला अनुभाग के अंत में कुछ सुझावात्मक उदाहरण दिए गए हैं।

© NCERT not to be republished

आरंभिक स्तर के लिए दक्षताएँ

C-1.1 — अपने दैनिक जीवन, भावनाओं और कल्पनाओं को दर्शाने वाली विभिन्न छवियों को बनाने में उत्साह व्यक्त करते हैं।

C-1.2 — दृश्य-कला में सहयोगात्मक रूप से कार्य करते हुए विभिन्न विचारों और प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करते हैं।

C-2.1 — अपने दैनिक अवलोकनों, व्यक्तिगत अनुभवों और भावनाओं को चित्रित करते समय दृश्य तत्वों (रेखा, आकार, रंग, स्थान, निर्मित) के विभिन्न संयोजनों का रचनात्मक उपयोग करते हैं।

C-2.2 — कक्षा में प्रस्तुत की गई कलाकृतियों के दृश्यात्मक तत्वों, विषयों और अभिव्यक्तियों की तुलना करते हैं।।

C-3.1 — दृश्य-कला में प्रयुक्त सामग्रियों, उपकरणों और तकनीकों के साथ कार्य करते समय उपयुक्त का चयन करते हैं।

C-3.2 — व्यक्तिगत और सहयोगात्मक रूप से दृश्य-कलाकृति बनाते समय योजना निर्माण, क्रियान्वयन और प्रस्तुतिकरण के चरणों का अभ्यास करते हैं।

C-4.1 — प्रकृति में दृश्यात्मक तत्वों को पहचानते हैं और उनकी कलात्मक विशेषताओं का वर्णन करते हैं।

C-4.2 — स्थानीय शिल्प कला और संस्कृति के प्रति जिज्ञासा प्रदर्शित करते हैं।

सभी अध्यायों में आकलनीय अधिगम प्रतिफल				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.2	कलाकृति बनाने और प्रस्तुत करने की प्रक्रिया का सहयोगात्मक रूप से विश्लेषण करते हैं।		
CG-2	C-2.2	विभिन्न कलाकृतियों की संरचना की तुलना करते हैं तथा यह जाँचते हैं कि ये कलाकृतियाँ विभिन्न विचारों और भावनाओं को कैसे व्यक्त करती हैं।		
CG-3	C-3.1	दृश्य-कला-सामग्री और उपकरणों का उचित उपयोग करते हैं।		
CG-4	C-4.1	विभिन्न प्राकृतिक रूपों के दृश्यात्मक संयोजन का अवलोकन और वर्णन करते हैं।		
CG-4	C-4.2	कलाकृतियों के विषय में अपने अवलोकनों और व्याख्याओं को प्रकट करते हैं तथा कलाकारों द्वारा उपयोग की गई विधियों और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं।		

★ *तारांकित गतिविधियाँ किसी भी शिक्षक द्वारा संचालित की जा सकती हैं। ये गतिविधियाँ सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में भी की जा सकती हैं।*

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 1_Hindi.indd 3 07-Jan-26 2:16:15 PM

अध्याय 1

गतिशील वस्तुएँ

0538CH01

क्या आपने कभी किसी मेले में विशालकाय चर्खी झूला (फेरिस पहिया) की सवारी की है? पहिया मानवता के सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कारों में से एक है। 5000 वर्ष पूर्व यह मिट्टी के पात्र बनाने वाले चाक के रूप में अस्तित्व में आया। बाद में इसका उपयोग गाड़ियों और रथों में व्यक्तियों को और सामान को ढोने के लिए होने लगा।

सोचिए कि आप अपने आस-पास किन-किन वस्तुओं और स्थानों में पहियों को देखते हैं? क्या आप पहियों के बिना जीवन की कल्पना कर सकते हैं?

यह अध्याय परिवहन के संसार को जानने एवं समझने में आपकी सहायता करेगा। वाहन हिचकोले खाते हुए निरंतर गतिमान हैं। आप रोमांचक गतिविधियों के माध्यम से वाहनों का अवलोकन करेंगे और विभिन्न कलाकृतियाँ बनाएँगे जो उन्हें नवीन आकार, रंग, रूप और क्रियात्मकता प्रदान करती हैं।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 1.1 वाहन का चित्र बनाइए

आपने अपने परिवार के साथ किसी स्थान पर घूमने के लिए या किसी व्यक्ति से मिलने जाने के लिए संभवत: यात्रा की होगी।

- आपने यातायात के किन साधनों का उपयोग किया?
- क्या आपको अलग-अलग वाहनों में यात्रा करना अच्छा लगा?
- आपको सबसे अधिक आनंद किस वाहन में आया और क्यों? प्रत्येक वाहन का अपना विशेष उद्देश्य, विन्यास (डिजाइन) और विशेषता होती है।
- अपनी रुचि का कोई भी वाहन चुनिए।
- वाहन को ध्यान से देखते हुए उसमें छिपे ज्यामितीय आकार को पहचानिए और उनके चित्र बनाइए।
- अपने चित्र में अतिरिक्त विवरण जोड़िए।
- वाहन का चित्र बनाइए।
- वाहन में अपनी इच्छानुसार रंग भरिए।
- कलाकृति को सड़क सुरक्षा का संदेश लिखकर पूरा करिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 1_Hindi.indd 5 07-Jan-26 2:16:17 PM

गतिविधि 1.2 वाहन के अलग-अलग भागों से प्रतिरूप बनाना

क्या आप कभी किसी मोटर गाड़ी की कार्यशाला में गए हैं? वहाँ मिस्त्री मोटर साइकिल, कार और अन्य वाहनों के विभिन्न भागों को अलग करके उनमें सुधार करते हैं।

जिस प्रकार वाहनों के अलग-अलग भाग होते हैं उसी प्रकार चित्रों और कलाकृतियों के भी भाग होते हैं जिन्हें **दृश्यात्मक तत्व** कहा जाता है।

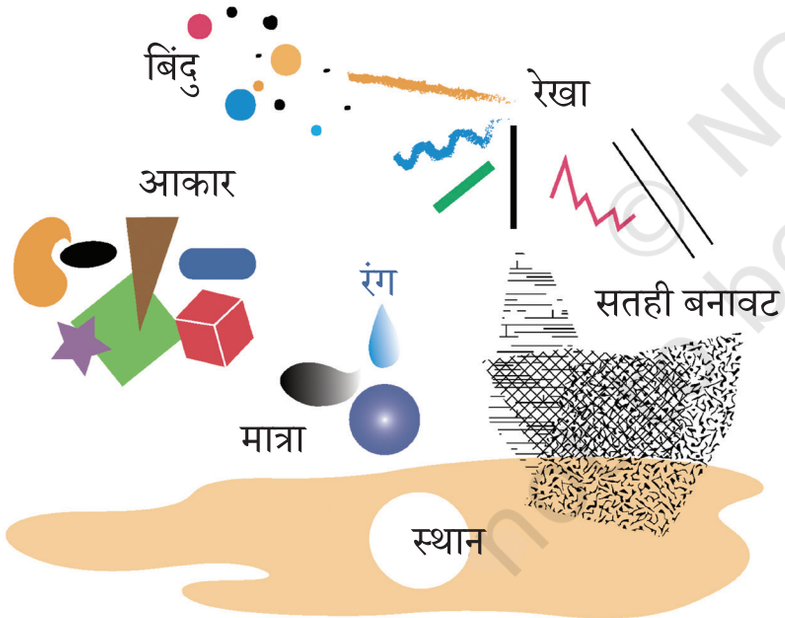

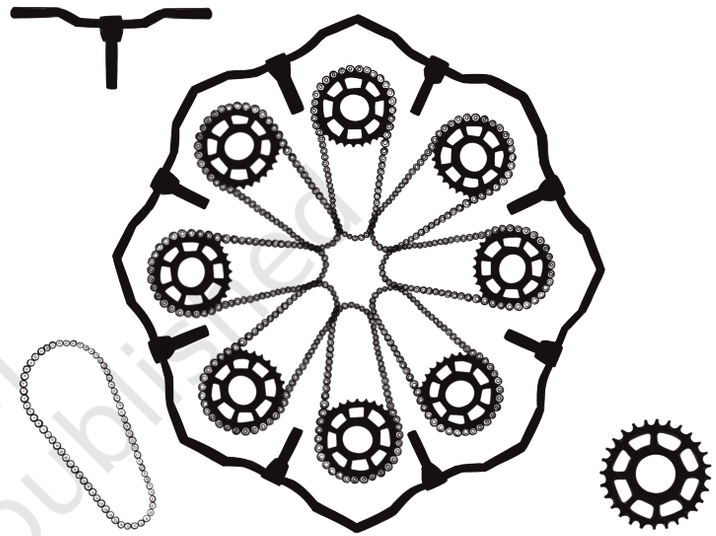

ऊपर दिए गए चित्र में साइकिल के भागों की और दृश्यात्मक तत्वों की पहचान कीजिए।

एक अलग कागज पर किसी वाहन के दो या तीन भागों, जैसे— सीट, घंटी, पेडल, दर्पण, हत्था (हैंडल), संचालन चक्र (स्टीयरिंग व्हील) या किसी अन्य वाहन के भाग का उपयोग करके अपना प्रतिरूप बनाइए। इसमें रंग भर कर इसे और अधिक आकर्षक बनाइए।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 1.3 पहेली सुलझाइए

पृष्ठ में दाहिनी ओर एक वाहन के अनेक भाग दिए गए हैं।

क्या आप इन भागों को देखकर अनुमान लगा सकते हैं कि यह कौन-सा वाहन है?

वाहन को पूर्ण निर्मित करने के लिए अपने चित्र में इन भागों को एक साथ सम्मिलित करें।

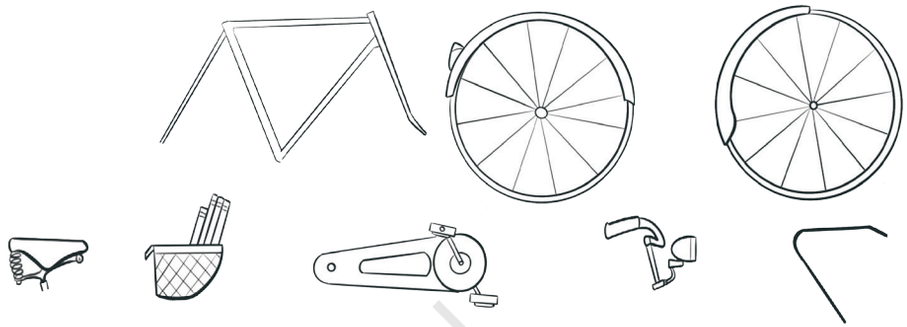

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 1_Hindi.indd 7 07-Jan-26 2:16:18 PM

गतिविधि 1.4 मेरा स्वप्न वाहन

यदि आप अपने सपनों का कोई वाहन बना सकते तो वह कैसा दिखता? क्या वह उड़ता या तैरता या फिर सरकता? क्या उसमें बहुत-से लोग सवार होते या केवल आप होते? क्या वह बच्चों, वृद्धों एवं पशुओं के लिए भी उपयुक्त होता? अपने इस सपनों के वाहन का एक रेखाचित्र बनाइए।

अपने सपनों के वाहन का एक प्रतिरूप (मॉडल) बनाइए

सामग्री— पुराना गत्ता, माचिस की खाली डिब्बियाँ, बोतलों के ढक्कन, अनुपयोगी डिब्बे, लकड़ी की छड़ियाँ, कैंची, गोंद और टेप।

सावधानियाँ— नुकीले अथवा धारदार उपकरणों का उपयोग करते समय सतर्क रहें और आवश्यकता हो तो किसी बड़े से सहायता लें और बड़ों के पर्यवेक्षण में इस कार्य को करें।

अपने चित्र को संदर्भ मानकर अपने सपनों के वाहन का प्रतिरूप बनाइए।

- प्रतिरूप बनाते समय आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन करें।
- जब आपका स्वप्न वाहन बनकर तैयार हो जाए तो रंगों और अन्य सामग्रियों की सहायता से उसकी सजावट करें। संभवत: आपने साइकिलों, ऑटो रिक्शाओं और ट्रकों को सजा हुआ देखा होगा। यह सजावट सामान्यत: चालक या वाहन के स्वामी की पहचान को दर्शाती है। जब आपका वाहन तैयार हो जाए तो अपनी रुचि के अनुसार उसकी सजावट करें।

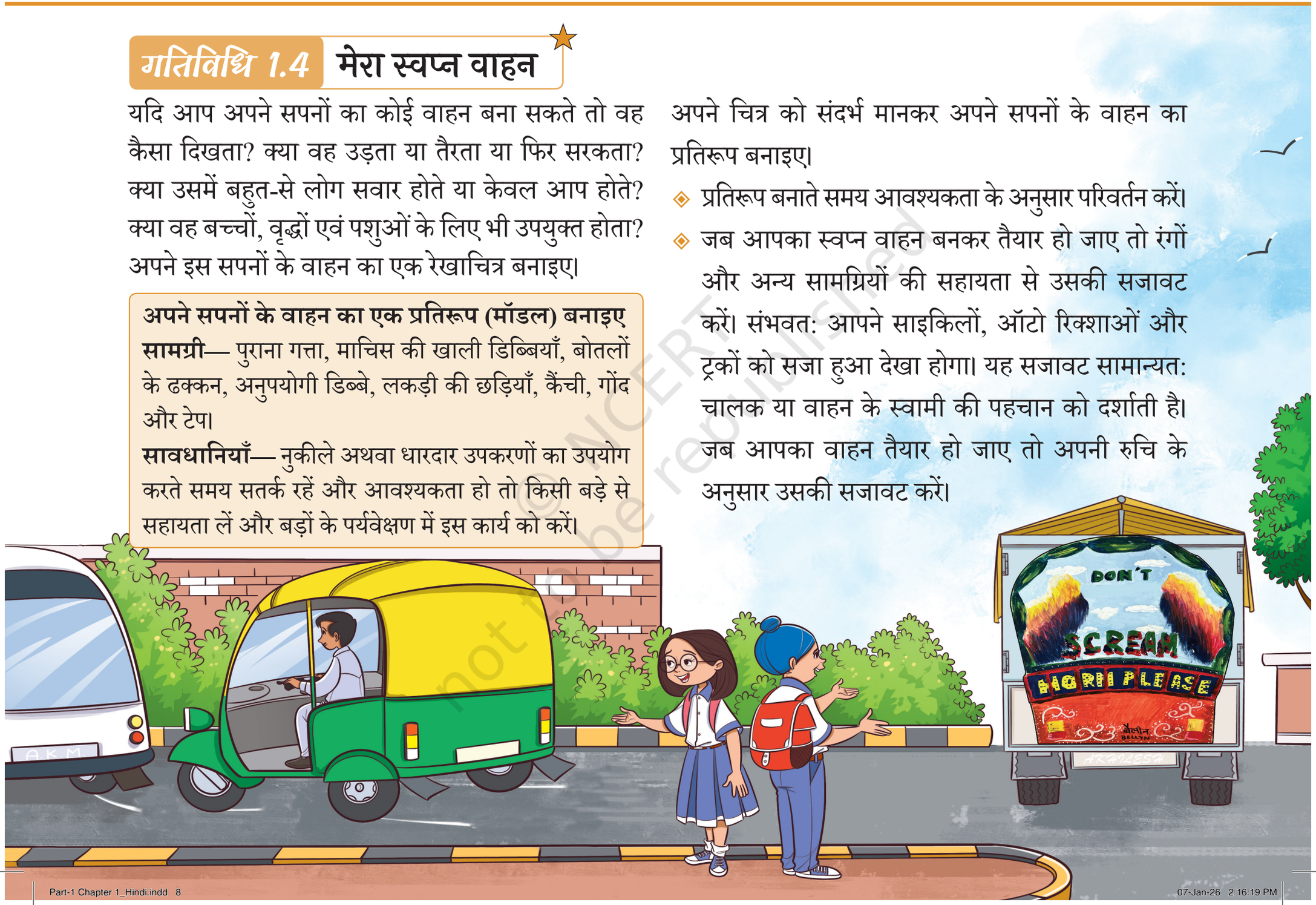

© NCERT not to be republished

अपने स्वप्न वाहन को चित्रित कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 1_Hindi.indd 9 07-Jan-26 2:16:20 PM

गतिविधि 1.5 बस स्टॉप

लोग प्रायः बस स्टॉप पर बस की प्रतीक्षा करते हैं।

छोटे-छोटे समूह बनाएँ तथा बस स्टॉप पर बस की प्रतीक्षा के अपने अनुभवों पर चर्चा करें।

- बस स्टॉप कहाँ स्थित था?
- क्या वहाँ आपके साथ विभिन्न आयु वर्ग के व्यक्ति भी प्रतीक्षा कर रहे थे?
- क्या उनमें से किसी को बस में चढ़ने में कोई कठिनाई हुई?
- क्या वहाँ सभी के लिए पर्याप्त स्थान था?
- क्या बस स्टॉप आरामदायक था? (क्या वहाँ छत, रैंप, बेंच आदि की सुविधा थी?)

आप एक सुविधाजनक बस स्टॉप की रूपरेखा कैसे तैयार करेंगे?

- अपने लिए बस स्टॉप पर प्रतीक्षा को अधिक सुखद बनाने हेतु आप कौन-सी सुविधाएँ बनाएँगे।

- बस स्टॉप पर वृद्धों, बच्चों या दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कौन-कौन सी सुविधाएँ आवश्यक होंगी?

- अपने बस स्टॉप का चित्र बनाइए।
- इस चित्र को अपने समूह के साथ साझा करें।

अब सभी सदस्यों के विचारों को सम्मिलित करते हुए एक बस स्टॉप का साझा चित्र तैयार करें।

संदर्भ के रूप में चित्र का उपयोग करते हुए बस स्टॉप का त्रि-आयामी प्रतिरूप बनाएँ।

सामग्री— पुराना गत्ता, आइसक्रीम की डंडियाँ, खाली डब्बे, झाड़ू, पुराना कपड़ा, पुराने समाचार पत्र, गोंद, कैंची और रंग।

जब आपका बस स्टॉप का प्रतिरूप तैयार हो जाए तब कुछ खिलौना वाहन एकत्रित करें या अपने स्वयं के वाहन बनाएँ।

बस स्टॉप पर एक व्यस्त दिन की कल्पना करें और उस दृश्य का वर्णन करें।

© NCERT not to be republished

अपनी कल्पना से बस स्टॉप का चित्र बनाइए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 1_Hindi.indd 11 07-Jan-26 2:16:22 PM

आकलन

अध्याय 1— गतिशील वस्तुएँ				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.1	द्वि-आयामी और त्रि-आयामी कलाकृतियों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों में वस्तुओं का और उनके डिजाइन का चित्रण करते हैं।		
CG-2	C-2.1	वस्तुओं के भागों को अपनी कल्पना से जोड़कर नए आकार, प्रतिरूप और अन्य वस्तुएँ बनाते हैं।		
CG-3	C-3.2	सहपाठियों से प्राप्त परामर्शों के आधार पर दृश्य-कलाकृति के एक से अधिक संस्करण बनाने का प्रयास करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

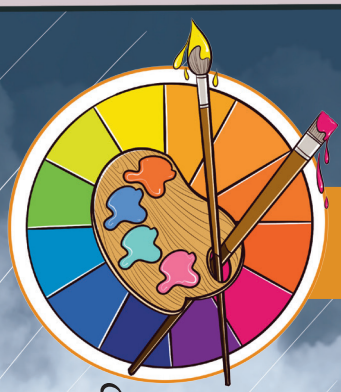

अध्याय 2

झरोखे से

0538CH02

चित्रकला की कक्षा का समय हो गया था। विद्यार्थी अपनी कला-सामग्री को मेज पर सुव्यवस्थित करके उत्साह से अपनी शिक्षिका की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके सीखने के उत्साह को देखते हुए पुरस्कारस्वरूप उन्हें कक्षा से बाहर उद्यान में जाने का अवसर दिया गया। जहाँ माली से स्वतंत्रतापूर्वक वार्तालाप करते हुए वे पौधों, पुष्पों और तितलियों का चित्रण कर सकते थे।

परंतु उनकी आशाओं पर उस समय पानी फिर गया जब तेज गर्जना के साथ भारी वर्षा होने लगी और तभी शिक्षिका कक्षा में प्रवेश करती हैं और विद्यार्थियों को खिड़कियों के पास ले जाकर बाहर झाँकने के लिए कहती हैं।

वर्षा से धरती धुल गई थी और सब कुछ ताजा और स्वच्छ दिखाई दे रहा था। शिक्षिका ने लताओं की ओर इंगित करते हुए बताया कि ये पतली और कोमल होने के कारण वर्षा के तेज प्रभाव से झुक गई थीं फिर भी ये बेलें इतनी सुदृढ़ता से अपने आस-पास के पौधों, पेड़ों और खंभों से चिपकी हुई थीं कि वे गिरी नहीं।

यद्यपि लताओं के बीज अंधकार में भूमिगत अंकुरित होते हैं किंतु अनेक बाधाओं को पार करते हुए भी वे ऊपर उठने के लिए कृत-संकल्प रहते हैं। जिस प्रकार नदियाँ प्रत्येक भौगोलिक बाधाओं को पार कर अपना मार्ग बनाती हैं, उसी प्रकार कोमल लताएँ भी कभी बढ़ना नहीं छोड़ती हैं। इसके साथ ही वे हमें पुष्प, फल और शाक भी प्रदान करती हैं।

बेलें और लताएँ हमें कोमलता, लचीलापन और विश्वास जैसे कई जीवन मूल्य सिखाती हैं। वे बिना किसी संकोच के आश्रय लेती हैं और आश्वस्त रहती हैं कि उनका परिवेश उन्हें पोषण प्रदान करेगा। जैसे-जैसे वे बढ़ती हैं, वैसे-वैसे वे स्थान को सुंदरता और जीवन से भर देती हैं— चाहे वह स्थान घर के भीतर हो या बाहर।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 2.1 स्थापत्य कलाओं में उत्कीर्ण में बेलें एवं लताएँ

बेलें और लताएँ किस प्रकार अन्य पौधों से भिन्न होती हैं? उनके पतले और लचीले तने वृद्धि के समय मुड़ते हैं, घूमते हैं और लहराते हैं।

इनकी प्रवाहमान रेखाओं से प्रेरित होकर कलाकारों ने उन्हें मूर्तियों, चित्रों, वस्त्रों, स्थापत्य और अन्य कलारूपों में चित्रित किया है।

ऐसी ही एक परंपरा मेहंदी की है जो भारत के विभिन्न भागों में प्रचलित है। मेहंदी ताजी या सूखी हिना की पत्तियों से बनाई जाती है तथा गाढ़े लेप के रूप में तैयार कर शंकु (कीप) में भर ली जाती है। तत्पश्चात इसे प्रायः हथेलियों, भुजाओं और पैरों पर लगाया जाता है।

मेहंदी के सूखने पर आप पाएँगे कि इसकी रेखाएँ थोड़ी उभरी हुई हैं तथा शेष त्वचा की तरह समतल नहीं हैं। इसे ही उत्कीर्ण कहा जाता है। यह मूर्तिकला और नक्काशी में प्रयोग की जाने वाली एक तकनीक है।

अपने अभिभावकों और स्थानीय समुदाय के मेहंदी कलाकारों के साथ मिलकर बेलों और लताओं से प्रेरित डिजाइन बनाइए। अपने मित्रों, परिवार के सदस्यों और आस-पास के जनों की सहमति लेकर उनकी हथेलियों पर मेहंदी लगाइए।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए स्थान पर अपने हाथ की छाप लगाइए और उस पर मेहंदी का डिजाइन बनाइए।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए एक विशेष गतिविधि

- एक शंकु में ऐसी गाढ़ी-चिपचिपी बनावट वाली सामग्री भरें जो सरलता से चिपक सके और सूखकर ठोस हो जाए। ध्यान रखें कि उस सामग्री में कोई चिपकाने वाला पदार्थ अवश्य हो, जैसे— गोंद।
- शंकु का उपयोग करते हुए अपने डिजाइन की रूपरेखा किसी समतल सतह पर बनाइए, जैसे— पुराने गत्ते, कागज या कपड़े पर और उसे सूखने के लिए छोड़ दें। ये उभरी हुई रेखाएँ आपके दृष्टिबाधित सहपाठी के लिए एक पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करेंगी। वे उभरी हुई रेखाओं को स्पर्श करके रंग भरने हेतु निचले स्थान को सरलता से पहचान सकेंगे।
- तूलिका के साथ रंगों का चयन करने में उनकी सहायता करें।
- उनके साथ मिलकर रंग भरने का आनंद लें।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 2_Hindi.indd 15 27-Nov-25 10:18:10 AM

गतिविधि 2.2 रंगों से चमत्कार

होली रंगों का एक पर्व है जिसे भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लासपूर्वक मनाया जाता है। इस पर्व में लोग एक-दूसरे के साथ रंगों से खेलकर आनंद लेते हैं।

आपको रंगों से खेलना कब अच्छा लगता है?

क्या आपने कभी अनुभव किया है कि दो परस्पर रंग मिलकर कैसे परिवर्तित हो जाते हैं? यह चमत्कारिक होता है।

रंग-चक्र कलाकारों के लिए एक महत्त्वपूर्ण उपकरण होता है जिसकी सहायता से वे रंगों में विविधता का सृजन करते हैं।

आइए रंग-चक्र बनाना सीखें।

ऐसे रंग जिन्हें किन्हीं अन्य रंगों को मिलाकर प्राप्त नहीं किया जा सकता है, वे **प्राथमिक रंग** कहलाते हैं। ये रंग हैं— लाल, नीला और पीला।

- दाहिनी ओर बने वृत्त के प्रत्येक खंड में एक-एक प्राथमिक रंग भरें।
- संबंधित खंडों के ऊपर प्राथमिक रंगों के नाम लिखें।

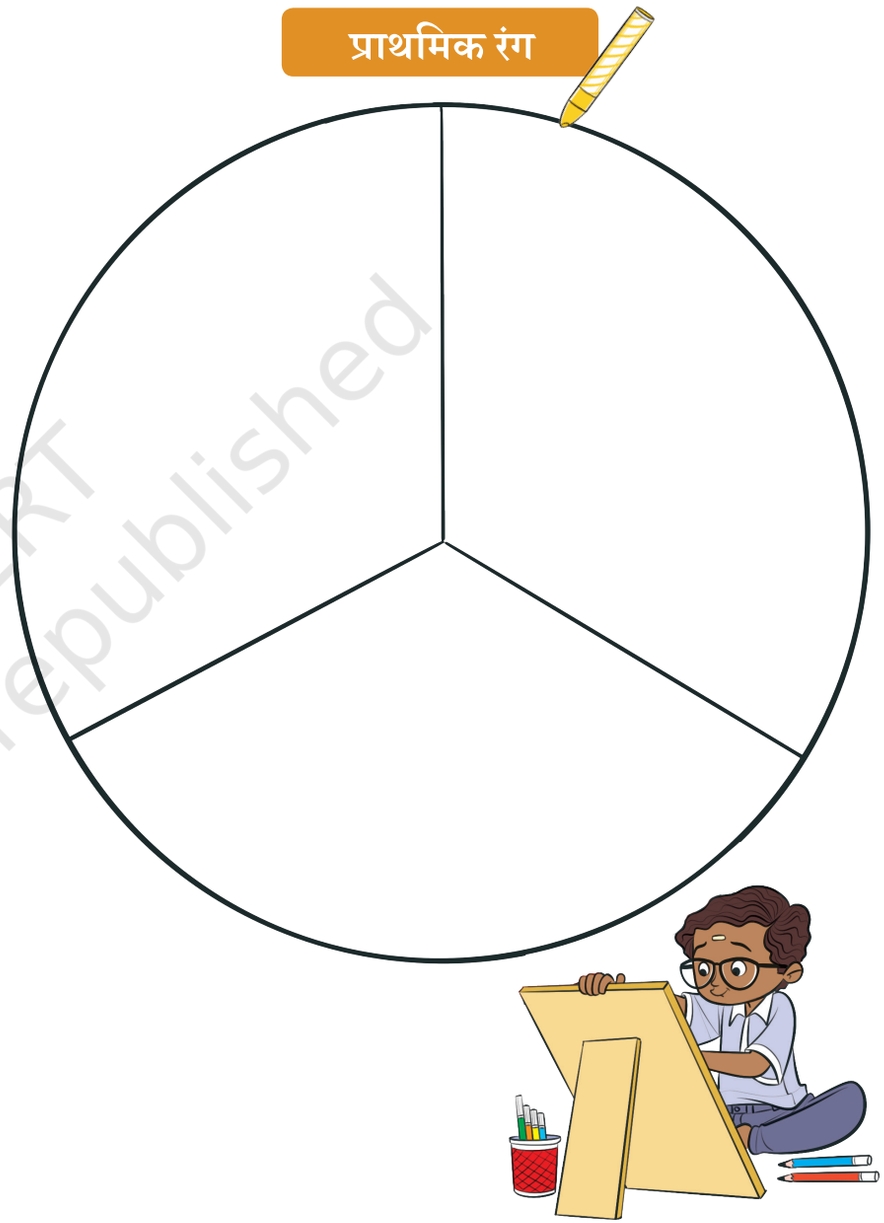

© NCERT not to be republished

दो प्राथमिक रंगों को परस्पर मिलाने पर एक द्वितीयक रंग बनता है।

- एक और वृत्त बनाइए और उसे छ: खंडों में विभाजित कीजिए।
- प्राथमिक रंगों को एक-एक करके वैकल्पिक खंडों में भरिए।
- दो प्राथमिक रंगों को मिलाकर जो नया रंग बनता है, उसे उन दोनों रंगों के बीच वाले रिक्त खंड में भरिए।
- द्वितीयक रंगों में सुंदर प्रतिरूप भी जोड़िए।
- वृत्त के चारों ओर सभी रंगों के नाम लिखिए।

क्या आप इस पाठ्यपुस्तक के विभिन्न पृष्ठों पर रंग-चक्र ढूँढ़ सकते हैं?

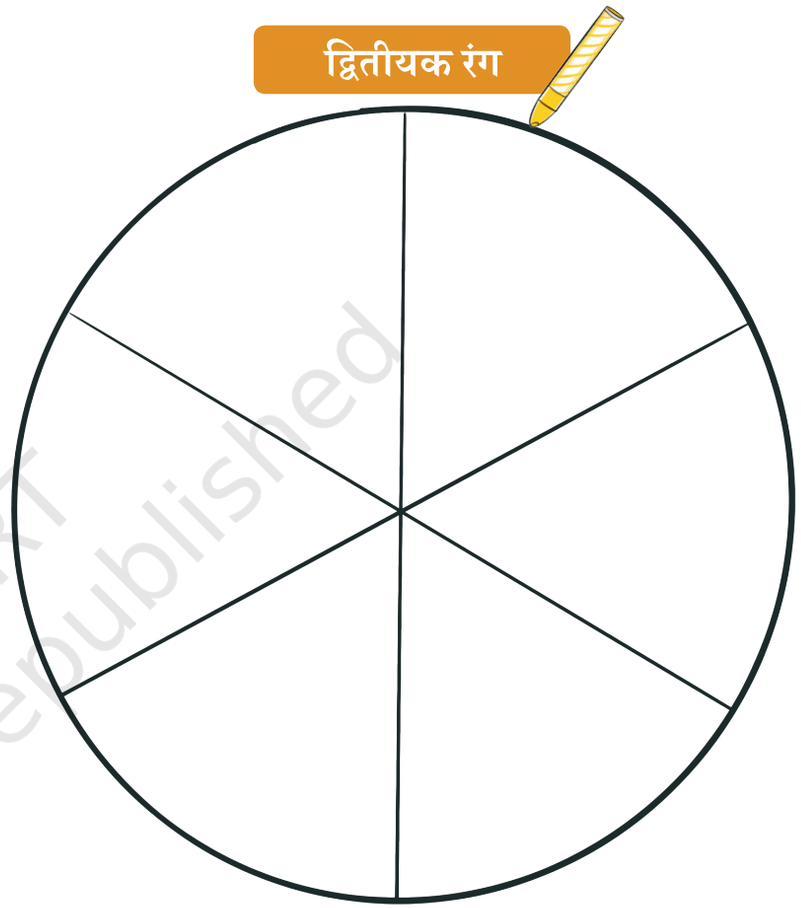

गर्म और ठंडे रंग

गर्म वस्तुएँ प्राय: लाल, पीले और नारंगी रंगों की आभा में होती हैं। ठंडी वस्तुएँ सामान्यतः नीले, हरे और बैंगनी रंगों की आभा (रंगों के हल्के-गहरे रूप) में दिखाई देती हैं। रंग-चक्र में इन्हें ध्यान से देखिए और पहचानिए।

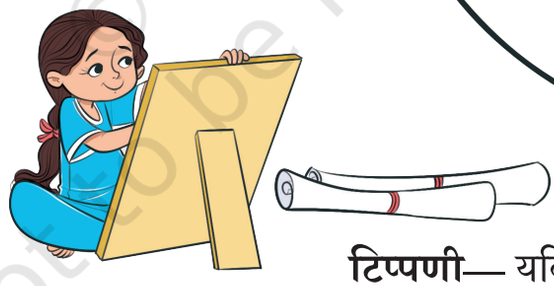

टिप्पणी— यदि आप रंगों का उपयोग कर रहे हैं तो प्रत्येक रंग के बाद तूलिका को अच्छी तरह धोएँ अथवा प्रत्येक रंग के लिए भिन्न तूलिका का उपयोग करें।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 2_Hindi.indd 17 27-Nov-25 10:18:11 AM

गतिविधि 2.3 बाह्य दृश्य का चित्रण

क्या आपने कभी भ्रमण-भोजन (पिकनिक) के समय समूह के साथ बाहर कोई फोटो खिंचवाई है?

छायाचित्रकार सामान्यत: लोगों को बताता है कि कहाँ खड़े होना है, कैसी भंगिमा देनी है और वे छायाचित्र (फ्रेम) में क्या-क्या लाने का प्रयास कर रहे हैं। किसी चित्र, छायाचित्र या दृश्य-कलाकृति में स्थान का व्यवस्थित रूप से उपयोग करना अत्यंत आवश्यक होता है।

ध्यान दीजिए कि ऊपर दिए गए चित्र में और 20 रुपये के नोट में जो चित्र है, वह एक ही है।

चित्र में मुख्यत: तीन प्रकार के स्थान होते हैं—

1. अग्रभूमि— चित्र में अग्रभूमि वह स्थान होता है जहाँ मुख्य विषय दर्शक के सबसे निकट होता है और बड़ा दिखाई देता है। इसके रंग और विवरण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।
2. मध्यभूमि— चित्र में मध्यभूमि वह स्थान होता है जो मुख्य विषय के पीछे स्थित होता है। इसमें कुछ विवरण होते हैं और यह दृश्य में गहनता का अनुभव कराता है।
3. पृष्ठभूमि— चित्र में पृष्ठभूमि वह स्थान होता है जो दर्शक से सबसे दूर होता है। इसमें सबसे कम विवरण होता है और हल्के रंग होते हैं।

दाहिनी ओर दिए गए चित्र में अग्रभूमि, मध्यभूमि और पृष्ठभूमि को चिह्नित कीजिए।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 2.4 समय एवं ऋतुओं के रंग

यदि रंग ऊष्मा और ठंडक को व्यक्त कर सकते हैं तो क्या वे समय और ऋतु को भी दर्शा सकते हैं?

अपनी स्मृतियों के आधार पर **विभिन्न ऋतुओं** में प्रकृति में दिखाई देने वाले रंगों की सूची बनाइए।	अपने अवलोकन के आधार पर **दिन के भिन्न-भिन्न समय** में आकाश में दिखाई देने वाले रंगों की सूची बनाइए।	**दिन के समय में किसी वस्तु या वृक्ष की छाया** का अवलोकन कीजिए। यह भी लिखिए कि उस वस्तु की लंबाई किस समय छोटी, मध्यम या लंबी है।
ग्रीष्म ऋतु	प्रातः	प्रातः
वर्षा ऋतु	मध्याह्न	मध्याह्न
शीत ऋतु	संध्या	संध्या
वसंत ऋतु	रात्रि	रात्रि

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 2_Hindi.indd 19 27-Nov-25 10:18:11 AM

- एक पृष्ठ को चार समान भागों में विभाजित कीजिए।
- पहले भाग में अपने आस-पास दिखाई देने वाला एक बाहरी दृश्य चित्रित कीजिए।
- यह विचार कीजिए कि आप अग्रभूमि, मध्यभूमि और पृष्ठभूमि में क्या चित्रित करेंगे।
- इसी चित्र को अन्य तीन भागों में भी बनाइए।
- प्रत्येक भाग के लिए किसी एक ऋतु का और दिन का एक समय चुनें। उदाहरण के लिए, भाग 1— ग्रीष्म ऋतु की दोपहर, भाग 2— शीत ऋतु की संध्या एवं इसी प्रकार अन्य समय एवं ऋतु।
- प्रत्येक भाग में चयनित ऋतु और समय के अनुसार रंग भरिए।
- चित्रों में वस्तुओं की छाया का चित्रांकन अवश्य करें जिससे समय का संकेत मिल सके।
- रंगों को मिलाकर अधिक विविधता प्रस्तुत करने का प्रयास कीजिए।

नीचे दिए गए स्थान में अपनी रुचि की किसी एक ऋतु को चित्रित कीजिए।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए स्थान में चित्र बनाइए और पूरा होने के बाद अपने सहपाठियों के समक्ष प्रस्तुत कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 2_Hindi.indd 21 27-Nov-25 10:18:12 AM

आकलन

अध्याय 2 — झरोखे से				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.1	विभिन्न समयों और ऋतुओं में देखे गए प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण करते हैं।		
CG-2	C-2.1	प्रकृति में दिखाई देने वाली वस्तुओं के प्रतिरूपों को कल्पना द्वारा दृश्य तत्वों का उपयोग करके बनाते हैं।		
CG-2	C-2.2	किसी दिए गए चित्र में अग्रभूमि, मध्यभूमि और पृष्ठभूमि की पहचान करते हैं और अपनी कलाकृति में इन स्थानिक विभाजनों का प्रयोग करते हैं।		
CG-3	C-3.2	प्राथमिक रंगों को मिलाकर द्वितीयक रंगों को बनाते हुए सामान्य रंग-चक्र तैयार करते हैं।		
CG-3	C-3.2	उपयुक्त माध्यम का उपयोग करते हुए उत्कीर्ण चित्र बनाने के चरणों का पालन करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन _____

_____

अन्य टिप्पणियाँ _____

_____

© NCERT not to be republished

अध्याय 3

कथाओं का चित्रांकन

0538CH03

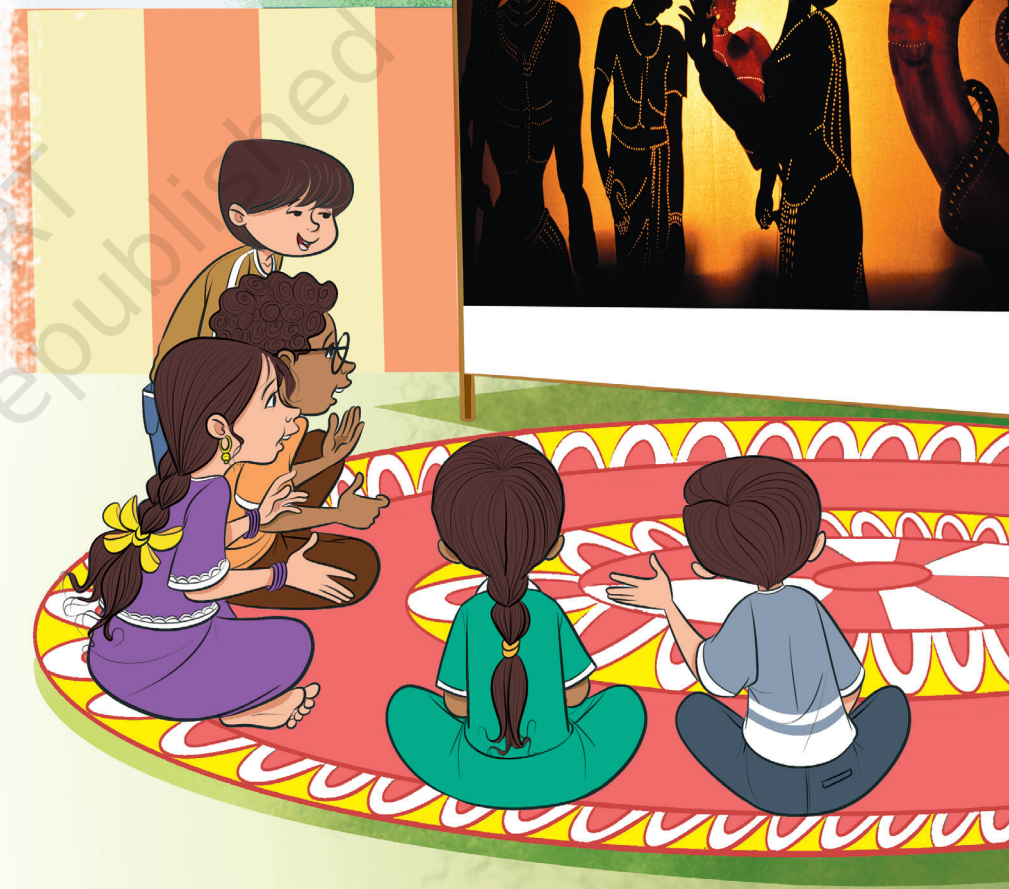

हम प्रतिदिन अनेक व्यक्तियों के संपर्क में आते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के चलने, बोलने, हँसने, वार्तालाप करने और अपने भाव व्यक्त करने की एक भिन्न शैली होती है। आपने यह भी अवश्य ही देखा होगा कि प्रत्येक मनुष्य की छाया भी भिन्न होती है।

अपने प्रिय व्यक्तियों के विषय में सोचें और यह भी विचार कीजिए कि आपको उनके साथ रहना क्यों अच्छा लगता है। उनकी प्रत्येक छोटी-बड़ी बात पर ध्यान दें, जैसे— उनका मुख, मुस्कान, केश, वस्त्र, स्वर, हाव-भाव तथा उनकी दिनचर्या के कार्य।

इस अध्याय में आप व्यक्तियों के क्रियाकलापों और उनके आस-पास की वस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखना सीखेंगे। छाया-खेल और इमोजी के माध्यम से आप व्यक्तियों और उनके जीवन की कहानियों को चित्रित करने के नए विकल्प खोजेंगे।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 3.1 छाया अनुरेखन

आपने धूप में चलते समय अपनी छाया को अवश्य देखा होगा। किंतु क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि रात में सड़क पर लगी लाइट के नीचे चलते समय आपकी छाया कैसे परिवर्तित हो जाती है?

जब कोई वस्तु या जीव-जंतु किसी प्रकाश-स्रोत के सम्मुख आता है तब सतह पर उसकी छाया बनती है। कभी-कभी छाया उस वस्तु या जीव-जंतु से भिन्न दिखाई देती है जिससे वह बनी होती है।

छाया से जीव-जंतु बनाइए

- युग्मों में अथवा लघु समूहों में कार्य कीजिए।
- धूप वाले दिन बाहर जाइए।
- अपने हाथ फैलाकर उड़ते पक्षी की तरह झूलिए।
- घुटनों पर बैठकर अपने हाथों से हाथी की सूँड बनाइए।
- विचार कीजिए कि आप शरीर से मोर की या रेंगते साँप की आकृति कैसे बना सकते हैं।
- जब आपकी छाया किसी रोचक आकार में बने तो कुछ क्षण स्थिर रहें।
- इस स्थिति में आपके सहपाठी उँगलियों से, लकड़ियों से या कंकड़ों से आपकी छाया का अनुरेखन कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 3.2 छाया चित्रित कीजिए

नीचे दिए गए स्थान में आपके द्वारा बनाई गईं छायाओं का चित्रण कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 3_Hindi.indd 25 27-Nov-25 10:19:35 AM

गतिविधि 3.3 छाया में कहानियाँ

इस पृष्ठ पर प्रदर्शित हाथों की छाया बनाने का प्रयास करें।

क्या आपने कभी रंग-बिरंगी छाया देखी है?

आप इन्हें छाया-पुत्तलिका नाटक में देख सकते हैं। यह एक प्राचीन कला है जो वर्तमान में भी आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और महाराष्ट्र में प्रचलित है। इन पुत्तलियों को पारंपरिक रूप से चमड़े से बनाया जाता था किंतु वर्तमान समय में इन्हें अन्य सामग्रियों से भी बनाया जाने लगा है। प्रस्तुति के समय जब प्रकाश पुत्तलियों के आर-पार जाता है तो रंगीन छायाएँ उभरती हैं जो हिलती हैं और कहानियाँ सुनाती हैं।

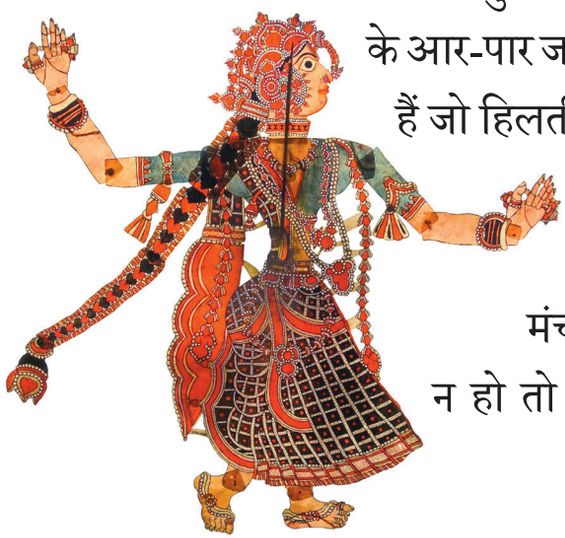

यदि संभव हो तो छाया-पुत्तलिका की सीधी मंच प्रस्तुति देखें। यदि यह संभव न हो तो छाया-पुत्तलिका का वीडियो देखने का प्रयास करें। निम्न बिंदुओं पर ध्यान दें और चर्चा करें—

- मानव शरीर को छाया-पुत्तलिका के रूप में किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है?
- पुत्तलियों के विभिन्न भागों को किस प्रकार जोड़ा गया है?

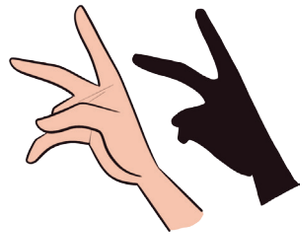

पूर्व में की गई गतिविधि में आपने देखा कि कैसे आप अपने शरीर से विभिन्न जीवों की छाया बनाते हैं। अब उन्हें वास्तविक चरित्रों में परिवर्तित कीजिए और एक कहानी की रचना कीजिए।

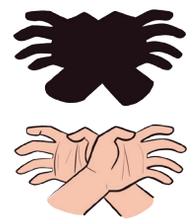

- पूर्व में बनाए गए छायाचित्रों को एकत्रित कीजिए।
- उन्हें चरित्रों के रूप में विकसित कीजिए और एक छोटी कहानी बनाइए।
- लगभग 100 शब्दों में एक कहानी की रचना कीजिए और उसे अपने मित्रों के साथ साझा कीजिए।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए स्थान में अपनी कहानी का कोई एक दृश्य चित्रित कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 3_Hindi.indd 27 27-Nov-25 10:19:36 AM

गतिविधि 3.4 इमोजी बनाना

हमारी मुखाकृति हमारी भावनाओं का झरोखा है। केवल किसी की मुखाकृति को देखकर ही आप उसके मनोभावों का अनुमान लगा सकते हैं।

हँसता हुआ चेहरा आनंद का लोकप्रिय प्रतीक है। आपने भी कभी इसका उपयोग किया होगा।

इमोटिकॉन्स (Emoticons) ऐसे साधारण चित्र या चिह्न होते हैं, जो भावनाएँ व्यक्त करते हैं। आप सामान्य विराम चिह्नों का उपयोग करके इन्हें बना सकते हैं। उदाहरण के लिए, चिह्न :-) को देखिए। अब अपना सिर बाईं ओर थोड़ा झुकाकर देखें — यह एक मुस्कुराती हुई मुखाकृति है। इसी प्रकार—

:-(दु:खी मुखाकृति दिखाता है।

;-) आँख मारती हुई मुखाकृति दिखाता है।

:-P जीभ निकालती हुई मुखाकृति दिखाता है।

अब नीचे दिए गए गोल घेरों में कुछ अन्य इमोटिकॉन्स बनाइए।

इमोजी इमोटिकॉन्स की तुलना में अधिक व्यापक होते हैं। प्रायः ऑनलाइन संवाद में इनका प्रयोग किया जाता है।

अपने व्यक्तिगत इमोजी बनाइए—

- एक ऐसे भाव का चयन कीजिए जो पहले से उपलब्ध इमोजी में नहीं मिलता।
- यह भावों का मिश्रण भी हो सकता है, जैसे—आप रुष्ट हैं किंतु हँसने ही वाले हैं; या आप मुस्कुराते हुए रो भी रहे हैं।
- इसमें कोई विशिष्ट हाव-भाव या क्रिया भी सम्मिलित हो सकती है जो आप किसी भावना को व्यक्त करते समय करते हैं।

आपके व्यक्तिगत इमोजी आपके व्यक्तित्व और विशिष्ट शैली को दर्शाएँगे।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए स्थान में अपने व्यक्तिगत इमोजी बनाइए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 3_Hindi.indd 29 27-Nov-25 10:19:37 AM

गतिविधि 3.5 कथापट्ट का निर्माण

कथापट्ट का उपयोग किसी कहानी के भिन्न-भिन्न प्रसंगों को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह चित्रकथा (**कॉमिक) के समान** होता है और नाटक, ऐनिमेशन, विज्ञापन या फिल्म के छायांकन की योजना बनाने में प्रयुक्त होता है।

हम प्रतिदिन कई भावनाओं का अनुभव करते हैं। तुलना कीजिए और बताइए कि आप कैसा अनुभव करते हैं जब—

- आप विद्यालय के लिए प्रातः शीघ्र उठते हैं।
- मध्याह्न भोजन में अपनी रुचि के व्यंजन देखते हैं।
- आप परीक्षा के लिए अध्ययन करते हैं।
- आप मित्रों के साथ खेलते हैं।

ध्यान दीजिए, अन्य व्यक्तियों की दिनचर्या आपकी दिनचर्या से भिन्न हो सकती है। आइए एक ऐसा कथापट्ट बनाइए जो किसी अन्य व्यक्ति के दिन के चार कार्यों को दर्शाए।

- किसी ऐसे व्यक्ति का चयन कीजिए जिनसे आप परिचित हैं या जिन्हें आप प्रतिदिन विद्यालय जाते समय देखते हैं। वह कोई शिक्षक, परिवार का सदस्य, सब्जी विक्रेता, सुरक्षाकर्मी, बस कंडक्टर या कोई अन्य व्यक्ति भी हो सकता है।
- कल्पना कीजिए कि उनके दिन की चार भिन्न-भिन्न गतिविधियाँ क्या हो सकती हैं। ऐसा करते समय स्मरण करें कि नृत्य और रंगमंच में शरीर कैसे विभिन्न भावनाओं को व्यक्त करता है।

अग्रिम पृष्ठ पर दिए गए प्रारूप का उपयोग करके अपना कथापट्ट तैयार कीजिए।

- चारों दृश्यों के लिए गतिविधियों और भावों का लेखन कीजिए।
- प्रत्येक दृश्य को अग्रभूमि, मध्यभूमि और पृष्ठभूमि में विभाजित कीजिए।
- एक व्यक्ति को केंद्र में रखें और उसकी शारीरिक भंगिमाएँ, गतिविधियों अथवा क्रियाकलापों और मुखाकृति के भाव दर्शाइए।
- आपके द्वारा निर्मित कलाकृति में रंग भरिए।

© NCERT not to be republished

1. चित्र बनाइए

गतिविधि

भाव

2. चित्र बनाइए

गतिविधि

भाव

3. चित्र बनाइए

गतिविधि

भाव

4. चित्र बनाइए

गतिविधि

भाव

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 3_Hindi.indd 31 27-Nov-25 10:19:37 AM

आकलन

अध्याय 3 — कथाओं का चित्रांकन				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.1	मुखाकृति के भावों और शारीरिक मुद्राओं के माध्यम से भावनाओं और मनोभावों को दर्शाने वाली कलाकृतियाँ तैयार करते हैं।		
CG-2	C-2.1	छाया खेल के माध्यम से अपनी कल्पनाओं और दृश्यों को दर्शाने वाले चित्र बनाते हैं।		
CG-3	C-3.2	प्रत्येक दृश्य को क्रमबद्ध रूप से विकसित करते हुए कथापट्ट बनाते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

अध्याय 4

काल्पनिक जीव

0538CH04

हमारी कल्पनाशक्ति हमें उन वस्तुओं को देखने की शक्ति प्रदान करती है जो विद्यमान ही नहीं हैं। अतीत में परिश्रम, दृढ़ता और समर्पण के माध्यम से ऐसी अनेक कल्पनाएँ साकार हुई हैं। उदाहरण के लिए, पक्षियों की तरह उड़ने का सपना हमें वायुयान के आविष्कार तक ले गया। क्या आप ऐसे अन्य आविष्कारों के विषय में सोच सकते हैं जिनसे हम मछलियों की भाँति तैर सकें, मकड़ियों की तरह जाल बुन सकें और केंचुओं की तरह धरती में सुरंग बना सकें।

एक कलाकार के रूप में आप न केवल वह बना सकते हैं जो आपके चारों ओर विद्यमान है अपितु वह भी बना सकते हैं जिसकी आप कल्पना करते हैं या स्वप्न देखते हैं। भारतीय कला में हमें प्रायः ऐसे काल्पनिक जीव मिलते हैं जो कई अलग-अलग जीवों के अंगों से मिलकर बने होते हैं। उनके चारों ओर बहुत-सी कथाएँ बुनी जाती हैं। संभवत: आपने ऐसी कहानियों का आनंद लिया होगा। जैसे-जैसे उनके प्रतीकों के रहस्य खुलते हैं, वे और भी रोचक बनते जाते हैं।

अगले पृष्ठ पर दी गई 'नवगुंजर' की छवि को ध्यानपूर्वक देखिए। इसमें नौ अलग-अलग प्राणियों के अंग दिए गए हैं। यह 'नवगुंजर' तीन पैरों पर खड़ा है और इसकी एक भुजा मानव की है जो एक पुष्प पकड़े हुए है।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 4.1 नीचे दिए गए काल्पनिक चित्र में आप जिन नौ प्राणियों के अंगों को देख पा रहे हैं, उनके नाम रिक्त स्थान में भरिए—

1. _____ का मुकुट
2. _____ की चोंच
3. _____ की गर्दन
4. _____ का कूबड़
5. _____ का पेट
6. _____ का अगला पैर
7. _____ का पिछला बायाँ पैर
8. _____ का पिछला दायाँ पैर
9. _____ की पूँछ

अपने शिक्षकों या अभिभावकों से सहायता लेकर नवगुंजर की कहानी जानने का प्रयास कीजिए।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 4.2 मेरा आदर्श जीव

किसी ऐसे व्यक्ति, पशु और पौधे के विषय में विचार कीजिए जिनकी कुछ विशेषताएँ आपको बहुत पसंद आती हैं।

	व्यक्ति	पशु	पौधे	वस्तु
उनकी विशेषताएँ लिखिए				
उनके ऊपरी शरीर का चित्र बनाइए				
उनके मध्य शरीर का चित्र बनाइए				
उनके निचले शरीर का चित्र बनाइए				

अब अपने नेत्र बंद कीजिए और इन तीनों की विशेषताओं को एक साथ मिलाकर एक जीव की कल्पना कीजिए। संभव है कि ऐसा आदर्श जीव वास्तव में अस्तित्व में न हो परंतु आप अपनी कला द्वारा उसे साकार कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 4_Hindi.indd 35 15-Dec-25 12:14:17 PM

गतिविधि 4.3 काल्पनिक जीव का निर्माण

आपके द्वारा बनाए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए।

विभिन्न संयोजनों के विषय में विचार कीजिए — उदाहरण के लिए, उसका सिर किसी पशु का हो सकता है, शरीर किसी व्यक्ति का और पैर किसी पौधे का निचला भाग हो सकता है या किसी वस्तु के हो सकते हैं।

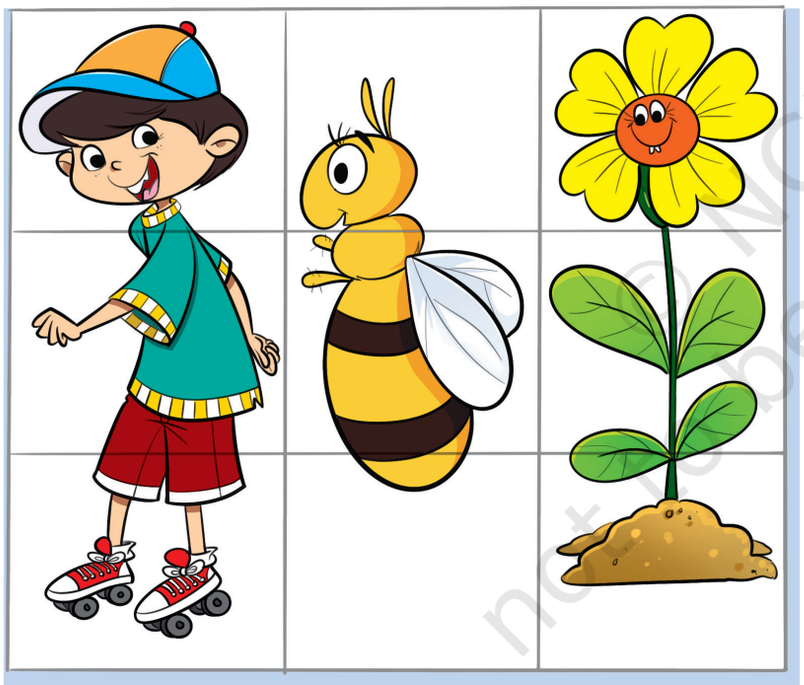

आप अन्य संयोजनों की रचना करने का भी प्रयास कीजिए। यदि आप चाहें तो एक से अधिक सिर, पैर या अन्य अंग भी बना सकते हैं।

- जो चित्र आपको सबसे अधिक पसंद आए, उसे अगले पृष्ठ पर बनाइए।
- उसमें वस्त्र, आभूषण और अन्य सजावटी वस्तुएँ जोड़िए एवं साथ ही उसमें आकर्षक रंग भरिए।
- अपने काल्पनिक जीव के लिए ऐसा नाम सोचिए जो उसका वर्णन करता हो और उसके विषय में रचनात्मक रूप से लिखिए।

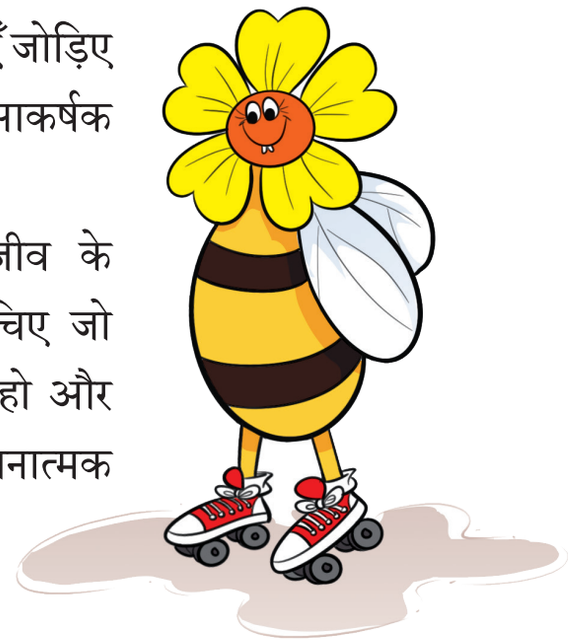

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए स्थान में अपने काल्पनिक जीव का चित्रण कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 4_Hindi.indd 37 15-Dec-25 12:14:17 PM

गतिविधि 4.4 मेरे काल्पनिक जीव का संसार

जिस संसार में हम रहते हैं उसमें वायु, सूर्य, जल, ऑक्सीजन, नदियाँ, धरती और वृक्ष जैसे भौगोलिक तत्व विद्यमान हैं। अपने जीवन को सुखद बनाने के लिए हम घर, सड़कें और अन्य उपकरण बनाते हैं।

अपने काल्पनिक जीव के लिए एक ऐसे संसार की कल्पना कीजिए जिसमें वे आराम से निवास और भ्रमण कर सकें।

आपके द्वारा बनाए गए काल्पनिक जीव को अपने मित्रों को दिखाइए और उन्हें प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान कीजिए—

- इस जीव का रुचिकर भोजन क्या है?
- क्या यह सोता है?
- इसका हृदय कहाँ है?
- यह कहाँ रहता है?
- यह कैसे चलता-फिरता है?
- इसकी छाया कैसी दिखाई देती है?

इन प्रश्नों के उत्तर देने की प्रक्रिया में आप अपने काल्पनिक जीव को भली-भाँति समझ पाएँगे और उसके लिए एक उपयुक्त संसार की रचना कर पाएँगे।

- एक ऐसा चित्र बनाइए अथवा पहले से बनाए गए चित्र में परिवर्तन कीजिए जिसमें आपका काल्पनिक जीव आपके काल्पनिक संसार में विद्यमान हो।
- इसे कोई क्रियाकलाप करते हुए दर्शाइए और इसकी छाया को रचनात्मक रूप से बनाइए।
- यथासंभव अधिकाधिक विवरण जोड़िए और इस चित्र में अपनी इच्छानुसार रंग भरिए।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए स्थान में अपने काल्पनिक जीव को उसके संसार में चित्रित कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 4_Hindi.indd 39 15-Dec-25 12:14:18 PM

आकलन

अध्याय 4 — काल्पनिक जीव				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-2	C-2.1	पशुओं, पौधों, मनुष्यों और वस्तुओं के विभिन्न भागों को मिलाकर काल्पनिक जीवों का निर्माण करते हैं।		
CG-4	C-4.2	पौराणिक चरित्रों की कहानियों को सुनाते हैं और उन पर चर्चा करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता रखते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

अध्याय 5

संदेश का प्रचार-प्रसार

0538CH05

विद्यालयीय कार्यक्रम आनंददायक होते हैं किंतु क्या आपको पता है कि ऐसे कार्यक्रमों के लिए अत्यधिक तैयारी और व्यवस्थित प्रबंधन की आवश्यकता होती है। सामान्यत: हमारी इच्छा होती है कि हमारे कार्यक्रम के विषय में अधिक से अधिक व्यक्तियों को सूचना प्राप्त हो और वे उसमें सम्मिलित हों। कार्यक्रम के विषय में सूचना देने की एक विधि है— वार्ता। वर्तमान में प्रायः पोस्टर, निमंत्रण पत्र और ऑनलाइन संदेश आदि साझा कर भी सूचना दी जा रही है।

एक पोस्टर या निमंत्रण पत्र न केवल आकर्षक दिखना चाहिए अपितु उसमें दी गई सूचना स्मरणीय भी होनी चाहिए।

पोस्टर का उपयोग व्यक्तियों को सड़क-सुरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा, स्वच्छता, पोषण एवं स्वास्थ्य, अच्छी प्रवृत्ति, विद्यालय के नियम आदि जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों को स्मरण कराने के लिए भी किया जा सकता है।

एक भली-भाँति डिजाइन किया गया पोस्टर किसी व्यक्ति के व्यवहार और विचारों पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

इस अध्याय में आप कुछ मूलभूत डिजाइन सिद्धांतों से परिचित होंगे। ये सिद्धांत किसी चयनित विषय पर प्रभावशाली और आकर्षक पोस्टर बनाने में आपकी सहायता करेंगे। ये सिद्धांत आपके द्वारा निर्मित डिजाइन की दृश्यात्मक सुंदरता और प्रभाव को उत्कृष्टता प्रदान करेंगे।

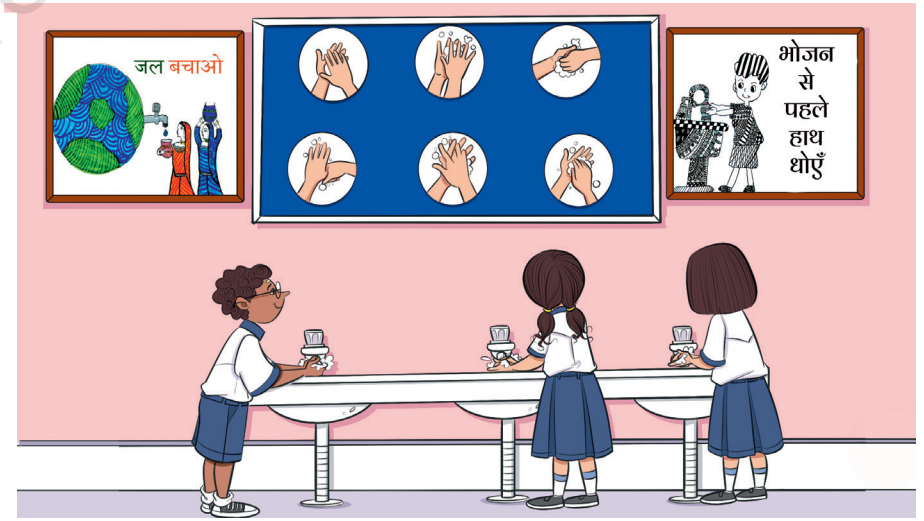

© NCERT not to be republished

पोस्टर डिजाइन के मूल तत्व

पोस्टर सूचना और जागरूकता संदेशों को प्रस्तुत करते हैं। इनमें चित्रों और शब्दों का संयोजन इस प्रकार होता है कि वे अनायास ही ध्यान आकर्षित करते हैं तथा शीघ्रता से एवं प्रभावी रूप से संदेश को पहुँचाते हैं।

इस पृष्ठ पर दिए गए पोस्टरों को ध्यान से देखिए।

- विभिन्न पोस्टरों में प्रयुक्त सामान्य तत्वों की पहचान कीजिए।
- प्रत्येक पोस्टर में मुख्य संदेश को सरलता से समझने में कौन-से तत्व सहायता करते हैं?
- प्रत्येक पोस्टर में सर्वप्रथम आपकी दृष्टि किस बिंदु पर जाती है और क्यों?

© NCERT not to be republished

पोस्टर कुछ ही शब्दों में प्रभावी रूप से संदेश का प्रसार करते हैं। पोस्टर में शब्दों और चित्रों की संरचना डिजाइन के सिद्धांतों पर आधारित होती है। ये सिद्धांत हमें प्रभावी डिजाइन के संदर्भ में निर्णय लेने में सहायता करते हैं।

प्रमुखता (Emphasis) डिजाइन का एक सिद्धांत है जिसमें किसी एक भाग को अन्य भागों से अधिक महत्त्व दिया जाता है। यह सिद्धांत दर्शक का ध्यान उस मुख्य संदेश पर केंद्रित करने में सहायक होता है जिसे चित्र और शब्द मिलकर व्यक्त करते हैं।

- दाहिनी ओर दिए गए पोस्टर में उस चित्र अथवा शब्द की पहचान कीजिए जिसे **प्रमुखता** दी गई है।
- उस भाग को कैसे **प्रमुख** बनाया गया है?
- आप निम्नलिखित बिंदुओं को पहचान सकते हैं—
  - उसका आकार बड़ा है।
  - उसका रंग अन्य भागों की तुलना में अधिक चमकदार एवं आकर्षक है।
  - वह भाग रेखांकित है अथवा विशेष रूप से उभारा गया है।

दिए गए पोस्टर में **प्रमुखता** किस प्रकार सहायता करती है?

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 5_Hindi.indd 43 15-Dec-25 12:17:46 PM

प्राथमिकता क्रम एक अन्य डिजाइन सिद्धांत है। उदाहरण के लिए— समाचार-पत्र में शब्दों को भिन्न-भिन्न आकार में मुद्रित किया जाता है। मुख्य समाचारों के शीर्षक बड़े और गाढ़े होते हैं ताकि उन्हें पहले पढ़ा जाए। कम महत्त्वपूर्ण बातों को छोटे आकार में मुद्रित किया जाता है।

एक लापता हुए पालतू पशु के विषय में बने पोस्टर में पशु के चित्र को अधिक स्थान दिया जाता है। इसके बाद अति महत्त्वपूर्ण विवरण हो सकता है— 'लापता' लिखा हुआ शब्द। ये दोनों बातें देखने वाले का ध्यान मुख्य विषय की ओर खींचती हैं।

अन्य सूचनाएँ जैसे कि पशु के स्वामी का संपर्क-विवरण महत्त्वपूर्ण होती हैं परंतु उन्हें कम महत्त्व दिया जाता है और इसलिए वे छोटे आकार में या कम स्थान में दिए जाते हैं।

किसी भी पोस्टर को पुनः ध्यान से देखिए और उसमें प्रयुक्त तत्वों के महत्त्व का क्रम समझने का प्रयास कीजिए।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए पोस्टर में विभिन्न तत्वों के प्राथमिकता क्रम को पहचानिए और लिखिए।

not to be republished

Part-1 Chapter 5_Hindi.indd 45 15-Dec-25 12:17:47 PM

गतिविधि 5.1 अपना पोस्टर बनाइए

डिजाइन के सिद्धांतों 'प्रमुखता और प्राथमिकता' का उपयोग करके अपना पोस्टर बनाइए।

चरण 1 एक संदेश का चयन कीजिए जिसे आप अपने सहपाठियों तक पहुँचाना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, कक्षा की स्वच्छता, सड़क-सुरक्षा अथवा दैनिक स्वच्छता।

चरण 2 योजना बनाइए कि आप इसमें कौन-कौन से चित्र सम्मिलित करेंगे और उनका आकार क्या होगा।

चरण 3 अपने संदेश के लिए एक वाक्य या वाक्यांश लिखिए। व्याकरण और वर्तनी की जाँच के लिए अपने शिक्षक की सहायता लीजिए।

चरण 4 चित्रों और शब्दों के लिए प्राथमिकता क्रम निर्धारित कीजिए कि कौन-सा भाग अति महत्त्वपूर्ण है अथवा कौन-सा भाग कम महत्त्वपूर्ण है।

चरण 5 अपने पोस्टर की एक प्रारंभिक रूपरेखा बनाइए, जैसे— कौन से शब्द कहाँ रखे जाएँगे और वे कितना स्थान लेंगे आदि।

चरण 6 अपनी प्रारंभिक रूपरेखा को देखिए और जाँच कीजिए कि क्या आपका अति महत्त्वपूर्ण तत्व सबसे अधिक प्रभावशाली दिख रहा है? क्या वह सबसे पहले ध्यान आकर्षित कर रहा है? क्या आपको पोस्टर उस क्रम में दृष्टिगत होता है जैसी आपने योजना बनाई थी?

चरण 7 एक A3 आकार का कागज लीजिए और उसके चारों ओर 3 सेंटीमीटर की सीमा खींचिए। शब्दों को परस्पर एक सीध में लिखने के लिए समांतर रेखाएँ खींचिए।

चरण 8 उस पर चित्र बनाइए, विवरण जोड़िए और रंग भरिए।

© NCERT not to be republished

नीचे दिए गए स्थान में अपने पोस्टर की प्रारंभिक रूपरेखा तैयार कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 5_Hindi.indd 47 15-Dec-25 12:17:47 PM

डिजाइन सिद्धांत का उपयोग मात्र पोस्टरों में ही नहीं किया जाता है अपितु विज्ञापनों में भी किया जाता है।

पुराने समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएँ एकत्रित कीजिए और उनमें से छोटे-छोटे विज्ञापन काटकर दिए गए स्थान पर चिपकाइए। ध्यान से देखिए और लिखिए कि डिजाइन में प्रमुखता और प्राथमिकता का क्रम क्या है?

© NCERT not to be republished

आकलन

अध्याय 5 — संदेश का प्रचार-प्रसार				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.1	दैनिक जीवन से जुड़ी समस्याओं और घटनाओं को संबोधित करने वाले पोस्टर बनाते हैं।		
CG-2	C-2.1	पोस्टर बनाते समय डिजाइन सिद्धांतों का उपयोग करते हैं।		
CG-3	C-3.2	पोस्टर बनाने के लिए विभिन्न संदर्भों पर विचार करते हैं और उसी के अनुसार योजना बनाते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

Part-1 Chapter 5_Hindi.indd 49 15-Dec-25 12:17:48 PM

योगात्मक आकलन

	आकलन हेतु गतिविधि (उदाहरण)	आकलन के मापदंड
व्यक्तिगत	पारिवारिक अवसर के लिए एक निमंत्रण-पत्र बनाइए, जैसे— गृहप्रवेश, नामकरण संस्कार, विवाह, वर्षगाँठ अथवा किसी अन्य शुभ अवसर हेतु। • पत्र के आकार के विषय में विचार करें। • इसके प्रारूप पर विचार करें (सामने और पीछे, एक बार मोड़ने वाला इत्यादि)। • एक आकर्षक किनारा या सीमांकन (बॉर्डर) डिजाइन बनाइए। • आयोजन को दर्शाने वाले चित्र बनाइए और पत्र में उपयुक्त स्थान पर लगाइए। • निमंत्रण-पत्र के लिए उपयुक्त पंक्ति पर विचार कीजिए और लिखिए।	• पत्र के आकार और प्रारूप की उपयुक्तता को समझते हैं। • डिजाइन सिद्धांतों का उपयोग करते हैं। • चित्र और पाठ के मध्य संबंध समझते हैं। • स्वच्छता और पूर्णता का ध्यान रखते हैं।
सामूहिक	चार विद्यार्थियों का एक समूह बनाइए और मिलकर एक बड़ी कलाकृति बनाइए (चार्ट पेपर का आकार— 8.5 × 11 इंच)। • ऐसी किसी कहानी का चयन कीजिए जिसमें कोई काल्पनिक जीव हो। • परस्पर चर्चा द्वारा कहानी से किसी एक दृश्य को चुनें। • चयनित दृश्य की रचना इस प्रकार कीजिए कि उसमें अग्रभूमि, मध्यभूमि और पृष्ठभूमि स्पष्ट रूप से दिखाई दें। • कहानी के मुख्य चरित्र और दृश्य के अन्य तत्वों को चित्रित कीजिए। • चित्रांकन में कोलाज, रेखाचित्र, रंग भरना, छपाई जैसे विभिन्न माध्यमों और प्रक्रियाओं का प्रयोग कीजिए। • आपके द्वारा बनाए गए चित्र को कक्षा में प्रदर्शित कीजिए और अन्य समूहों द्वारा बनाए गए चित्रों को भी ध्यान से देखिए।	• काल्पनिक जीव वाली कहानी की कल्पना और चित्रण करते हैं। • चित्र संरचना में अग्रभूमि, मध्यभूमि और पृष्ठभूमि का उपयोग करते हैं। • विभिन्न सामग्रियों, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करते हैं। • सहभागिता, संवाद और प्रतिपुष्टि प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी करते हैं।

© NCERT not to be republished

रंगमंच

प्रिय शिक्षक,

कक्षा पाँच की यह पाठ्यपुस्तक बच्चों को सशक्त और प्रोत्साहित करने के लिए बनाई गई है जिससे वे सृजनकर्ता, सहयोगी एवं कलाकार के रूप में रंगमंच का अन्वेषण कर सकें।

इस पाठ्यपुस्तक का लक्ष्य विद्यार्थियों को नाटक के अंतिम चरण तक स्वतंत्र रूप से कार्य करने हेतु प्रेरित करना है। इसके साथ ही इसका प्रयोजन विद्यार्थी में नेतृत्व को प्रोत्साहित करना है जहाँ विद्यार्थी विचार-उत्पत्ति के प्रथम चरण से लेकर प्रस्तुति के अंतिम चरण तक की प्रक्रिया में कुशलता प्राप्त कर सकें। इसमें आपकी भूमिका सुविधाप्रदाता, सहयोगी और मार्गदर्शक के रूप में है। आपका यह दायित्व है कि आप उन्हें सही दिशा में बने रहने हेतु आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करें तथा एक सुरक्षित एवं रोचक वातावरण प्रदान करें जहाँ वे स्वयं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सकें।

उन्हें एक दल के रूप में पटकथा-लेखन, चरित्र, वेशभूषा, मंच एवं निर्देशन का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करें। त्रुटि होना भी सीखने की प्रक्रिया का एक भाग है। विद्यार्थियों को स्वयं नाटक संरचना एवं प्रस्तुति के लिए प्रेरित करें और समस्याओं को सुलझाते हुए उन्हें स्वयं ही प्रस्तुति के जादू को ढूँढ़ने दीजिए। शिक्षक से अपेक्षा है कि वे तब ही आगे आएँ जब विद्यार्थियों को मार्गदर्शन की आवश्यकता हो अन्यथा नेपथ्य (बैकग्राउंड) में रहकर विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को निखरने एवं पल्लवित होने का समुचित अवसर प्रदान करें।

यह प्रक्रिया रंगमंच-कौशल के अतिरिक्त जीवन-कौशल का भी निर्माण करती है, जैसे— संचार, समूह में कार्य करना, सहानुभूति और नेतृत्व।

आइए विद्यार्थियों के साथ इस यात्रा का आनंद लें और प्रत्येक चरण में उनके विकास को प्रोत्साहित करें!

ध्यान रखने योग्य कुछ बिंदु—

- **विदूषक** पारंपरिक भारतीय रंगमंच का एक अनूठा पात्र है। संस्कृत रंगमंच ने इस पात्र का उपयोग हास्य एवं हास्यात्मक परिस्थितियों वाले दृश्यों को प्रस्तुत करने के लिए किया है। यह पात्र विद्यार्थियों के लिए एक मित्र जैसा है। यह उन्हें रंगमंच में अवधारणाओं और विचारों के साथ जुड़ने में सहयोग देता है तथा उन्हें एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक सूचनाओं के साथ मार्गदर्शन भी प्रदान करता है। विदूषक विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण पाठ एवं सीख के विषय में बात करता है। रंगमंच-कक्षाओं के लिए स्वतंत्र रूप से घूमने-फिरने की सुविधा हेतु एक विशाल हवादार कक्ष होना चाहिए। यह स्वच्छ होना चाहिए और इसमें ऐसी कोई भी नुकीली व ऐसी वस्तु नहीं होनी चाहिए जिससे चोट लग सकती हो या बाधा उत्पन्न हो।

- कक्षा का आरंभ प्रार्थना से कीजिए और पिछली कक्षा में जो कुछ किया गया था उसका पुनरावलोकन कीजिए। प्रस्तावित प्रार्थना कक्षा 4 की पाठ्यपुस्तक में दी गई है।

कक्षा की प्रस्तावित संरचना		
5 मिनट प्रार्थना और संक्षिप्त पुनरावलोकन	30 मिनट कक्षा गतिविधियाँ	5 मिनट घेरा समय

© NCERT not to be republished

आकलन

रंगमंच विद्यार्थियों के लिए सदैव एक सकारात्मक एवं आनंददायक अनुभव रहा है। अत: जिस प्रकार से वे कक्षा में गतिविधियों का आनंद लेते हैं आकलन भी उसी के अनुकूल होना चाहिए। आकलन की प्रक्रिया परीक्षा से जुड़े तनाव से मुक्त होनी चाहिए।

सभी आकलन गतिविधियों पर आधारित हैं। आकलन के दौरान स्मरण रखने योग्य कुछ मूलभूत बिंदु निम्नलिखित हैं—

- अर्जित योग्यता और कौशल पर ध्यान केंद्रित करना है।
- रचनात्मकता में कोई भी उत्तर सही या गलत नहीं होता है।
- अंतिम परिणाम या प्रस्तुति ही एकमात्र मापदंड नहीं है। गतिविधि में प्रयास, विचार और प्रक्रिया पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए, साथ ही—
  - ज्ञान-अनुप्रयोग
  - प्रयास एवं सहभागिता
  - रचनात्मकता और प्रस्तुति
  - समूह में कार्य तथा सहयोग
- शिक्षक विद्यार्थियों में आत्म-चिंतन को विकसित करने के लिए प्रयास करें और इसे आकलन का बिंदु समझें। (रूब्रिक्स में अंतिम कॉलम दिया गया है)।
- एक प्रेरणादायी और सहयोगी वातावरण की संरचना कीजिए, विशेष रूप से उन विद्यार्थियों के लिए जो संकोची हैं।
- अत्यधिक स्पष्टता के लिए पुस्तक के आरंभ में समय आवंटन और आकलन-संबंधी अनुभाग पढ़िए।

रचनात्मक आकलन	योगात्मक आकलन
यह एक सतत प्रक्रिया है जो संपूर्ण कक्षा-अवधि के दौरान निरंतर सक्रिय है। इसमें अलग से परीक्षा-दिवस का कोई प्रयोजन नहीं है। 1. "आइए घेरा बनाएँ।" (विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी के विषय में समीक्षा करते हैं) 2. अध्याय के अंत में रूब्रिक दिए गए हैं। 3. शिक्षक का अवलोकन।	यह पूर्ण रूप से गतिविधि-आधारित होगा एवं वर्ष के अंत में एक निर्दिष्ट दिवस पर आयोजित किया जाना है। प्रश्न-पत्र आधारित लिखित परीक्षा का प्रावधान न हो। 1. पुस्तक के अंत में गतिविधि के उदाहरण दिए गए हैं। 2. स्तरीकरण (ग्रेडिंग) रूब्रिक्स पर आधारित होगा। 3. विद्यार्थियों के आत्म-चिंतन को समग्र अंक में सम्मिलित कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 6_Hindi.indd 53 15-Dec-25 12:20:38 PM

नमस्ते...सुस्वागतम्

वाह! हमने पिछले दो वर्षों में नाट्यकला के अनेक पहलुओं पर अध्ययन किया है। अब हम तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं। अब आप और अधिक अनुभवी हो गए हैं। अत: आपने अभी तक जो कुछ भी सीखा है उसे एक साथ मिलाकर आप स्वयं ही एक नाटक तैयार करेंगे।

मुझे विश्वास है कि आप ऐसा करने में सक्षम हैं और निश्चिंत रहिए मैं भी पग-पग पर आपकी सहायता, समर्थन और मार्गदर्शन करने के लिए आपके साथ रहूँगा। विदूषक आपकी सेवा में है!

शताब्दियों से हम यह मानते आए हैं कि विद्यार्थियों में अपार क्षमताएँ होती हैं। वे हमारे इतिहास, उपनिषदों और पुराणों का एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं। क्या आपको नचिकेता, ध्रुव, लव और कुश के बारे में पता है? वे सभी आपकी आयु के थे।

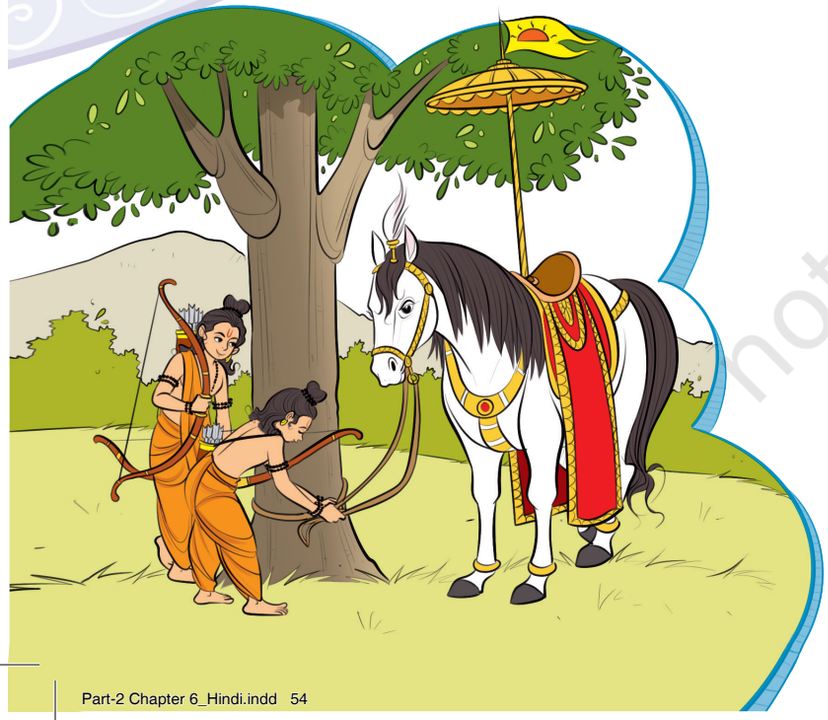

यह वर्ष आपको ही समर्पित है। इस वर्ष आप अपने मित्रों के साथ मिलकर एक कहानी रच कर, नाटक का अभ्यास करेंगे, अपनी वेशभूषा और रंगमंच की सामग्री की व्यवस्था करेंगे, पूर्वाभ्यास कर प्रस्तुति देंगे और यह सब कुछ आप स्वयं ही करेंगे।

आइए आरंभ करें!

© NCERT not to be republished

अध्याय 6

दृश्य की परिकल्पना

0538CH06

हम सभी किसी नाटक या फिल्म के किसी विशेष भाग के दृश्यों के विषय में बात करते हैं। हम यह भी कहते हैं कि "वाह! क्या दृश्य बनाया है।" जब सड़क, विद्यालय या किसी अन्य स्थान पर कुछ विशेष घटित होता है तो उस दृश्य का नाट्यकरण कैसा होना चाहिए?

दृश्य नाटक का वह भाग है जो—

- कहानी को आगे बढ़ाता है।
- एक विशिष्ट स्थान और समय पर घटित होता है।
- कुछ रोचक या नाटकीय होता है।

जैसा कि विदूषक ने कहा कि आप इस वर्ष एक नाटक की प्रस्तुति देंगे और आपको स्वयं ही दृश्य बनाने के अवसर भी प्राप्त होंगे। कक्षा 3 और 4 में की गई गतिविधियों के आधार पर आप इसके कुछ बिंदुओं को पहले ही सीख चुके हैं। नीचे एक सूची दी गई है। यदि आप तालिका के प्रथम स्तंभ में दी गई कुछ गतिविधियाँ पुन: करना चाहते हैं तो आपके शिक्षक कक्षा 3 और 4 की पाठ्यपुस्तकों के आधार पर आपको उन्हें करने में सहायता करेंगे।

आप पहले सीख चुके हैं	आप क्या सीखेंगे
भूमिका निभाना वार्तालाप स्थापित करना एक दृश्य की कल्पना करना— प्रवेश एवं प्रस्थान दृश्य में रंगमंच सामग्री और अभिनेताओं का समायोजन	मंच पर क्या करें और क्या न करें इसके आधारभूत विषय स्थान-निर्धारण समय-निर्धारण चरित्र-निर्धारण

© NCERT not to be republished

आइए, सबसे पहले मंचन के समय ध्यान रखने योग्य मूलभूत बिंदुओं पर दृष्टि डालें। ये बिंदु दर्शकों के सम्मुख आपकी प्रस्तुति में सहायता करेंगे।

मंच पर निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए

1. **स्पष्ट और उच्च स्वर में बोलें**— ऐसा करने से उपस्थित सभी दर्शक, यहाँ तक कि अंतिम पंक्ति में बैठे दर्शक भी आपको स्पष्ट रूप से सुन सकें।
2. **भूमिका में बने रहें**— यदि आप मंच पर हैं तो आप उसी पात्र की भूमिका में बने रहें जिसे आप निभा रहे हैं। यह विषय तब और अधिक ध्यान में रखा जाना चाहिए जब आप बोल नहीं रहे हों। आपका प्रवेश और प्रस्थान भी आपकी भूमिका के अनुरूप ही होना चाहिए।
3. **अपने सह-कलाकारों का सम्मान करें**— बोलने के लिए अपने अवसर की प्रतीक्षा करें एवं मंच पर अन्य कलाकारों का सहयोग करें। इस विषय में स्पष्ट रहें कि आपको किस स्थिति में खड़ा होना है और कहाँ चलना है, यह अन्य कलाकारों को प्रभावित किए बिना किया जाना चाहिए।

मंच पर क्या नहीं करना चाहिए

1. **दर्शकों की ओर पीठ न करें**— दर्शकों के सम्मुख उपस्थित होने पर थोड़ा-सा मुड़कर खड़े हों। यदि आपको पीछे की ओर जाना है तो भी दर्शकों की ओर अपनी पीठ न करें और जाते समय बोलने से बचें।
2. **नेपथ्य में बात न करें**— यदि आप मंच पर आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं या आपने अभी-अभी अपनी भूमिका का निर्वहन किया है तो शांत बैठें। आपके बात करने या चर्चा करने से मंच पर उपस्थित अन्य कलाकारों का ध्यान भटक सकता है।
3. **दूसरे कलाकारों का दृश्य अवरुद्ध न करें**— यह सुनिश्चित करें कि जब आप खड़े हों तो अन्य सभी कलाकार दर्शकों को दिखाई दे रहे हों। यह भी ध्यान रखें कि आपके समक्ष कोई ऐसा व्यक्ति या वस्तु नहीं हो जिससे आप दर्शकों को न दिखें।

© NCERT not to be republished

यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि आप भविष्य में किसी भी प्रस्तुति के लिए मंच पर 'क्या करें और क्या न करें' इन बातों का सदैव ध्यान रखें। इन्हें 'मंच शिष्टाचार' कहा जाता है। ये प्रारंभिक व्यवहार-नियम हैं जो अभिनेताओं और दर्शकों के लिए एक सुखद अनुभव बनाते हैं। इन्हें स्मरण रखते हुए विचार कीजिए कि आप एक दृश्य कैसे बना सकते हैं।

किसी दृश्य की मूल आवश्यकता होनी चाहिए कि वह दर्शकों के लिए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दे—

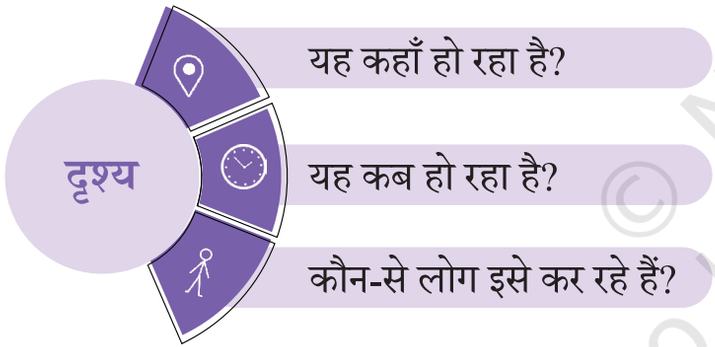

नाटक देखते समय दर्शकों के मन में उपर्युक्त प्रश्न अवश्य आते होंगे। आइए, अब यह समझते हैं कि हम उनका उत्तर कैसे दे सकते हैं जिससे वे कहानी को भली-भाँति समझ सकें।

1. कहाँ— स्थान-व्यवस्थापन

सबसे सरल विधि यह है कि आप अपने मंच और मंच सामग्री को इस प्रकार से व्यवस्थित करें कि वह उपयुक्त स्थान का चित्रण कर सके।

उदाहरण के लिए, कुछ कुर्सियाँ और मेज एक घर का दृश्य दर्शाएँगी। फाइलें, दस्तावेज अथवा लैपटॉप वाली टेबल एक कार्यालय का दृश्य दर्शाएँगी। वेशभूषा का उपयुक्त प्रयोग भी इसमें और गहनता लाएगा। कार्यालय के लिए औपचारिक वस्त्र होंगे जबकि उद्यान के लिए आरामदायक वस्त्र होंगे। यदि आप सभी मंच-सामग्री की व्यवस्था नहीं कर सकते तो आप क्या करेंगे? ऐसे में अभिनेताओं और उनके व्यवहार को इसका प्रतिनिधित्व करना होगा। आपकी सहायता के लिए आगे कुछ उदाहरण दिए गए हैं—

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 6_Hindi.indd 57 15-Dec-25 12:20:42 PM

एक सब्जी बाजार

आप मंच पर बड़ी गाड़ियाँ और दुकानें नहीं ला सकते। इसलिए सबसे उत्तम विधि यह है कि आप अभिनेताओं को चटाई और टोकरियाँ लेकर बैठाएँ तथा वे सब्जियों और फलों के नाम एवं उनके मूल्य बोलकर बताएँ। आप कुछ अन्य अभिनेताओं को भी इसमें सम्मिलित कर सकते हैं जो उनसे सब्जी खरीद रहे हों और पैसे दे रहे हों। अपने समूह के अनुसार आप अन्य लोगों को भी इसमें जोड़ सकते हैं, जैसे— फलवाला, गुब्बारेवाला आदि।

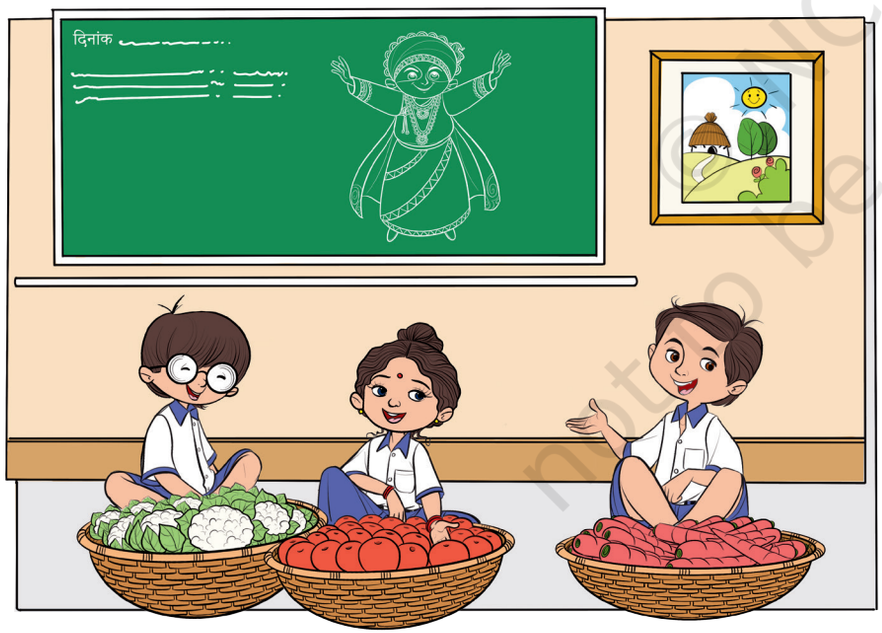

गतिविधि 6.1 सोचिए—कहाँ?

निर्देश— छह-सात सदस्यों के समूह बनाइए। प्रत्येक समूह को एक अलग स्थान दीजिए। आपको इसे अभिनय और कक्षा में उपलब्ध मंच-सामग्री के साथ चित्रित करना होगा। आपको 'वस्तु-के अन्य उपयोग अभ्यास' स्मरण होगा जहाँ आपने भिन्न-भिन्न दृश्यों को दिखाने के लिए एक वस्तु का उपयोग किया था। यहाँ इसका उपयोग कीजिए। आप अपने विद्यालय के बस्ते को सब्जी की बोरी में बदल सकते हैं अथवा फली और भिंडी दर्शाने के लिए पेंसिल का उपयोग कर सकते हैं। एक समूह को दिया गया स्थान दूसरों के समक्ष उजागर नहीं किया जाता। जब एक समूह प्रस्तुति करता है तो दूसरा समूह उस स्थान का अनुमान लगाता है। इसके साथ ही इसे और अधिक समृद्ध बनाने के साधनों पर चर्चा कर सकते हैं।

आधारभूत स्तर— रेलवे स्टेशन, बस स्टॉप, उद्यान, कार्यालय आदि परिचित स्थानों का अभिनय किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

आप उस स्थान को चित्रित करने के लिए अभिनय, साधारण वेशभूषा और वार्तालाप का उपयोग कर सकते हैं।

विकसित स्तर— आपको वही प्रक्रिया दोहरानी होगी परंतु इस बार आपको बिना बोले ऐसा करना होगा। आप शारीरिक भाषा, हाव-भाव और मंच-सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

कल्पनाशक्ति विकसित करने के लिए जंगल, समुद्र आदि जैसे अपरिचित स्थानों का भी उपयोग किया जा सकता है।

2. कब— समय-निर्धारण

किसी दृश्य में दर्शकों की रुचि के लिए समय-अवधि जैसे विवरण महत्त्वपूर्ण होते हैं। समय को दो स्तरों पर दर्शाया जाता है—

काल— ऐतिहासिक, वर्तमान या भविष्य। इसे मुख्य रूप से वेशभूषा, रंगमंच-सामग्री और भाषा का उपयोग करके दर्शाया जाता है।

समय— प्रातःकाल, संध्याकाल या रात्रिकाल की गतिविधियों को संवाद के माध्यम से दर्शाया जाता है।

आइए एक उदाहरण देखते हैं और सही विकल्प पर चिह्न लगाते हैं।

यदि आप शीघ्रता में अल्पाहार करते हुए विद्यालय में विलंब से पहुँचने की बात करते हैं तो समय है— प्रातःकाल, संध्याकाल या रात्रिकाल।

यदि आप कहते हैं कि आपका दिन बहुत थकावट भरा रहा है और बोलते समय आपको जम्हाई आती है तो समय है— प्रातःकाल, संध्याकाल या रात्रिकाल।

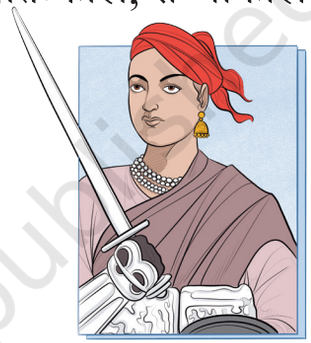

गतिविधि 6.2 समय का अनुमान

स्थान का चित्रण करने के लिए आपने जिस समूह के साथ कार्य किया था, उसी समूह के साथ इस गतिविधि को कर सकते हैं। अब आपको भिन्न-भिन्न समय विकल्प और परिस्थितियाँ दर्शानी हैं और दूसरे समूह आपके द्वारा दिखाए जा रहे समय का अनुमान लगाएँगे।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 6_Hindi.indd 59 15-Dec-25 12:20:43 PM

स्मरण रहे

दृश्य रात्रि का है या संध्याकाल का आदि ऐसी सूचनाएँ दर्शकों से सीधे संवाद द्वारा या घोषणा द्वारा नहीं दी जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त यह दृश्य का ही एक भाग होना चाहिए और चरित्रों को इसे गतिविधियों या संवादों के माध्यम से प्रकट करना चाहिए।

रमेश— अरे राधा! तुम इतनी सुबह-सुबह कहाँ जा रही हो?

या

माँ— राजू! रात के 9 बज गए हैं। तुम्हारे पिताजी अभी तक नहीं आए हैं।

3. कौन— चरित्र-निर्धारण

मंच पर अभिनेता द्वारा ही सर्वाधिक ध्यान आकर्षित किया जाता है। अत: भूमिकाओं का निर्वहन कुशलतापूर्वक किया जाना अत्यंत आवश्यक है। चरित्र की मूल छवि वेशभूषा और मंच-सामग्री के माध्यम से दिखाई जाती है। किंतु वेशभूषा से परे भूमिका के विषय में और भी बहुत कुछ बताना आवश्यक है। दाहिनी ओर नीचे के स्थान पर दिए गए चित्र को देखिए। आप चित्र देखकर सरलता से बता सकते हैं कि यह एक व्यावसायिक महिला है जो कठिन परिश्रम करती है। कहानी के लिए यह बताना आवश्यक है कि यह महिला व्यस्त होते हुए भी बहुत दयालु है और सदा दूसरों की सहायता करने के लिए तत्पर रहती है। आप इसके व्यक्तित्व की ये विशेषताएँ कैसे दर्शा सकते हैं? यह एक चरित्र का वास्तविक चित्रण है।

विकल्प 1— दो अन्य पात्रों के पारस्परिक संवाद में उस महिला के विषय में बात करवाएँ।

उदाहरण— उसके पड़ोसी चर्चा कर रहे थे कि उसने कैसे उनके बेटे की गणित की परीक्षा हेतु सहायता की।

© NCERT not to be republished

विकल्प 2— उसे सड़क पर एक घायल कुत्ते का उपचार करते हुए दिखाएँ।

विकल्प 3— _____

(आप इस चरित्र को चित्रित करने का कोई अनूठा उपाय सोच सकते हैं।)

भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ चुनिए और उन्हें दृश्य में दर्शाने के लिए भिन्न-भिन्न विधियों के विषय में समूह में चर्चा कीजिए। स्मरण रखें कि एक दृश्य में अनेक भूमिकाएँ होंगी। कोई व्यक्तित्व चिड़चिड़ा हो सकता है, कोई बहुत हास्यजनक हो सकता है आदि।

गतिविधि 6.3 वास्तविक दृश्य

आइए अब सीखी गई सभी युक्तियों का उपयोग करते हुए एक संपूर्ण दृश्य बनाते हैं। आप इस अध्याय के प्रारंभ में चयनित समूहों में कार्य करना जारी रख सकते हैं। प्रत्येक समूह एक विषय चुनता है (आपके शिक्षक द्वारा सुझाया जा सकता है), योजना बनाता है और अभ्यास करता है और इसे अन्य समूहों के सामने प्रस्तुत करता है। सुनिश्चित करें कि आपने अपने दृश्य में मंच-शिष्टाचार, स्थान, समय और भूमिका-निर्धारण को सम्मिलित किया है।

- चारों क्षेत्रों में कौन-सा दृश्य सबसे अधिक विश्वसनीय था?
- जिन भागों को आप विश्वसनीय ढंग से दर्शा नहीं पाए, उनमें क्या कठिनाइयाँ थीं?
- क्या कक्षा के अन्य विद्यार्थी यह सुझाव दे सकते हैं कि इसे किस प्रकार और अधिक समृद्ध किया जा सकता है?

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 6_Hindi.indd 61 15-Dec-25 12:20:44 PM

आकलन

अध्याय 6 — दृश्य की परिकल्पना				
दक्षताएँ C-1.1— नाटक-गतिविधियों में विभिन्न दृश्यों, व्यक्तियों, स्थितियों और अनुभवों को चित्रित करने के लिए उत्साह व्यक्त करते हैं। C-1.2— नाट्यकला में सहयोगात्मक रूप से कार्य करते हुए अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करते हैं।				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.1	किसी दृश्य में स्थान, समय और भूमिका को चित्रित करने में सक्षम हैं।		
	C-1.2	अन्य विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों पर प्रतिक्रिया साझा करते हैं।		
	C-1.2	बिना किसी संकोच के गतिविधियों का प्रयास करते हैं।		
	C-1.1, 1.2	सतर्कता और विस्तार पर ध्यान देते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

अध्याय 7

इसे एक कहानी का रूप दें

0538CH07

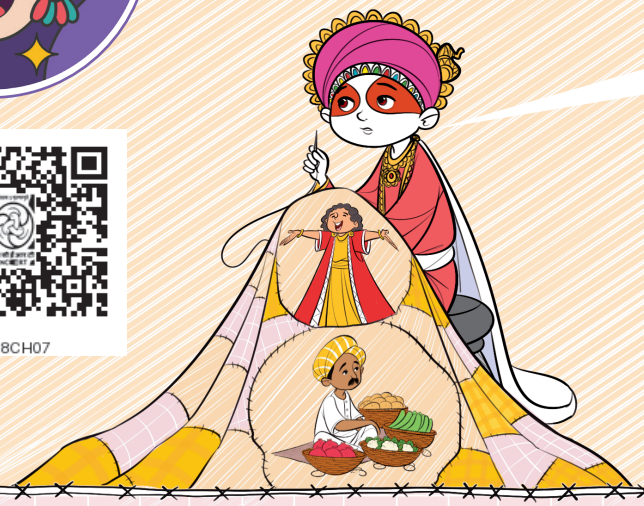

आपने अपने वस्त्रों या यूनिफॉर्म के संदर्भ में कई बार 'सिलाई' और 'बुनाई' शब्द सुने होंगे। इनका क्या अर्थ है?

कॉलिन्स शब्दकोश के अनुसार *सिलाई का अर्थ है वस्तुओं को जोड़ना, विशेष रूप से वस्त्रों को टाँकों की सहायता से जोड़ना। ये टाँकें धागे के फंदे या छल्ले अथवा मोड़ होते हैं। इन्हें हाथ से अथवा मशीन से भी बनाया जा सकता है और इनका उपयोग सिलाई, पुनर्निर्माण और सजावट के लिए किया जाता है।*

मेरी दादी ने मुझे कपड़े सिलना सिखाया। किंतु मैं भिन्न प्रकार की सिलाई करने में अधिक उत्साहित था; कहानी बनाने के लिए दृश्यों को जोड़ने में मेरी रुचि थी।

जैसे सुई अलग-अलग बिंदुओं को जोड़ती है वैसे ही कहानी में भी भिन्न-भिन्न परिस्थितियाँ जुड़ी होती हैं। जैसे एक दर्जी भिन्न-भिन्न कपड़ों को एक साथ सिलता है, वैसे ही आप भी विभिन्न परिस्थितियों को एक साथ जोड़कर एक कहानी बना सकते हैं।

आइए, पिछले अध्याय में आपके द्वारा समूह गतिविधियों में बनाई गई स्थितियों को जोड़ कर आरंभ करें। उदाहरण के लिए हम सब्जी-बाजार से प्रारंभ करते हैं। मान लीजिए कि हम कार्यालय तथा घर के दृश्यों को इससे जोड़ना चाहते हैं। विभिन्न दृश्यों को बिना किसी मिलान बिंदु के एक के बाद एक नहीं जोड़ा जा सकता है। अत: आप इसमें एकरूपता कैसे ला सकते हैं?

© NCERT not to be republished

ऊपर दिए गए तीनों चित्रों को देखिए। यद्यपि ये तीनों एक-दूसरे से पूरी तरह असंगत लगते हैं परंतु आप अपनी रचनात्मकता से इन्हें जोड़ सकते हैं। यही रचनात्मक सिलाई है। आइए सबसे पहले इन स्थितियों का क्रम परिवर्तित करते हैं जिससे अर्थ निकालने में सहायता मिल सके।

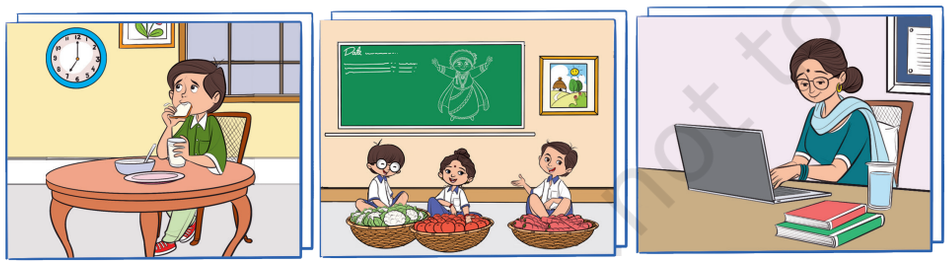

क्रम परिवर्तित करने के बाद कहानी कुछ इस प्रकार हो सकती है—
राजू विद्यालय जाने के लिए तैयार हो रहा था। जैसे ही वह नाश्ता कर रहा था कि अचानक उसे याद आया कि स्वास्थ्य एवं पोषण पर एक परियोजना के लिए विद्यालय में उसे चार अलग-अलग सब्जियाँ लेकर जानी हैं। जब उसने घड़ी देखी तो उसे बोध हुआ कि अब वह विद्यालय में विलंब से पहुँचेगा। यदि वह बाजार जाता तो वह उस परियोजना में सहभागिता नहीं कर पाता जिसकी योजना उसने अपने मित्रों के साथ बनाई थी और उसका अभ्यास भी किया था। अत: किसी तरह उसने शीघ्रता से भोजन किया और बाजार की ओर दौड़ा। किंतु वह निराश हुआ क्योंकि उसे चार में से केवल दो प्रकार की सब्जियाँ ही मिलीं। कोई अन्य विकल्प न होने पर वह केवल दो प्रकार की सब्जियाँ लेकर विद्यालय गया। किंतु राजू की माँ उसकी सहायता के लिए आगे आई, उन्होंने विद्यालय के शिक्षक को फोन करके पूछा कि राजू के पास परियोजना के लिए सब्जियाँ हैं या नहीं। उन्हें शिक्षक से यह ज्ञात हुआ कि उसे दो और सब्जियाँ चाहिए। राजू की माँ ने शीघ्र ही ऑनलाइन ऑर्डर दिया कि सब्जियाँ सीधे विद्यालय में पहुँचा दी जाएँ। सब्जियाँ सही समय पर विद्यालय पहुँच गईं और राजू ने परियोजना को पूर्ण किया।

© NCERT not to be republished

आपने ध्यान दिया होगा कि हमने कहानी में 'प्रवाह' लाने के लिए मुख्य स्थितियों के बीच कुछ वस्तुएँ जोड़ी हैं। यह प्रवाह स्थितियों की निरंतरता को दर्शाता है, इसलिए वे असंबद्ध टुकड़ों की तरह नहीं लगते।

ऊपर नारंगी बक्सों में दिए गए चित्र कहानी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए जोड़े गए नए भाग हैं, यद्यपि मुख्य स्थितियाँ वही हैं।

अब आप कहानी के प्रवाह को बनाए रखने के लिए स्वयं के विचारों को जोड़कर ऐसी और भी स्थितियों को जोड़ने का प्रयास कर सकते हैं। अब आपने भी मेरी तरह कहानियों को बुनना सीख लिया है। इसे ही कथापट्ट कहा जाता है। कथापट्ट का उपयोग व्यावसायिक और फिल्म निर्माता करते हैं।

कढ़ाई कथापट्ट— वस्त्र पर प्रत्येक पुष्प को एक अलग स्थिति के रूप में सोचिए। धागा एक पुष्प को दूसरे पुष्प से जोड़ता है जिससे 'प्रवाह' बना रहे। इस तरह से कथापट्ट में कई चित्र जुड़े होते हैं।

कथापट्ट पर दृश्य कला गतिविधि (3.5) भी इसमें आपकी सहायता करेगी।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 7_Hindi.indd 65 27-Nov-25 12:50:43 PM

गतिविधि 7.1
चित्रांकन के माध्यम से कहानी

आप पूर्व में चयनित समूहों में कार्य करना जारी रख सकते हैं। प्रत्येक समूह काल्पनिक स्थितियों के साथ आएगा। फिर उन्हें पहले दिए गए उदाहरण की तरह एक साथ जोड़ेगा ताकि स्थितियों के बीच उचित प्रवाह के साथ एक सरल कहानी प्रस्तुत की जा सके।

आधारभूत स्तर— प्रत्येक समूह स्थितियों का वर्णन करेगा। इसके साथ ही सभी जुड़ावों के साथ पूरी कहानी का वर्णन भी कर सकता है। कथापट्ट बनाने के लिए सरल चित्र उपयोग में लाए जा सकते हैं। जब आपको लगे कि कहानी मनोरंजक है तो आप भूमिकाओं का विभाजन कर उसे प्रस्तुत कर सकते हैं। क्या आपको कक्षा 3 और 4 का 'भूमिका-निर्वाह' (रोल-प्ले) स्मरण है?

शिक्षक के लिए निर्देश— भले ही विद्यार्थी कहानी को केवल सुना रहे हों पर उन्हें इसे केवल पढ़कर सुनाने के अतिरिक्त भावना, गतिविधि और अभिव्यक्ति के साथ निभाने के लिए प्रोत्साहित करें। कथापट्ट बनाने से दृश्य की कल्पना करने में सहायता मिलेगी।

© NCERT not to be republished

विकसित स्तर— विभिन्न प्रकार की स्थितियाँ लिखी हुई पर्चियों को एक कटोरे में संकलित कर समूह के सामने रखा जाता है। यह ऐतिहासिक अथवा दैनिक जीवन से जुड़ी घटना और कोई काल्पनिक स्थिति या पूर्व पठित कोई कहानी भी हो सकती है। प्रत्येक समूह एक पर्ची का चयन करता है और लिखित परिस्थिति को जोड़ने की दिशा में कार्य करता है, चाहे वह कितना भी अनियमित क्यों न हो।

- क्या आपको लगता है कि कथापट्ट कॉमिक्स की तरह हैं? यदि नहीं तो वे किस प्रकार भिन्न हैं?
- इस अभ्यास का सबसे चुनौतीपूर्ण पहलू क्या था?
- कक्षा 3 और 4 में आपने जो दृश्य-कला अनुभाग पढ़ा था, उसमें कौन-कौन से पाठ कथापट्ट बनाते समय आपके लिए उपयोगी थे?

विस्तारित गतिविधि— आपकी कक्षा 4 की अंग्रेजी की पाठ्यपुस्तक *संतूर* से कथापट्ट।

अध्याय 1

+

अध्याय 2

+

अध्याय 5

मेरी कहानी _____

_____

_____

_____

_____

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 7_Hindi.indd 67 27-Nov-25 12:50:46 PM

आकलन

अध्याय 7 — इसे एक कहानी का रूप दें				
दक्षताएँ C-2.1— विभिन्न चरित्रों, भूमिकाओं, स्थितियों, स्थानों और प्रारंभिक मंच-सामग्री को मिलाकर दैनिक जीवन की घटनाओं पर आधारित कक्षा में नाटक बनाते और प्रस्तुत करते हैं। C-2.2— नाटक के विषयों और तत्वों तथा कक्षा में सृजित संबंधित कलात्मक अभिव्यक्तियों की तुलना कर समानता और असमानता रेखांकित करते हैं।				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-2	C-2.1	कहानी के तत्वों को रचनात्मक रूप से दो स्थितियों से जोड़ते हैं।		
	C-2.1, 2.2	कहानी के 'प्रवाह' को समझते हैं और मित्रों की कहानियों से उसकी तुलना करते हैं।		
	C-2.2	कथापट्ट की अवधारणा को समझते हैं।		
	C-2.1	नई कहानी बनाने के लिए स्थितियों के क्रम को रचनात्मक रूप से परिवर्तित करते हैं।		
	C-2.2	केवल अपने विचारों पर कार्य करने के स्थान पर 'एक साथ' परिदृश्य के निर्माण पर कार्य करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन _____

_____

अन्य टिप्पणियाँ _____

_____

© NCERT not to be republished

अध्याय 8

समय, समूह और तकनीक

अब हम प्रस्तुति की तैयारी आरंभ करते हैं। अब तक आपने अलग-अलग अध्यायों, अवधारणाओं और साझा-प्रतिक्रिया के आधार पर कक्षा में प्रस्तुति दी है।

विशाल दर्शक समूह के सामने प्रस्तुति देने के क्रम में अब आपको सीखी गई तकनीकों को एक साथ उपयोग में लाने के लिए उचित योजना और प्रक्रिया बनाने की आवश्यकता है।

0538CH08

चरण 1— कथापट्ट और पटकथा लेखन

विभिन्न परिस्थितियों का उपयोग करके अब तक आपने कहानी बनाना सीख लिया होगा। अब आपको एक ऐसी कहानी का चयन करना है जिसे आप इस वर्ष के अंत में अभिनीत कर सकें। कक्षा में चर्चा कीजिए और एक ऐसी कहानी बनाइए जो—

- कक्षा में सभी को मनोरंजक लगे। यदि यह आपको मनोरंजक नहीं लगती है तो इससे दर्शकों का मनोरंजन भी नहीं हो पाएगा।
- कहानी सरल एवं संक्षिप्त होनी चाहिए। समय-सीमा पाँच से आठ मिनट की हो सकती है। सहज मंच-सामग्री तथा वेशभूषा का उपयोग करना चाहिए।
- इस प्रक्रिया को रचनात्मक बनाइए। कहानी के अनुरूप ही संगीत कक्षा में अभ्यास किए हुए किसी गीत या किसी नृत्य को प्रस्तुति में समाहित करने का प्रयास कीजिए।
- इसमें सभी विद्यार्थियों को सम्मिलित कीजिए। कुछ विद्यार्थी अभिनय कर सकते हैं तथा कुछ विद्यार्थी कहानी पर या मंच-सामग्री पर कार्य कर सकते हैं।

कुछ वर्ष पूर्व एक विद्यालय में एक रोचक घटना घटित हुई। आइए, मैं आपको वह कहानी सुनाता हूँ। सुनने के उपरांत बताइए कि आपने इससे क्या शिक्षा प्राप्त की?

© NCERT not to be republished

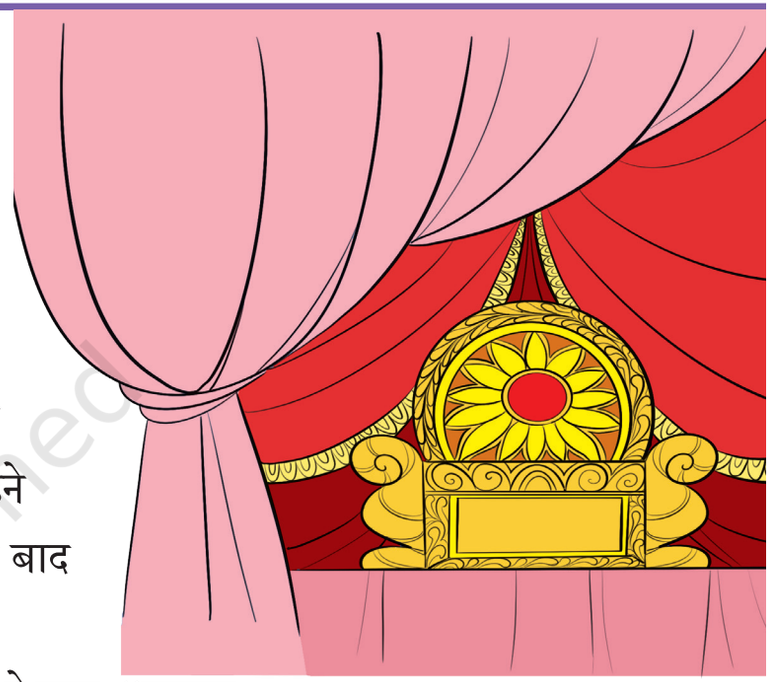

एक बार कक्षा 5(ख) में विद्यार्थियों के एक समूह ने 'जंगल की साहसिक यात्रा' नामक एक भव्य नाटक प्रस्तुत करने का निर्णय लिया। इसमें सब कुछ था— बोलने वाले पेड़, नाचते हुए बंदर और एक जासूस गिलहरी। वे सभी बहुत उत्साहित थे। इतने उत्साहित कि हर कोई मंच पर भूमिका निभाना चाहता था।

"मैं शेर बनूँगा", आदित्य ने कहा। मीरा ने अपने पानी वाले नृत्य का अभ्यास करते हुए कहा, "मैं नदी बनूँगी"। निशा ने कहा, "मैं कथावाचक और तोता बनूँगी और संभवतया झरना भी बनूँगी", स्पष्ट रूप से वह किसी तरह का विश्व रिकॉर्ड तोड़ने का प्रयास कर रही थी। एक सप्ताह के मनोरंजक पूर्वाभ्यास के बाद उन्होंने सोचा कि वे तैयार हैं।

प्रस्तुति से तीन दिन पहले उनके शिक्षक ने पूछा, "प्रकाश, संगीत और मंच की व्यवस्था कौन कर रहा है? आपकी वेशभूषा कैसी रहेगी?"

अचानक सन्नाटा छा गया।

वे नेपथ्य (बैकस्टेज) का सारा कार्य भूल गए थे।

"जब गिलहरी को कोष मिल जाएगा तो संगीत कौन बजाएगा?"

"हम पर्दे के पीछे किसी की उपस्थिति के बिना जंगल के पेड़ को कैसे परिवर्तित कर सकते हैं?", किसी ने फुसफुसाते हुए कहा।

© NCERT not to be republished

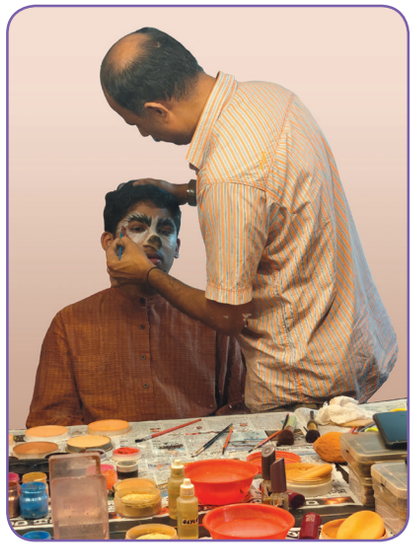

उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा। प्रत्येक के पास अभिनय करने के लिए कोई न कोई भूमिका थी। कोई भी उसे छोड़ना नहीं चाहता था।

लंबी चर्चा और वाद-विवाद के बाद उन्होंने कक्षा 5(क) से सहायता लेने का निर्णय लिया।

पहले तो कक्षा 5(क) ने उन्हें थोड़ा चिढ़ाते हुए कहा, "ओह, प्रसिद्ध अभिनेता भूल गए कि उन्हें किसी और समूह की भी आवश्यकता है!" अंतत: वे सहायता करने के लिए तैयार हो गए।

उन्होंने सभी आवश्यकताओं और उनके समय-निर्धारण के विषय में सीखा। पर्दे खींचना, जंगल की ध्वनियाँ बजाना, मंच-सामग्री को सँभालना और बार-बार बंदर की पूँछ गिरने पर उसे ठीक करके वे प्रस्तुति के वास्तविक नायक बन गए।। प्रस्तुति के दिन *जंगल की साहसिक* यात्रा सफल रही। दर्शकों ने प्रसन्नता से तालियाँ बजाईं और वे बहुत हँसे। इस बार सभी ने नेपथ्य दल के लिए भी तालियाँ बजाईं।

उस दिन के बाद से कक्षा 5(ख) के अभिनेता कभी नहीं भूले कि **"मंच पर एक नाटक केवल पर्दे के पीछे के सितारों के कारण ही चमकता है।"**

इससे हमने क्या सीखा? कार्य के सभी क्षेत्रों में योजना बनाना महत्त्वपूर्ण है।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 8_Hindi.indd 71 15-Dec-25 12:22:09 PM

चरण 2— योजना-निर्माण

आइए, एक नाटक प्रस्तुत करने के लिए किए जाने वाले कार्यों की सूची बनाएँ।

1. 2. 3. 4.

5. 6. 7. 8.

आपके द्वारा निर्मित सूची की तुलना अन्य विद्यार्थियों द्वारा बनाई गई सूचियों से कीजिए और देखिए कि क्या आपकी सूची में कुछ छूट तो नहीं गया है। प्रत्येक क्षेत्र में कार्य के प्रकार के आधार पर अपने मित्रों में उत्तरदायित्वों को बाँटिए। प्रत्येक समूह में विद्यार्थियों की संख्या कार्य की मात्रा पर आधारित होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि प्रत्येक दृश्य के लिए बहुत-सी मंच-सामग्री की आवश्यकता है तो उस समूह में अधिक सदस्यों की आवश्यकता होगी। आप उस समूह में चार या पाँच सदस्य रख सकते हैं। यदि आपके पास बहुत ही सरल और आधारभूत रूपसज्जा है, जिसे अभिनेता घर पर स्वयं भी कर सकते हैं तो आप सहायता के लिए केवल एक या दो सदस्य रख सकते हैं इत्यादि। इसी प्रकार अन्य उत्तरदायित्वों को भी बाँटिए।

© NCERT not to be republished

आपके संदर्भ के लिए नीचे एक सूची दी गई है—

क्रम संख्या	समूह	नाम	
1.	कहानी एवं पटकथा लेखन	1. 2. 3.	
2.	मंच-सज्जा	1. 2. 3.	
3.	मंच-सामग्री	1. 2. 3.	
4.	रूपसज्जा	1.	
5.	वेशभूषा	1.	
6.	संगीत एवं ध्वनि-प्रभाव		
7.	अभिनय एवं नृत्य		

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 8_Hindi.indd 73 15-Dec-25 12:22:10 PM

चरण 3— समय-सीमा

समय-सीमा योजना का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण भाग है। योजना और तैयारी के लिए उचित समय देने से प्रस्तुति की सफलता सुनिश्चित होती है। यदि आपको उचित समय-सीमा न दी जाए तो क्या होगा?

नाटक-प्रस्तुति की तिथि समीप है— पूर्वाभ्यास के लिए समय नहीं मिलेगा। वस्त्र-सज्जा और मंच-सामग्री लेने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलेगा। अभिनेता बिना अभ्यास के संवाद भूल सकते हैं।

नाटक-प्रस्तुति की तिथि दूर है— समूह की रुचि और उत्साह कम हो सकता है। बहुत अधिक पूर्वाभ्यास इसे नीरस बना सकता है। इसके साथ ही कई अन्य समस्याएँ भी आ सकती हैं, जैसे— किसी अभिनेता को नगर से बाहर जाना पड़ सकता है, कोई अस्वस्थ हो सकता है, विद्यालय में कोई नया कार्यक्रम आ सकता है जिसकी तैयारी में सभी विद्यार्थी सम्मिलित हो सकते हैं आदि। अत: न केवल प्रस्तुति के लिए ही अपितु प्रत्येक चरण के लिए समय-सीमा की सावधानीपूर्वक योजना बनानी चाहिए।

चरण 1— 3 दिन कथापट्ट और पटकथा लेखन	**चरण 2 और 3**— 2 दिन कथापट्ट योजना और समय-सीमा	**चरण 4**— 12 दिन पूर्वाभ्यास	**चरण 5**— 2 दिन अंतिम पूर्वाभ्यास और प्रस्तुति

उपर्युक्त दी गई समय-सीमा मात्र एक उदाहरण है। कहानी के आधार पर आपकी सारणी में दिनों की संख्या भिन्न-भिन्न हो सकती है। योजना बनाते समय स्मरण रखें कि कम से कम 15–20 दिन पश्चात नाट्य प्रस्तुति हो। यदि प्रस्तुति की अवधि आपके विद्यालय या शिक्षक द्वारा पूर्व निर्धारित है तो आपको 20 दिन पहले से ही इस पर कार्य करना आरंभ कर देना चाहिए।

© NCERT not to be republished

चरण 4— पूर्वाभ्यास

प्रक्रिया का यह भाग सर्वाधिक समय लेता है और इसमें समूह द्वारा कठिन परिश्रम भी किया जाता है। नाट्य के पूर्वाभ्यास में एक निश्चित क्रम का पालन करना होता है जिसका विवरण निम्नलिखित है—

- **पटकथा लेखन एवं पठन**— पूरा समूह एक साथ बैठता है और प्रत्येक विद्यार्थी क्रम से कुछ पंक्तियाँ पढ़ता है। इसे अनेक बार दोहराया जाता है।
- **चरित्र-चयन**— अभिनेताओं को भूमिकाएँ सौंपना।
- **दृश्य-रचना**— प्रत्येक दृश्य के लिए कलाकारों की स्थिति और गतिविधि का निर्धारण करना।
- **संवाद और भाव-भंगिमाओं के साथ अभ्यास**— दृश्य के क्रमानुसार।
- **पूर्ण नाटक**— प्रारंभ से अंत तक अबाधित पूर्वाभ्यास।

इन चरणों के लिए एक अलग समय-सीमा का निर्धारण किया जाना उपयोगी सिद्ध होगा। इससे प्रत्येक चरण समय पर सम्पन्न किया जा सकेगा।

तकनीकी समूह

इसमें मंच-सामग्री, वेशभूषा, रूप-सज्जा, संगीत और अन्य नेपथ्य समूह सम्मिलित होते हैं। जब अभिनेताओं का समूह संवादों और दृश्यों का पूर्वाभ्यास कर रहा होता है तो इनमें से प्रत्येक समूह अपना कार्य पूर्ण करने में समान रूप से व्यस्त होता है।

मंच-सामग्री— मंच की साज-सज्जा के लिए गत्तों से आवश्यक वस्तुएँ बनाएँ अथवा आप अपने किसी सहपाठी अथवा मित्र की सहायता से इनकी व्यवस्था कर सकते हैं। कक्षा 3 और 4 से 'वस्तु के अन्य उपयोग अभ्यास' का स्मरण कीजिए। आशुरचना कौशल का उपयोग करें।

वेशभूषा— आपके पास उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करते हुए संभावित वस्त्रों की योजना बनाइए। आप गत्तों से मुकुट जैसी सामग्री बना सकते हैं या आप अपने किसी सहपाठी अथवा मित्र की सहायता से इनकी व्यवस्था कर सकते हैं। अपनी योजना इस प्रकार बनाइए कि वेशभूषा खरीदने या किराए पर लेने की आवश्यकता न हो।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 8_Hindi.indd 75 15-Dec-25 12:22:10 PM

संगीत— गत दो वर्षों में आपने जो कुछ सीखा है, उसका उपयोग आप ध्वनि-प्रभाव रचना के लिए कर सकते हैं या आवश्यकतानुसार गीतों का गायन भी कर सकते हैं।

शिक्षक-संकेत— दृश्य-निर्धारण तथा पात्र-चयन में शिक्षक की सहायता एवं सहयोग की आवश्यकता हो सकती है। जहाँ तक संभव हो विद्यार्थियों को स्वयं करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। शिक्षक केवल अत्यंत आवश्यक परिस्थितियों में ही हस्तक्षेप करें।

चरण 5— प्रस्तुति आरंभ करें

जैसे-जैसे प्रस्तुति का दिन पास आता है वैसे-वैसे सभी में उत्सुकता और कहीं न कहीं घबराहट भी बढ़ती जाती है और ऐसा होना स्वाभाविक भी है। वास्तव में अनेक वर्षों से अभिनय कर रहे व्यावसायिक अभिनेता भी मंच पर आने से पहले घबरा जाते हैं। मनोविज्ञान कहता है कि यह घबराहट कभी-कभी अभिनेताओं के उत्तम प्रदर्शन में सहायक होती है। अत: आपको निरंतर कठिन परिश्रम करना है और यह सुनिश्चित करना है कि आप अपनी पंक्तियों और गतिविधियों से भली-भाँति परिचित हैं।

© NCERT not to be republished

प्रस्तुति के दौरान घबराहट दूर करने और आत्मविश्वास बनाए रखने हेतु कुछ सुझाव—

1. पूर्वाभ्यास

घबराहट से बचने का सबसे शक्तिशाली शस्त्र पूर्वाभ्यास है। आप नाटक के प्रत्येक विवरण से जितना अधिक परिचित होंगे, नाटक उतना ही उत्तम होगा। इसलिए पूर्वाभ्यास के लिए समय निकालें। कभी समूह के साथ और कभी स्वयं ही पूर्वाभ्यास करें। इसमें अंतिम पूर्वाभ्यास भी सम्मिलित होना चाहिए है। **अंतिम पूर्वाभ्यास** नाटक की अंतिम प्रस्तुति की तरह होता है। घोषणा से लेकर सभी पहलुओं, जैसे— मंच-सामग्री, वेशभूषा, ध्वनि-प्रभाव, संगीत, नृत्य और नाटक की प्रत्येक वस्तु को अंतिम पूर्वाभ्यास में सम्मिलित किया जाता है। यह एक **परीक्षण** है। इस प्रकिया से आपको यह समझने का अवसर मिलेगा कि क्या त्रुटि हो सकती है और आपको कहाँ सुधार करने की आवश्यकता है। आप वास्तविक दर्शकों के सामने अपनी प्रस्तुति से पूर्व अपने कुछ शिक्षकों के समक्ष प्रस्तुति देकर उन्हें स्वयं की प्रतिक्रिया और सुझाव देने के लिए कह सकते हैं।

2. कलारूपों का उपयोग

सभी कलारूप तनाव से मुक्ति दिलाने में सहायता करते हैं। जो कला आपके चित्त को शांत रखने के लिए सहायक है, उसका चयन कीजिए। आप संगीत, नृत्य, रंगमंच और दृश्य कला सीख रहे हैं। ये सभी एक-दूसरे के पूरक हैं एवं आपके लिए लाभदायक हैं। इनमें विश्राम, तनाव व दबाव से मुक्ति, एकाग्रता एवं रचनात्मकता में वृद्धि जैसे अनेक सकारात्मक गुण विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त ये मन को प्रेरणा और स्फूर्ति भी प्रदान करते हैं। आइए, देखें कि हम अपनी परिस्थितियों में इनका किस प्रकार सार्थक उपयोग कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 8_Hindi.indd 77 15-Dec-25 12:22:12 PM

संगीत— कोई सुखद धुन गुनगुनाना या किसी आनंदमयी गीत का गायन आपको शांति दे सकता है।

रंगमंच— अपनी आँखें मूँदकर सभी विवरणों सहित अपने दृश्यों की कल्पना कीजिए। ऐसा करने से आपके भीतर आत्मविश्वास आएगा।

नृत्य— कूदने, हाथ झटकने और नृत्य करने से घबराहट दूर होती है।

दृश्य-कला— अपने कार्यों और दृश्यों के रेखाचित्र बनाइए। आपके मस्तिष्क में आने वाले विचारों को चित्रित करने के लिए आप विभिन्न रंगों का उपयोग कर सकते हैं।

ये कलारूप न केवल आपको उत्साहित रहने में सहायता करते हैं अपितु आपकी एकाग्रता में भी वृद्धि करते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक भव्य प्रस्तुति होती है।

© NCERT not to be republished

3. समूह संलग्नता

एक-दूसरे के हाथों को पकड़कर वृत्ताकार बैठिए। धीरे-धीरे गहरी श्वास लीजिए। नाक से श्वास अंदर लीजिए और मुँह से श्वास बाहर छोड़िए। कल्पना कीजिए कि आप एक शांत कछुआ हैं। यह गतिविधि आपके हृदय की धड़कन को धीमा और मस्तिष्क को शांत करने में सहायता करती है। इसे दो से तीन बार दोहराइए। जब आप स्वयं को शांत और एकाग्र अनुभव करें तो साथ में प्रार्थना कीजिए।

नीचे दी गई प्रार्थना उपनिषद से लिया गया एक श्लोक है जो एक साथ कार्य करने के लाभ और सफलता के विषय में बताता है।

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

अर्थ—

1. हम सब मिलकर आगे बढ़ें और प्रगति करें।
2. हम सब मिलकर रसास्वादन करें और आनंद लें।
3. हम सब मिलकर उत्साह (एकाग्रता और ऊर्जा) के साथ कार्य करें।
4. हमारे द्वारा किया गया कार्य ज्ञान की ओर ले जाने वाली चमक से भरा हो और शत्रुता उत्पन्न न होने दे।
5. ॐ शांति, शांति, शांति।

इससे समूह में सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न होगी। स्मरण रखें कि आपके मित्र आपके साथ हैं। आप सभी मिलकर यह कार्य कर रहे हैं और प्रत्येक विद्यार्थी चाहता है कि वह सफल हो। अपने समूह पर विश्वास बनाए रखें।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 8_Hindi.indd 79 15-Dec-25 12:22:15 PM

4. प्रस्तुति से पूर्व ध्यान देने योग्य बिंदु

अत्यधिक भोजन करने से पेट में समस्या हो सकती है। आपको भारीपन जैसा लग सकता है और नींद भी आ सकती है। जंक फूड खाने या सोडा पीने से भी प्रस्तुति के समय समस्या उत्पन्न हो सकती है। अत: प्रस्तुति से पूर्व हल्का और पौष्टिक आहार लें।

विलंब न करें

जल्दबाजी करने से आप अधिक घबरा सकते हैं। कार्यक्रम स्थल जल्दी पहुँचें और सुनिश्चित करें कि आपकी सभी वस्तुएँ व्यवस्थित हैं। स्वयं को ध्यान केंद्रित करने के लिए पर्याप्त समय दें।

कोई वीडियो गेम नहीं खेलें

स्क्रीन आपका ध्यान भटका सकती है या आपको थका हुआ अनुभव करा सकती है। कोई भी वस्तु जो आपका ध्यान भटकाती है, वह अच्छी नहीं है। आपको संपूर्ण प्रस्तुति के समय अपना ध्यान बनाए रखना होगा।

प्रस्तुति से पूर्व रात्रि को अच्छी नींद लें

प्रस्तुति के दिन अपनी शारीरिक और मानसिक ऊर्जा के स्तर को ऊँचा रखने के लिए अच्छी नींद लेना महत्त्वपूर्ण है। अच्छी नींद लेने से आपका ध्यान और स्मरणशक्ति बनी रहती है। यदि आपने अच्छी नींद नहीं ली तो आप अपनी पंक्तियाँ भी भूल सकते हैं।

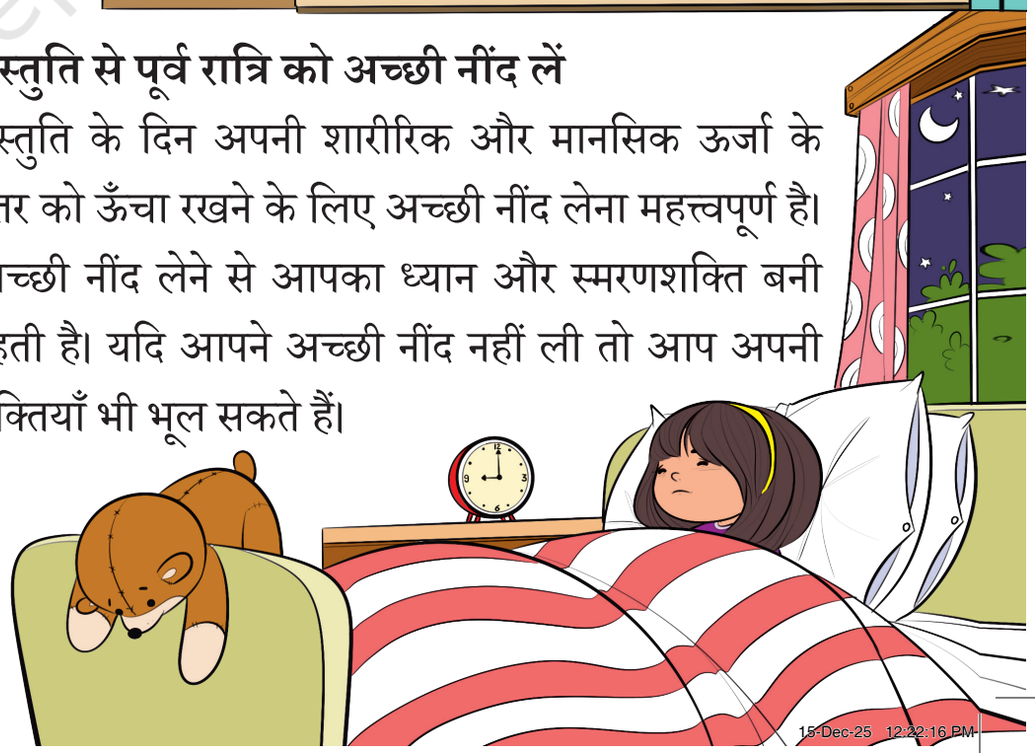

© NCERT not to be republished

यदि आपने पूरी निष्ठा से प्रयास किया है तो इसका प्रभाव अंतिम परिणाम में अवश्य दिखेगा। पूरी तैयारी और कठिन परिश्रम के साथ प्रस्तुति सफल होगी। लगभग 1000 वर्ष पूर्व सोमदेव ने अपनी लोककथाओं की पुस्तक *कथासरित्सागर* में कहा था—

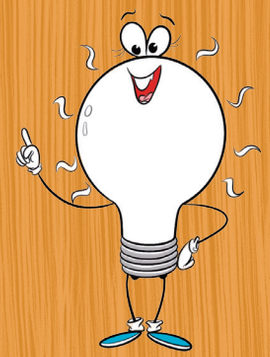

अप्राप्यं नाम नेहास्ति धीरस्य व्यवसायिनः।

"साहसी और परिश्रमी व्यक्ति के लिए कुछ भी अप्राप्य नहीं है।"

- आपके लिए कौन-सा चरण सबसे अधिक आनंददायी था और कौन-सा चरण सबसे अधिक कठिन था?
- क्या आप और आपके मित्र अपनी बनाई योजना पर दृढ़ रहे?
- आपको योजना में कौन-से परिवर्तन करने पड़े और क्यों?
- क्या नेपथ्य का कार्य और मंच पर अभिनय, दोनों एक जैसे हैं? किस कार्य में अधिक परिश्रम और प्रयास की आवश्यकता होती है?

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 8_Hindi.indd 81 15-Dec-25 12:22:17 PM

आकलन

अध्याय 8 — समय, समूह और तकनीक				
दक्षताएँ C-3.1— नाट्य कला में प्रयुक्त सामग्री, उपकरण और तकनीकों के साथ कार्य करते समय चयन करना। C-3.2— व्यक्तिगत और सहयोगात्मक रूप से नाटक बनाते समय योजना बनाने, क्रियान्वयन करने और प्रस्तुति करने के चरणों का अभ्यास करना।				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-2	C-3.1	कहानी में संगीत और नृत्य को सम्मिलित करने की संभावनाओं का पता लगाते हैं।		
	C-3.1	योजना और समय-सीमा में विचार की स्पष्टता प्रदर्शित करते हैं।		
	C-3.2	नेपथ्य के तत्वों को महत्त्व देते हैं।		
	C-3.1, 3.2	नियोजन चरणों के लिए सहमति पर पहुँचने हेतु समूह के साथ चर्चा करते हैं।		
	C-3.2	विभिन्न कलाकारों और तकनीकी समूह के साथ पूर्वाभ्यास की योजना बनाने पर कार्य करते हैं।		
	C-3.2	दृश्य को वास्तविक बनाने के लिए सहज रूप से मंच-सामग्री, ध्वनि आदि का उपयोग करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन _____

अन्य टिप्पणियाँ _____

© NCERT not to be republished

अध्याय 9

देखें और समीक्षा करें

0538CH09

रंगमंच कलाकार के रूप में आप किसी भी क्षेत्र में कार्य करने में रुचि रख सकते हैं, जैसे— पटकथा लेखन, वेशभूषा तैयार करना, अभिनय इत्यादि। आप चाहे जो भी कार्य करें, नाटक एवं अन्य प्रस्तुतियाँ देखना अत्यंत आवश्यक है। चूँकि अब आप स्वयं योजना बना सकते हैं और प्रस्तुति दे सकते हैं, अत: अन्य व्यक्तियों की प्रस्तुतियाँ देखकर आपको बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

आप न केवल यह ज्ञात कर सकते हैं कि उन्होंने मंच-सामग्री, रूप-सज्जा, वेशभूषा, संगीत और अभिनय के तकनीकी पहलुओं की योजना कैसे बनाई है अपितु विभिन्न संस्कृतियों, परंपराओं, ऐतिहासिक नायकों आदि के विषय में भी और अधिक सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं।

अगले पृष्ठ पर हमारे देश भर में प्रचलित कुछ लोक नाट्य-परंपराओं की सूची दी गई है। आपके नगर या कस्बे में जब भी इन लोक नाट्यों का आयोजन हो तो इन्हें देखना न भूलें।

© NCERT not to be republished

विदुषक के साथ छुट्टियाँ

पश्चिमी भारत

- भवई (गुजरात)— मुक्ताकाशी मंच में किए जाने वाले नाट्य कार्यक्रम हैं जो सामाजिक मुद्दों को दर्शाते हैं।
- तमाशा (महाराष्ट्र)— यह गायन, नृत्य और हास्य का मिश्रण है। यह लावणी के लिए प्रसिद्ध है।
- गरबा रंगमंच (गुजरात)— नवरात्रि के समय नृत्य-आधारित प्रस्तुतियाँ हैं, कभी-कभी इनमें नाटकीय कहानियाँ भी होती हैं।

उत्तर भारत

- नौटंकी (उत्तर प्रदेश)— यह कहानी, संगीत और नृत्य का मिश्रण है जो अस्थायी मंचों पर प्रस्तुत किया जाता है।
- स्वांग (हरियाणा एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश)— अनुकरण, संवाद, हास्य एवं गायन के आधार पर इसे प्रस्तुत किया जाता है।
- भांड पाथेर (कश्मीर)— भांड समुदाय द्वारा नृत्य, नाटक और मूकाभिनय का प्रयोग करते हुए प्रस्तुत किया जाता है।

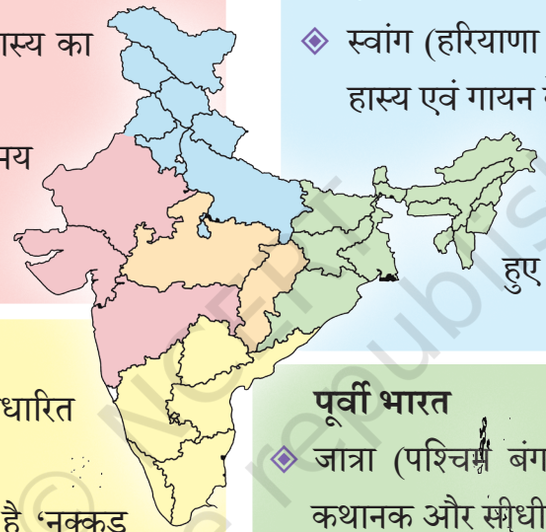

दक्षिण भारत

- यक्षगान (कर्नाटक)— यह महाकाव्यों पर आधारित शास्त्रीय संगीत, संवाद और नृत्य का मिश्रण है।
- थेरुकुथु (तमिलनाडु)— इसका शाब्दिक अर्थ है 'नुक्कड़ नाटक'। इसमें कहानी सुनाने और नृत्य का प्रयोग किया जाता है।
- कुटियट्टम (केरल)— यह प्राचीन संस्कृत रंगमंच रूप है। इसे पारंपरिक रूप से मंदिरों में शैलीगत अभिनय के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

पूर्वी भारत

- जात्रा (पश्चिम बंगाल, ओडिशा और असम)— यह नाटकीय कथानक और सीधी संगीत प्रस्तुति के साथ यात्राशील रंगमंच है।
- अंकिया नाट (असम)— यह नृत्य और संगीत पर आधारित भक्तिपूर्ण एकांकी नाटक है।
- छऊ (ओडिशा, झारखंड और पश्चिम बंगाल)— यह युद्ध कला और कहानियों के साथ अर्ध-शास्त्रीय प्रस्तुति है।

मध्य भारत

- नाचा (छत्तीसगढ़)— यह नृत्य और हास्य कथा-कथन पर केंद्रित है।
- माच (मध्य प्रदेश)— यह ऐतिहासिक और धार्मिक विषयों पर आधारित संगीतमय नाट्य प्रस्तुति है।

© NCERT not to be republished

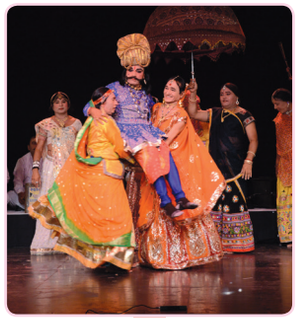

भवई

गरबा

भांड पाथेर

नौटंकी

कुटियट्टम

यक्षगान

अंकिया नाट

पुरुलिया छऊ

गतिविधि 9.1 नाट्य विधाओं का मानचित्रण

माच

विदूषक अखिल भारतीय यात्रा पर है। आइए, हम भी उनके साथ यात्रा करें और भारत के सभी रंगमंच रूपों के विषय में सीखें।

रंगमंच के स्वरूप का नाम उसके राज्य के नाम से मिलाइए और उसे मानचित्र पर लिखिए। संकेत— रंगसूत्र का पालन कीजिए। अपने राज्य के रंगमंच स्वरूपों के और अन्य नाम सम्मिलित कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 9_Hindi.indd 85 15-Dec-25 12:24:27 PM

जब आप कोई प्रस्तुति देखते हैं तो क्या करते हैं? आपके मन-मस्तिष्क में क्या विचार आते हैं? क्या ये विचार अधिकतर कहानी और भूमिकाओं के विषय में होते हैं या आप यह भी सोचते हैं कि उन्होंने इस प्रस्तुति के लिए किस प्रकार पूर्वाभ्यास और तैयारी की होगी?

रंगमंच के विद्यार्थी के रूप में आप न केवल प्रस्तुति करते हैं अपितु अन्य प्रस्तुतियों के लिए अच्छे दर्शक भी बनते हैं।

प्रतिक्रिया और समीक्षा साझा करने की विधि के विषय में नीचे कुछ संकेत दिए गए हैं—

ध्यानपूर्वक देखिए— प्रस्तुति के समय पूर्ण रूप से एकाग्रचित्त रहें। मंच पर उपस्थित छोटी से छोटी मंच-सामग्री से लेकर वस्त्र, संगीत और अभिनय तक प्रत्येक छोटी-बड़ी सूचना पर ध्यान दें।

कहानी और कथानक को समझिए— यदि आप कहानी को नहीं समझते हैं तो शेष पक्षों का भी कोई अर्थ नहीं रह जाएगा। आपको कहानी और कथानक को समझना होगा और एक संक्षिप्त सारांश भी लिखना होगा।

दर्शकों की प्रतिक्रिया पर ध्यान दीजिए— क्या आपके साथ अन्य दर्शक भी नाटक पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं? क्या हास्य के दृश्य में वे हँसते हैं? जब अच्छी प्रस्तुति होती है तो क्या वे ताली बजाते हैं या फिर नाटक के समय पूरी तरह से ऊब जाते हैं?

विशिष्ट बिंदुओं की सूची— आपने जो कुछ भी देखा उनके विशिष्ट बिंदुओं की सूची बनाइए। प्रस्तुति के पश्चात आप उन्हें विस्तार में लिख सकते हैं। यदि आप इन्हें शीघ्र नहीं लिखेंगे तो आप बाद में उसे भूल सकते हैं या ये बिंदु आपसे छूट भी सकते हैं। अतः सदैव एक नोटपैड और एक पेंसिल साथ रखें।

© NCERT not to be republished

आपका विचार— प्रत्येक प्रस्तुति के सकारात्मक और नकारात्मक बिंदु होते हैं। प्रस्तुति के विषय में अपने अनुभव साझा कीजिए। आपमें से प्रत्येक के विचार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं और यह स्वाभाविक है। किंतु अपने विचार सावधानीपूर्वक साझा करें। सकारात्मक बिंदुओं को प्रशंसा के साथ साझा करें और नकारात्मक बिंदुओं को इस प्रकार साझा करें कि इनसे कलाकार की भावनाएँ आहत न हों अपितु उन्हें अगली बार और अधिक उत्तम प्रस्तुति के लिए प्रेरित करें। यह मनोरंजक खेल आपको अपने समीक्षा कौशल को और अधिक उत्तम बनाने में सहायता करेगा।

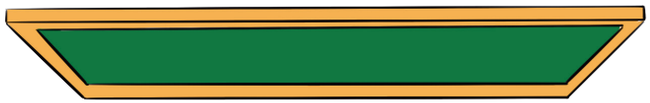

समूह 6 – प्रस्तुति

समूह 1 – संवाद

समूह 2 – उपयोग की गई मंच-सामग्री

समूह 3 – अभिनय

समूह 4 – कहानी और प्रवाह स्पष्टता

समूह 5 – मंच पर प्रवेश एवं प्रस्थान की स्थिति

गतिविधि 9.2
समीक्षा कोना

तीन से पाँच सदस्यों के छोटे-छोटे समूह बनाइए। (यदि कक्षा में 30 विद्यार्थी हैं तो आपके पास लगभग 6 समूह बनेंगे)। प्रत्येक समूह को अपनी रुचि की एक सरल स्थिति पर तीन मिनट की प्रस्तुति तैयार करनी है। उदाहरण के लिए, समूह 1 को दुकानदार के साथ एक रोचक घटना प्रस्तुत करनी है, समूह 2 पड़ोस में पानी की समस्या की स्थिति बता सकता है इत्यादि।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 9_Hindi.indd 87 15-Dec-25 12:24:29 PM

प्रत्येक समूह बारी-बारी से प्रस्तुति देता है। जब एक समूह अपनी प्रस्तुति देता है तो अन्य पाँच समूह विशिष्ट नामों से चिह्नित पाँच भिन्न-भिन्न स्थानों पर समूहों में बैठते हैं।

प्रत्येक समूह के सदस्य केवल निर्धारित क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उस पर टिप्पणी प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुति देने वाला समूह प्रस्तुति की समाप्ति के बाद समूह-1 में बैठता है और अन्य समूह अगले समूह की ओर स्थानांतरित हो जाते हैं। प्रत्येक समूह प्रस्तुति करने वाले समूह के साथ अपनी समीक्षा भी साझा करता है।

इस गतिविधि के प्रतिफल

- प्रत्येक समूह को विभिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने और समीक्षा करने का अवसर मिलता है।
- प्रत्येक समूह यह समझता है कि उनकी प्रस्तुति का दर्शकों पर क्या प्रभाव पड़ा।
- इस गतिविधि से यह समझ प्राप्त होती है कि प्रशंसा कैसे की जाए और आलोचनात्मक पहलुओं को सकारात्मक रूप से कैसे प्रस्तुत किया जाए।

विकसित स्तर

आपने जो सीधी प्रस्तुति देखी है, उसके लिए भी यही अभ्यास कीजिए। यद्यपि आपके सामने प्रस्तुति नहीं है, फिर भी आप वही श्रेणियाँ बना सकते हैं और प्रस्तुति के समय आपके द्वारा लिखी गई टिप्पणियों के आधार पर अपने विचार और सुझाव लिख सकते हैं।

क्या आप जानते हैं?

'आइए घेरा बनाएँ' गतिविधि एक प्रकार का समीक्षा अभ्यास है। आप सभी इस पर सदैव कार्य करते रहे हैं और अब आप इसका उपयोग कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

तुलना करें और सीखें

तुलना सामान्यतः दो समान वस्तुओं के बीच की जाती है। हम शिमला के सेबों की तुलना कश्मीरी सेबों से कर सकते हैं। यद्यपि हम सेबों की तुलना संतरों से नहीं कर सकते।

जैसा कि आप सभी ने स्वयं नाटक प्रस्तुत करने का अनुभव किया होगा और किसी दूसरे समूह की प्रस्तुति को देखा भी होगा तो क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि इन दोनों प्रस्तुतियों की तुलना की जा सकती है? आइए, पहले समझते हैं कि दोनों प्रस्तुतियाँ कितनी सामान्य या भिन्न थीं।

फिर आप इस विषय में एक लेख लिख सकते हैं कि आपने क्या अनुभव किया और क्या सीखा।

समानताएँ	असमानताएँ
(उदाहरणार्थ) हास्यस्पद	कहानी (पुराणों पर आधारित वर्तमान समय की प्रस्तुति)
(उदाहरणार्थ) नृत्य	अभिनेताओं की संख्या (अन्य समूह–5; हम–12)

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 9_Hindi.indd 89 15-Dec-25 12:24:33 PM

आकलन

अध्याय 9— देखें और समीक्षा करें				
दक्षताएँ C-4.1— प्रकृति में नाटक और गति के तत्वों को पहचानते हैं और उनकी कलात्मकता का वर्णन करते हैं। C-4.2— स्थानीय कलारूपों और संस्कृति के प्रति जिज्ञासा प्रदर्शित करते हैं।				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-4	C-4.1	एक दर्शक के रूप में अपनी भूमिका से संबंधित विभिन्न तत्वों की पहचान कर सकते हैं।		
	C-4.1	सामग्री और तकनीक के आधार पर दूसरों के कार्यों पर प्रतिक्रिया देते हैं।		
	C-4.2	अपने राज्य के परिचित लोकरूपों को पहचानते हैं।		
	C-4.2	अन्य कलारूपों को जानने में जिज्ञासा प्रदर्शित हैं।		
	C-4.2	अपने नाटक और देखे गए नाटक के बीच समानताएँ एवं असमानताएँ सूचीबद्ध करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन _____

_____

अन्य टिप्पणियाँ _____

_____

© NCERT not to be republished

योगात्मक आकलन

	आकलन के लिए गतिविधि (उदाहरण)	आकलन के लिए मापदंड
व्यक्तिगत	विद्यार्थियों को तीन स्थितियाँ अवगत कराने के लिए कहा जाएगा। इन्हें जोड़कर एक सार्थक कहानी का निर्माण करना है और गतिविधियों और भावों के साथ इस कहानी को सुनाना है।	संचार (मौखिक और गतिविधि), आत्मविश्वास, रचनात्मकता त्वरितपरता प्रदर्शित करते हैं।
सामूहिक	एक नाटक चार सप्ताह में प्रस्तुत करने के लिए एक स्थिति दी जाती है। समूह कथापट्ट से लेकर अंतिम प्रस्तुति तक एक स्पष्ट चरण-दर-चरण योजना तैयार करते हैं।	आयोजन, विचार की स्पष्टता और सहयोग करते हैं।

विद्यार्थियों!

हम एक और वर्ष के अंत तक पहुँच चुके हैं!

जब आपने तीन वर्ष पूर्व आरंभ किया था तो आप संकोची और जिज्ञासु थे और सोचते थे कि रंगमंच का अर्थ केवल रोचक वेशभूषा धारण करना और ऊँची आवाजें निकालना है। किंतु अब आप वास्तविक कलाकारों की तरह अपनी अभिव्यक्ति कर सकते हैं, चल सकते हैं, बोल सकते हैं और सुन सकते हैं। आपने त्रुटियाँ की हैं परंतु साथ ही आनंदित भी हुए हैं और यही इसकी सार्थकता है। भले ही आप खिलाड़ी बनें, चिकित्सक बनें या मेरी तरह विदूषक (बहुत प्रतिष्ठित नौकरी, ध्यान रहे!) बनें, स्मरण रखें कि संसार आपका मंच है और आपका हृदय आपकी पटकथा है।

नन्हे सितारों। प्रणाम स्वीकार करो।

पर्दा गिर गया... यद्यपि आपकी प्रस्तुति आरंभ हो गई!

आइए हम अपनी रंगमंच यात्रा को प्रतिदिन जारी रखें।

शुभं भूयात्।

© NCERT not to be republished

Part-2 Chapter 9_Hindi.indd 91 15-Dec-25 12:24:35 PM

संगीत

प्रिय शिक्षक,

जैसे-जैसे हम संगीत शिक्षा की इस यात्रा में आगे बढ़ते हैं, हमें अपने विद्यार्थियों को एक रचनात्मक और आनंददायक मंच प्रदान करने का अवसर प्राप्त होता है। प्रत्येक विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से रचनात्मक होता है और एक शिक्षक के रूप में यह हमारा दायित्व है कि हम उन्हें एक ऐसा सुरक्षित स्थान उपलब्ध कक्षायें करवाएँ जहाँ वे बिना किसी भय या आकलन के सीख सकें। यह पुस्तक इस अनुभव को संभव बनाने में आपकी सहायता कर सकती है।

यहाँ कुछ दिशा-निर्देश दिए गए हैं जो एक चमत्कारिक कक्षा अनुभव देने में आपकी सहायता कर सकते हैं—

- कक्षा का आरंभ मुस्कान और अभिवादन तथा स्वराभ्यास से करें जिससे विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरित किया जा सके।
- सदैव एक तानपूरे (इलेक्ट्रॉनिक या ऐप आधारित) का उपयोग करें ताकि विद्यार्थी गाते समय सुर में रहना सीख सकें।
- इस पुस्तक में विभिन्न भाषाओं के गीत सम्मिलित किए गए हैं। आप अपने क्षेत्र की भाषा से भी किसी गीत का चयन कर सकते हैं जिसके अभ्यास से उद्देश्य पूरा हो सके।
- जहाँ तक संभव हो, यह सुनिश्चित करें कि गतिविधियों के समय विद्यार्थियों को घूमने के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो।
- विद्यार्थियों के प्रयासों को प्रोत्साहित करें। साथ ही सभी विद्यार्थियों को गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
- जहाँ तक संभव हो, विद्यार्थियों को विभिन्न शैलियों के संगीत का अनुभव करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- विद्यालय में किसी संगीत कार्यक्रम का आयोजन करवाएँ और विद्यार्थियों को सीधी संगीत प्रस्तुति या प्रदर्शन में ले जाने हेतु प्रबंध करें।
- विद्यार्थियों को संगीत और कला के अनुभव में सहयोग कराने हेतु अपने शहर या कस्बे में उपलब्ध अन्य संसाधनों पर प्रकाश डालें।
- कक्षा के समय और विद्यालय के कार्यक्रमों के दौरान प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की प्रतिभाओं और उनकी क्षमताओं को प्रदर्शित करने का प्रयास करें।

यह आरंभिक स्तर का अंतिम वर्ष है, अत: जहाँ तक संभव हो, पिछले वर्षों की अवधारणाओं को सुदृढ़ करने का प्रयास करें ताकि इस चरण के लिए निर्धारित दक्षताएँ और पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्य पूरे हो सकें।

रचनात्मक आकलन के लिए प्रत्येक अध्याय के अंत में दिशा-निर्देश दिए गए हैं जिन्हें मुख्य रूप से कक्षा में अवलोकन के माध्यम से संचालित किया जाना चाहिए। संगीत अनुभाग के अंत में योगात्मक आकलन के लिए सुझाव दिए गए हैं और इस चरण के लिए दक्षताएँ अगले पृष्ठ पर दी गई हैं। आकलन का उद्देश्य मुख्य रूप से यह देखना है कि विद्यार्थी निर्धारित योग्यताओं तक पहुँचने में सक्षम हैं अथवा नहीं या उन्हें और अधिक सहयोग की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के विकास में सहयोग करने के लिए उन्हें गुणात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 10_Hindi.indd 93 15-Dec-25 12:26:09 PM

तारांकित गतिविधियों को कोई भी शिक्षक या सीमित संसाधनों वाले विद्यालय भी संचालित कर सकते हैं।

आरंभिक स्तर के लिए दक्षताएँ—

C-1.1 जिस संगीत से वे परिचित हैं, उस संगीत का अभ्यास और प्रस्तुति करने के लिए उत्साह व्यक्त करते हैं।

C-1.2 संगीत में सहयोगात्मक रूप से कार्य करते हुए अपने विचारों पर चर्चा करते हैं।

C-2.1 विभिन्न प्रकार की संगीत व्यवस्थाओं (गायन, वादन, एकल, युगल, समूह) में गीतों और लयों का अभ्यास और प्रस्तुति करते हैं।

C-2.2 कक्षा में प्रस्तुत विभिन्न संगीत शैलियों में संगीत तत्वों (लय, ताल, सुर, भाव), बोल और अभिव्यक्तियों की तुलना की पहचान करते हैं।

C-3.1 संगीत में उपयोग की जाने वाली ध्वनियों, वाद्ययंत्रों और आयोजनों के चयन में विकल्प चुनते हैं।

C-3.2 प्रस्तुति के लिए संगीत का चयन करते समय विचारों का योगदान देते हैं और पूर्वाभ्यास में भाग लेते हैं।

C-4.1 प्रकृति में निहित संगीत तत्वों को पहचानते हैं और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करते हैं।

C-4.2 स्थानीय कला और संस्कृति के प्रति जिज्ञासा प्रदर्शित करते हैं।

© NCERT not to be republished

अध्याय 10

गायन एवं वादन

0538CH10

विद्यार्थियों! पुन: आपका स्वागत है।
आइए अपनी संगीत की यात्रा एक साथ गीत गाते हुए आरंभ करें। इस प्रयोजन हेतु आप किसी ऐसे गीत का चयन कर सकते हैं जिससे आप पहले से परिचित हैं अथवा दिया गया गीत गाने का प्रयास करें।

प्रार्थना गीत– इतनी शक्ति हमें देना दाता
भाषा– हिंदी

इतनी शक्ति हमें देना दाता,
मन का विश्वास कमजोर हो ना
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे,
भूलकर भी कोई भूल हो ना।

दूर अज्ञान के हो अँधेरे,
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बचके रहें हम,
जितनी भी दे भली जिंदगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से
भावना मन में बदले की हो ना

हम न सोचें हमें क्या मिला है
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बाँटें सभी को
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन
अपनी करुणा का जल तू बहा के
कर दे पावन हर एक मन का कोना।

गीत सारांश— यह गीत भगवान से शक्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना को व्यक्त कर रहा है जिससे हमारा विश्वास कभी डगमगाए नहीं और हम अच्छाई के मार्ग पर चलते रहें।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 10.1 सामूहिक गायन

सामूहिक गायन के समय निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना आवश्यक है—

1. सभी विद्यार्थियों को गायन का आरंभ एवं समापन एक साथ ही करना चाहिए।
2. सभी को एक ही सुर एवं लय में गाना चाहिए।

गाने से पूर्व कोई एक व्यक्ति जैसे कि आपके शिक्षक आरंभिक स्वर तथा लय देकर सभी को बता सकते हैं कि गायन कब आरंभ करना है।

गायन आरंभ करने के पश्चात यह ध्यान दीजिए कि क्या सभी की ध्वनियाँ आपस में मिश्रित हो रही हैं।

यदि ध्वनियाँ वैसी नहीं आईं जैसी आप चाहते थे तो पुन: प्रयास करें। अभ्यास से ही संगीत उत्तम होता है।

गतिविधि 10.2 खंडों में गायन

आप पूरी कक्षा के साथ मिलकर गा चुके हैं तो आइए अब छोटे समूहों में प्रयास करते हैं।

- किसी गीत को एक या दो साथियों के साथ मिलकर युगल या त्रयी के रूप में गाएँ। पूर्व में बताए गए समूह गायन के सिद्धांतों को ध्यान में रखें। एकल गायन और बड़े समूह में क्या अंतर है? कौन-सा सरल और कौन-सा कठिन है?
- ऐसा गीत चुनें जिसमें तीन या चार अंतरे हों और कक्षा के विद्यार्थियों को तीन या चार समूहों में विभाजित कीजिए। प्रत्येक समूह गीत गाने के लिए निर्धारित किए गए अपने-अपने अंतरे पर अलग-अलग अभ्यास कर सकता है। जब आप पूरी तरह तैयार हो जाएँ तो समूहों को जोड़ें और पूरा गीत एक साथ गाएँ।

© NCERT not to be republished

गीत – मी डोलकर

भाषा – मराठी

वल्हव रे नाखवा हो वल्हव रे रामा
मी डोलकर, डोलकर, डोलकर दर्याचा राजा
घर पान्यावरी बंदराला करतो ये जा
आयबापाची लाराची लेक मी लारी
चोली पिवली गो नेसलंय अंजीरी सारी
माज्या केसान गो मालीला फुलैला चाफा
वास परमालता वाऱ्यानं घेतंय झेपा
नथ नाकानं साजीरवानी
गला भरून सोन्याचे मनी
कोलिवाऱ्याची मी गो रानी
रात पुनवेला नाचून करतंय् मौजा
मी डोलकर डोलकर, डोलकर दर्याचा राजा
वल्हव रे नाखवा हो वल्हव रे रामा

शिक्षक-संकेत—प्रत्येक क्षेत्र में पारंपरिक व्यवसायों से संबंधित लोकगीत एवं मछली पकड़ने से संबंधित लोकगीत हैं। आप अपने क्षेत्र के पारंपरिक व्यवसायों से संबंधित किसी भी एक गीत का चयन कर सकते हैं।

गीत सारांश— यह एक जीवंत और ऊर्जावान मराठी लोकगीत है जो समुद्र और मछुआरों की भावनाओं को व्यक्त कर रहा है। गीत के बोल मछुआरों को 'समुद्र के राजा' के रूप में वर्णित कर रहे हैं जो गर्व, स्वतंत्रता और समुद्र के साथ गहरे जुड़ाव को व्यक्त कर रहे हैं।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 10_Hindi.indd 97 15-Dec-25 12:26:12 PM

गतिविधि 10.3 साथ में ताली बजाना

यह एक ऐसी गतिविधि है जिसे दो व्यक्ति या दो समूहों द्वारा किया जा सकता है। जब एक व्यक्ति या समूह गीत गा रहा हो तो दूसरा समूह लय बनाए रखने के लिए गीत के साथ ताली बजाता रहेगा।

गतिविधि 10.4 वाद्ययंत्र के साथ गायन

किसी ऐसे गीत का चयन करें जिससे आप पूर्णतया परिचित हैं। क्या आप इस गीत को एकल, युगल या समूह में गाना पसंद करेंगे? किसी भी वाद्ययंत्र के साथ इस गीत को गाइए (यदि कोई आपका साथ दे सकता है) या कराओके (ट्रेक) के साथ गाइए। संगतकार के साथ गाते समय यह सुनिश्चित कीजिए कि आप एक ही लय और सुर में रहें। संगतकार के साथ अपनी आवाज में नियमित संतुलन रखने का प्रयास कीजिए।

गतिविधि 10.5 कप गीत

कप गीत एक रोचक गतिविधि है जिसमें आप अपने हाथों से ताली बजाकर और कपों को थपथपाकर तथा घुमाकर गाने की ताल को बजाते हैं। कप गीत का ऑनलाइन वीडियो देखिए और इसे लयबद्ध शृंखला में सीखिए। इसमें धाराप्रवाह होने में कुछ समय लग सकता है। जब तक आप धाराप्रवाह न हो जाएँ तब तक अभ्यास करें। जब आप आश्वस्त हो जाएँ तो वीडियो के साथ इसका अभ्यास करें।

अपनी पसंद के आठ मात्रा वाले किसी गीत को कप गीत के साथ गाने का प्रयास करें।

© NCERT not to be republished

मुख वाद्य

किसी भी अवनद्ध वाद्य की मुख द्वारा थाप को मुख वाद्य कहते हैं।

गतिविधि 10.6
लय एवं शब्दों का विन्यास

- किसी भी लयात्मक पंक्ति को निबद्ध लय में बोलने का प्रयास कीजिए जैसा— 'एक तितली अनेक तितलियाँ'।
- जब गा कर कुछ समय अभ्यास हो जाए तो शब्दों को गाने की लय के अनुसार बदलें। किसी शब्द पर बल देने का प्रयास करें और स्वरों की ध्वनि को कम करें। फिर सुनें और समझें कि यह सुनने में कैसा लग रहा है।

- धीमी ध्वनि जो मन्द्र स्वर में गाते हैं और वह ध्वनियाँ जो उच्च स्वर वाली हैं, सभी की तुलना करें। शब्द एवं लय का प्रभाव समझें।

कैपेला या ध्वनि वाद्ययंत्र

कैपेला गायन की एक ऐसी शैली है। इसमें किसी वाद्ययंत्र का उपयोग किए बिना गायन किया जाता है।

गतिविधि 10.7
कैपेला के साथ प्रयोग

कैपेला गीतों को इंटरनेट पर ढूँढ़िए और सुनिए। अब यह सोचिए कि क्या आप अपने मनपसंद गीत को कैपेला में गा सकते हैं जिसमें सभी वाद्य ध्वनियाँ मुख की आवाजों से बनाई जाएँ।

- सर्वप्रथम आपके द्वारा चुने गए गीत को ध्यान से सुनिए और पहचानने का प्रयास कीजिए कि उसमें कितने भाग हैं।
- विचार कीजिए कि आप ये भाग आपस में किस प्रकार बाँट सकते हैं।
- प्रत्येक भाग का अलग-अलग अभ्यास करें।
- अब सभी भागों को मिलाकर गाएँ। सामान्यत: यदि किसी को समय का ध्यान रखने और आरंभिक सुर देने का दायित्व दिया जाए तो यह सहायक हो सकता है।
- यदि आप प्रथम प्रयास में ऐसा नहीं कर पाते हैं तो निराश न हों, यह कठिन हो सकता है परंतु अभ्यास करने से इसमें सुधार होगा।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 10_Hindi.indd 99 15-Dec-25 12:26:13 PM

आकलन

अध्याय 10 — गायन एवं वादन			
दक्षताएँ	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-1.1	सुर और लय में बिना बाधा के गीत गाने में सक्षम हैं।		
C-1.2	संगीत की धुन के साथ समूह में गा सकते हैं।		
C-1.1	स्थिर गति में सरल लय का प्रदर्शन करने में सक्षम हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

अध्याय 11

कण-कण में संगीत

0538CH11

आपने कक्षा में संगीत और ध्वनि के विषय में बहुत कुछ सीखा है और आपने बहुत से गीत भी सीखे हैं। आइए अब यह जानने का प्रयास करते हैं कि संगीत हमारे दैनिक जीवन का एक भाग कैसे है।

गतिविधि 11.1क
कण-कण में संगीत सारणी

अपनी दैनिक गतिविधियों की एक सारणी बनाइए। उन स्थानों और समय को चिह्नित कीजिए जहाँ आपका विभिन्न ध्वनियों और संगीत से साक्षात्कार होता है। आपकी सुविधा के लिए एक उदाहरण दिया गया है। आप चाहें तो उसे और अधिक रचनात्मक बना सकते हैं।

गतिविधि 11.1ख
सारणी साझा कीजिए

अपनी सारणी को अपने किसी सहपाठी के साथ साझा कीजिए और उनकी सारणी को भी देखिए। पता लगाइए कि दोनों सारणियों में क्या समानताएँ हैं।

क्या आप प्रतिदिन संगीत सुनते हैं? क्या ऐसा कोई स्थान है जहाँ आप संगीत सुनना चाहेंगे?

समय	प्रात: 7 बजे	प्रात: 7:15 बजे
स्थान	बिस्तर	घर
आयोजन	घंटी	रेडियो पर प्रार्थनाएँ
ध्वनि या संगीत	ध्वनि	संगीत
यह मुझे कैसा अनुभव कराता है	चिड़चिड़ा	शांत

© NCERT not to be republished

सांगीतिक शब्दावली

नीचे कुछ संगीत से संबंधित शब्द दिए जा रहे हैं जो आपको ध्वनि और संगीत को भली-भाँति वर्णित करने में सहायता करेंगे।

तारता— यह दर्शाता है कि ध्वनि ऊँची है या धीमी।

राग— कुछ स्वरों द्वारा व्यवस्थित क्रम से बनी धुन।

ताल— गति की व्यवस्थित संरचना को ताल कहते हैं।

लय— यह सांगीतिक कृति की चाल होती है जो धीमी या तीव्र होती है और समय को नापते हुए गायी जाती है।

हारमनी— वह ध्वनि जो विभिन्न स्वरों को एक साथ गाने या बजाये जाने पर उत्पन्न होती है।

नाद की जाति— किसी विशेष ध्वनि की गुणवत्ता तथा वह गुण जो एक स्वर या वाद्य को एक-दूसरे से भिन्न बनाता है।

गतिविज्ञान— यह ध्वनि की तीव्रता को दर्शाता है— कोई वस्तु तीव्रता से बज रही है या धीरे से।

गतिविधि 11.2

अपने आस-पास की ध्वनि रिकॉर्ड करना

अपनी सारणी और अपने सहपाठी की सारणी देखकर ज्ञात कीजिए कि आपने अपने आस-पास कितनी बार ध्वनि और संगीत को सुना।

यदि संभव हो तो अपने आस-पास की कुछ ध्वनियाँ रिकॉर्ड कीजिए।

आपने संगीत से संबंधित जो शब्द सीखे हैं, उनका उपयोग इन ध्वनियों की विशेषताओं को बताने के लिए करें।

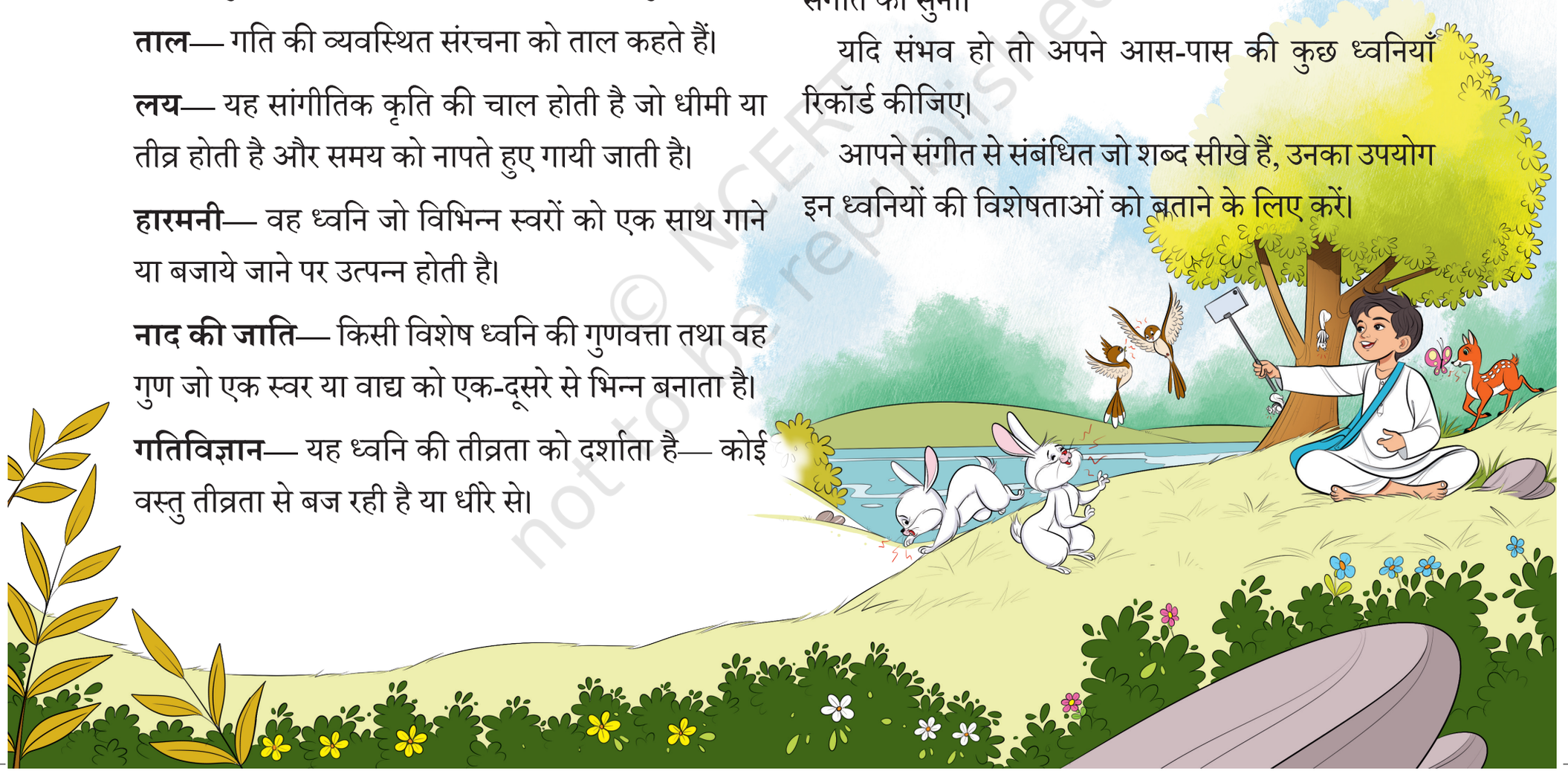

© NCERT not to be republished

प्रसंग के लिए गीत

आगे दिए गए दोनों गीत भारत के विभिन्न भागों से संबंधित हैं। आइए, इन्हें गाकर सीखें—

गीत– ध्वज गीत
रचनाकार– महाकवि वल्लथोल नारायण मेनन
भाषा– मलयालम

पोरा पोरा नालील दूरा-दुरा मुयारट्टे
भारथाक्षमा देवियूडे त्रीप्पाथाककल

अकाशा पोइकाईल पुतुताकुम अलयीलाकट्टे।
लोका बंधु गतिकूट्टा मार्गम काट्टट्टे
एकी भविचोरूंगी एकोदरा जातर नम्मल।
कैई कज़ुकी तुड़ाक्कूकि कोडियेडूक्कान

नम्मल नूट्टा नूलूक्कोंडुम नम्मल नेईता
वस्त्रम कोंडुम
निर्मिता मिता नीतीक्कोरंन्ध्यावरणम्
कृतृस्तारा नम्मुडेयी निथ्या स्वतान्द्रालता
सत्याकोडिमरत्तिमेल समशोभिक्कट्टे।

गीत का सारांश— 'पोरा पोरा' गीत ध्वज का वर्णन करता है। इस गीत में वल्लथोल अपनी इच्छा व्यक्त करते हैं कि हमारा ध्वज सदैव ऊँचा रहे। वल्लथोल एक देशभक्त थे और उन्होंने कई राष्ट्रवादी कविताएँ भी लिखीं। इनकी कविताओं ने हजारों भारतीयों को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया था।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 11_Hindi.indd 103 27-Nov-25 12:53:16 PM

गीत– चंबा कितनी दूर

पारंपरिक

भाषा– हिमाचली

माए नि मेरीए शिमले दी राहें,
चम्बा कितनी दूर हाय
माए नि मेरीए शिमले दी राहें,
चम्बा कितनी दूर
शिमले नि वसना, कसौली नि वसना
शिमले नि वसना, कसौली नि वसना,
चम्बा जाणा जरुर चम्बा जाणा जरुर
लाईयां मोहब्बतां दूर दराजे
लायां मोहब्बतां दूर दराजे
अखियों तो होया कसूर हाय
अखियों तो होया कसूर
चम्बा जाणा जरुर हाय चम्बा जाणा जरुर

गीत का सारांश— यह प्रकृति और प्रेम पर आधारित हिमाचल प्रदेश का पहाड़ी लोकगीत है।

© NCERT not to be republished

आकलन

अध्याय 11 — कण-कण में संगीत			
दक्षताएँ	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-4.1	तारता और लय जैसी शब्दावली का उपयोग करके संगीत का वर्णन करते हैं।		
C-2.2	विभिन्न गीतों के विषय और भावों को समझते हैं।		
C-2.1	एकल और समूह में विभिन्न गीतों का अभ्यास और प्रदर्शन करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 11_Hindi.indd 105 27-Nov-25 12:53:17 PM

अध्याय 12

ध्वनियाँ एवं वाद्ययंत्र

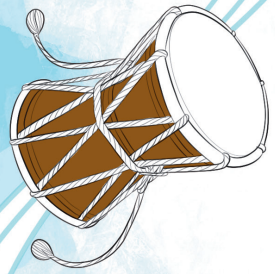

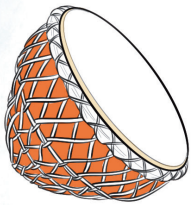

0538CH12

पिछले दो वर्षों में हमने विभिन्न वाद्ययंत्रों के विषय में जाना और सीखा है। आइए, अब हम इस यात्रा को आगे बढ़ाते हैं।

सितार, तबला, मृदंगम, तानपुरा... संभवत: आपने इनमें से कुछ वाद्ययंत्रों को देखा, सुना या इनके विषय में किसी को बात करते हुए सुना होगा! विभिन्न ध्वनियों के साथ संगीत की रचना करने और उसे अलंकृत करने में वाद्ययंत्र हमारी सहायता करते हैं। इनकी सहायता से कोई गीत या संगीत समृद्ध होता है। वाद्ययंत्रों के अनेक प्रकार हैं। कुछ साधारण तरह से बनाए एवं बजाए जाते हैं और कुछ संयुक्त एवं कलाकारी द्वारा बनाए जाते हैं।

जैसा कि हम पहले भी पढ़ चुके हैं कि वाद्ययंत्रों को मुख्यत: चार श्रेणियों में विभाजित किया गया है— तंत्री वाद्य (तत), सुषिर वाद्य (वायु), अवनद्ध वाद्य (ताल) और घन वाद्य (ठोस)।

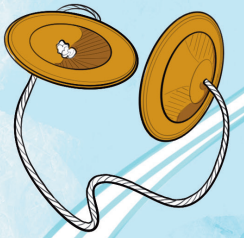

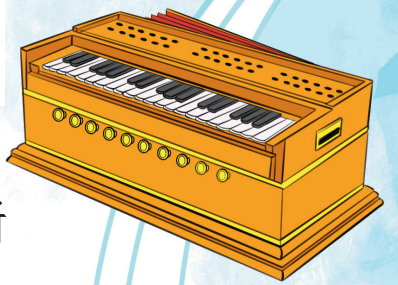

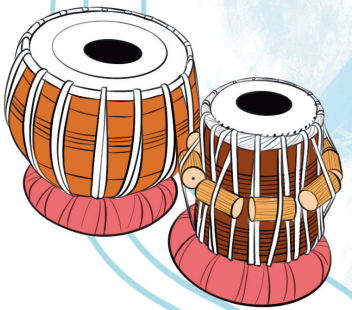

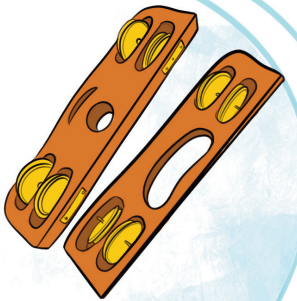

© NCERT not to be republished

गतिविधि 12.1 क

ध्वनि से वाद्ययंत्र को पहचानना

आपके शिक्षक आपको विभिन्न ध्वनियाँ समझाने के लिए वाद्ययंत्र बजाएँगे। आप इन्हें ध्यानपूर्वक सुनिए—

- आपके विचार से यह वाद्ययंत्र किस श्रेणी में आता है?
- क्या आप वाद्ययंत्र का नाम बता सकते हैं?
- क्या आप वाद्ययंत्र की संरचना, इसकी उत्पत्ति या किस प्रकार के संगीत में इसका उपयोग होता है, इसकी जानकारी दे सकते हैं?

शिक्षक-संकेत— विभिन्न वाद्ययंत्रों की ध्वनि को रिकॉर्डर, कंप्यूटर या मोबाइल के माध्यम से सुनाइए। विद्यार्थियों को वाद्ययंत्र के प्रकार (तंत्री, सुषिर, अवनद्ध या घन) तथा इनके नाम पहचानने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

गतिविधि 12.1 ख

चित्र देखकर वाद्ययंत्रों को पहचानना

दिए गए वाद्ययंत्रों के चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए।

- यह वाद्ययंत्र किस श्रेणी से संबंधित है?
- इस वाद्ययंत्र का नाम क्या है?
- क्या आप इस वाद्ययंत्र को देखकर अनुमान लगा सकते हैं कि इसे कैसे बजाया जाता है?
- इन वाद्ययंत्रों की ध्वनि को इंटरनेट पर ढूँढ़िए और इनकी ध्वनि से परिचित होने का प्रयास कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 12_Hindi.indd 107 15-Dec-25 12:27:10 PM

गतिविधि 12.2 वाद्ययंत्र का अलंकरण

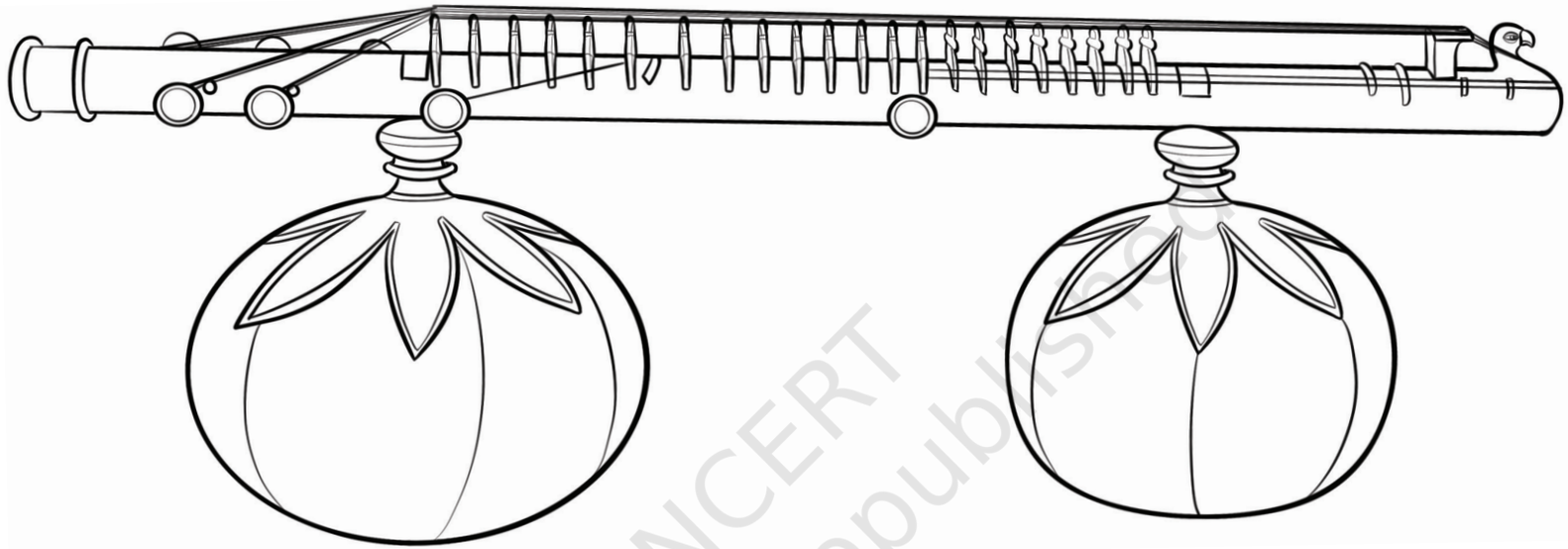

इस वाद्ययंत्र को रुद्रवीणा नाम से जाना जाता है। यह दो तुंबे वाला एक बड़ा तंत्री वाद्य है। इसका उपयोग हिंदुस्तानी संगीत में विशेष रूप से ध्रुपद नामक प्राचीन शैली को बजाने के लिए किया जाता है। इसके तारों को उँगलियों से दबाकर या छेड़कर इसे बजाया जाता है। इसकी ध्वनि बहुत गंभीर और गुंजायमान होती है। इस वाद्ययंत्र को प्रायः पारंपरिक या पुष्प की बनावट की नक्काशी का उपयोग कर अलंकृत किया जाता है।

उपर्युक्त रुद्रवीणा को एवं विशेष रूप से उसके दोनों तुंबे को अलंकृत करें। आप वाद्ययंत्र को अलंकृत करने के लिए दृश्य-कला में दी गई तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं।

अब रुद्रवीणा पर बजाया जाने वाला संगीत इंटरनेट से सुनिए। क्या उसे सुनकर आपको किसी अन्य वाद्ययंत्र की ध्वनि जैसी समानता या अंतर का अनुभव हुआ?

© NCERT not to be republished

संतूर की कहानी

संतूर एक भारतीय तंत्री वाद्य है। इसे एक जोड़ी लकड़ी की डंडियों (जिसे मिजराव कहा जाता है) द्वारा बजाया जाता है। यह वाद्ययंत्र चिनार या अखरोट की लकड़ी से बनाया जाता है। संतूर में सामान्यत: 100 तार होते हैं। इस वाद्ययंत्र को प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में शततंत्री वीणा कहा गया है। कश्मीर से उत्पन्न संतूर का उपयोग सूफी परंपरा के 'सूफियाना मौसीकि' में संगति के लिए किया जाता था। पंडित शिवकुमार शर्मा और पंडित भजन सोपोरी जैसे सुप्रसिद्ध संतूर वादकों के योगदान के कारण संतूर को हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में स्थान मिला। यह वाद्ययंत्र शांति और स्थिरता का अनुभव कराता है, साथ ही कश्मीर घाटी की मधुर ध्वनियों का स्मरण भी कराता है।

प्रश्नोत्तरी समय— संतूर का चित्र देखिए और बताइए कि इसका ज्यामितीय आकार क्या है?

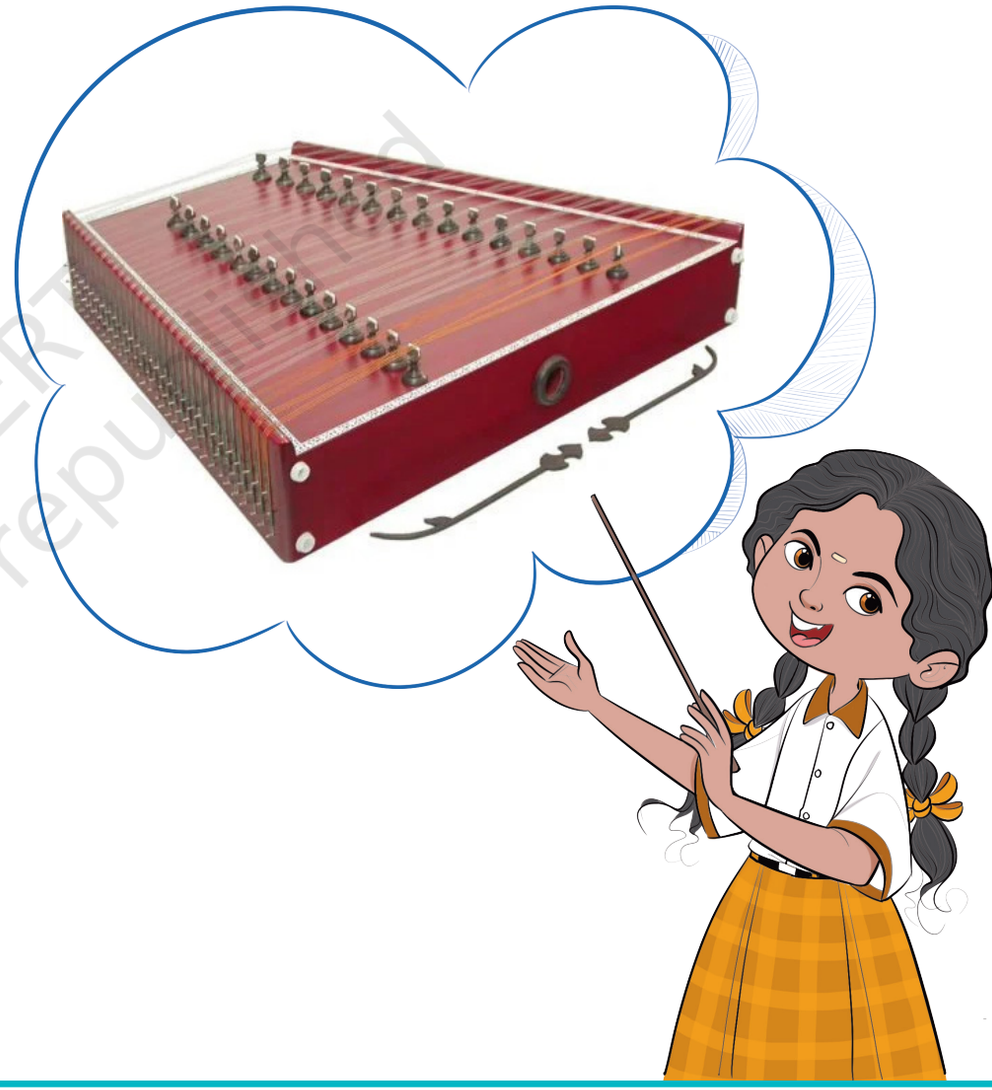

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 12_Hindi.indd 109 15-Dec-25 12:27:10 PM

एक-तंत्री वाद्य

इकतारा एक-तंत्री वाद्य है। इसका उपयोग आधार स्वर उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। कभी-कभी धुनें बजाने के लिए भी इसे उपयोग में लाया जाता है।

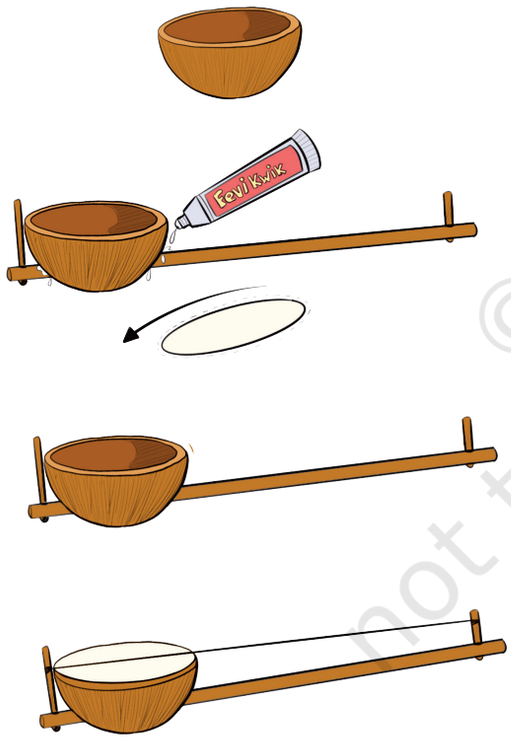

गतिविधि 12.3 इकतारा बनाइए

सामग्री— नारियल का खोल, 12 इंच की पतली बाँस की छड़ी, लकड़ी के दो छोटे टुकड़े (खूँटी), 15 इंच का पतला ताँबे का तार, श्वेत कागज, टेप और गोंद।

- एक नारियल का आधा खोल लीजिए।
- एक छड़ी का उपयोग कीजिए और गोंद की सहायता से उसे खोल के एक छोर पर लगाइए और एक अन्य छोटे टुकड़े को दूसरे छोर पर लगाइए।
- खोल के मुँह को कागज से ढकिए और उसे भली-भाँति चिपकाइए।
- ऊपर और नीचे की ओर लकड़ी की खूँटियाँ लगाइए।
- ताँबे के तार को खूँटी के दोनों सिरों पर बाँधिए और खींचिए जिससे वह कस जाए। यह ध्यान रखें कि तार और खोल के बीच थोड़ी जगह रहे ताकि कंपन हो सके।
- तार की कसावट और स्थिति को तब तक समायोजित कीजिए जब तक कि उसे बजाने पर अच्छी ध्वनि प्राप्त न हो जाए।
- आपका इकतारा तैयार है। अब इसकी लंबी डंडी और नारियल के खोल को अलंकृत कीजिए या रंग भरिए।

© NCERT not to be republished

गीत– बादोल बाउल बाजाय रे ऐकतारा
भाषा– बंगाली

बादोल बाउल बाजाय रे ऐकतारा
शारा बेला धोरे झोरोंझौरो झौरे धारा
जामेर बोने धानेर खेते आपोन ताने आपनी मेटे
नेचे नेचे होलो शारा
घौनो जौतो घौटा घौय आंधारो आकाश माझे'
पाताय पाताय टुपुर टुपुर नूपुर मोधुर बाजे
घौर- छाड़ानो आकूल शूरे उदाश होये बैड़ाए घूरे
पूबे हावा गृहोहारा

गीत का सारांश— इस गीत में इकतारा बजाने का और प्रकृति का वर्णन किया गया है।

पक्षी की सीटी

संभवत: आपने पक्षी के आकार का यह साधारण वाद्ययंत्र देखा होगा। यह मिट्टी से बनी एक चिड़िया है जिसे फूँक मारकर बजाने पर सीटी जैसी आवाज आती है। मिट्टी को आग में पकाकर इसे बनाया जाता है। यदि आप सीटी में पानी भरकर उसमें फूँक मारेंगे तो यह यंत्र पक्षी के चहचहाने जैसी आवाज उत्पन्न करेगा। सीटी बजाती हुई यह चिड़िया भारत के अनेक राज्यों में पायी जाती है और यह प्राचीन वाद्ययंत्रों में से एक है।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 12_Hindi.indd 111 15-Dec-25 12:27:11 PM

आकलन

अध्याय 12 — ध्वनियाँ एवं वाद्ययंत्र			
दक्षताएँ	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-3.1	किसी वाद्ययंत्र की आकृति बनाने में सक्षम हैं।		
C-4.1	ऐसे वाद्ययंत्र के विषय में सीखते हैं जिनकी ध्वनियाँ प्रकृति में सुनी जाने वाली ध्वनियों जैसी होती हैं।		
C-4.2	सामान्य भारतीय वाद्ययंत्रों से परिचित हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

अध्याय 13

स्वर-संरचना

0538CH13

खेल के मैदान में चारों ओर दौड़ लगाएँ या ऊपर और नीचे कूदें और फिर तुरंत एक गीत गाने का प्रयास करें या फिर एक स्वर पर स्थिर रहें। यह कठिन है ना? ऐसा इसलिए है क्योंकि गाने के लिए हमारी श्वास सुचारू और नियमित होनी चाहिए। हमारी श्वास एक गाड़ी के इंजन की तरह है जो उसे ऊर्जा और शक्ति प्रदान करती है।

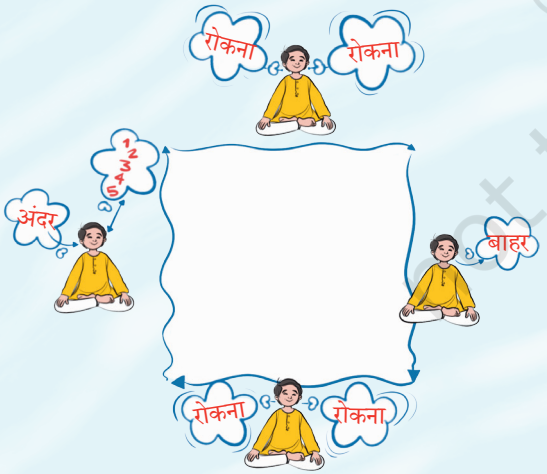

गतिविधि 13.1

प्राणायाम (श्वास लेने की विधि)

एक शांत स्थान पर बैठें। अब धीरे से 1, 2, 3, 4 तक गिनते हुए श्वास लीजिए। अब अगली चार गिनती तक अपनी श्वास रोके रखें। फिर चार गिनते हुए धीरे से श्वास छोड़ें। फिर चार गिनते हुए अपनी श्वास रोके रखें। इस चक्र को लगभग 4–5 बार दोहराएँ।

इसे प्राणायाम (बॉक्स ब्रीदिंग) कहा जाता है क्योंकि श्वास चक्र के प्रत्येक चार भाग एकसमान हैं। यह व्यायाम न केवल गायन के लिए आपकी श्वास को नियंत्रित करता है अपितु जब आप क्रोधित या उत्तेजित होते हैं तब आपको शांत रहने में भी सहायता करता है।

© NCERT not to be republished

ध्वनि क्या है?

हम अपने चारों ओर अनेक प्रकार की ध्वनियाँ सुनते हैं। यह हमारे मित्रों के वार्तालाप करने की ध्वनि, पक्षियों की चहचहाहट, गाड़ियों की ध्वनि, बस, रेलगाड़ी, हवाई जहाज की ध्वनि, वाद्ययंत्र की मधुर ध्वनि आदि होती है। ध्वनियाँ हमें अपने आस-पास हो रही अनेक घटनाओं के विषय में जागरूक करती हैं।

नाद क्या है?

नाद संगीतात्मक ध्वनि है। जब हम यातायात का शोर या भोंपू की तीव्र ध्वनि सुनते हैं तो हमें यह संगीतमयी नहीं लगती। यद्यपि जब हम वाद्ययंत्र से मधुर संगीत सुनते हैं तो इसमें कंपन के नियमित और स्थिर स्वरूप के साथ एक सुखद ध्वनि उत्पन्न होती है जिसे संगीत में नाद कहा जाता है।

क्या आप जानते हैं?

भारतीय शास्त्रीय संगीत के स्वर *सामवेद* के आनुष्ठानिक गायन से विकसित हुए हैं। प्रारंभ में वेदों का तीन स्वरों के साथ गायन किया जाता था अर्थात उदात्त (सामान्य या मध्यम स्वर), अनुदात्त (निम्न या मंद्र स्वर) और स्वरित (उच्च या तीव्र स्वर)। ये धीरे-धीरे सात स्वरों (सप्त स्वर) के रूप में विकसित हुए जिनका उपयोग हम संगीत में करते हैं।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 13.2 सरगम या अलंकार

गायन से पूर्व कंठ अभ्यास के साथ-साथ सरगम या अलंकार का भी अभ्यास करना चाहिए। यह हमारे स्वर के उतार-चढ़ाव को उत्तम बनाने में भी सहायक होता है। नीचे उदाहरणार्थ आपके लिए कुछ सरगम दी गई हैं, जिनका आप अभ्यास कर सकते हैं।

1. सागरेसा, रेमगरे, गपमग, मधपम, पनीधप, धसांनीध, नीरेंसानी, सांगरेंसां
   सांधनीसां, नीपधनी, – – – –, पगमप, – – – –,गसारेग, – – – –, साधनीसा
2. सामगरे, रेपमग, – – – –, मनीधप, पसंनीध, – – – – नीगंरेंसां
   सांपधनी, नीमपध, धगमप, – – – –, मसारेग, गनीसारे, – – – –
3. सारेसाग, रेगरेम, – – – –, मपमध, पधपनी, – – – –
   – – – –, नीधनीप, – – – –, पमपग, – – – –, गरेगसा
4. रेसा, गरे, मग, – –, धप, – –, सांनी, – –
   नीसां, – –, पध, – – गम, – –, सारे, – –

क्या आप जानते हैं?

विभिन्न कलाओं में अनेक तरह के प्रतिरूप पाए जाते हैं। जैसे दृश्य-कला में विभिन्न तरह की आकृतियाँ जो कपड़े, दीवार, कागज इत्यादि में देखने को मिलती हैं। रंगोली अधिकतर फर्श और दीवारों पर बनाई जाती है। इसमें अनेक तरह के बिंदु, रेखाएँ एवं घुमावदार आकृतियाँ देखने को मिलती हैं।

रंगोली एक पारंपरिक कला है जिसे बिंदुओं, रेखाओं और वक्रों द्वारा बनाया जाता है। इसका उपयोग घरों में फर्श तथा दीवारों को सजाने के लिए किया जाता है।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 13_Hindi.indd 115 15-Dec-25 12:29:20 PM

प्रत्येक वर्ष हम भारतीय शास्त्रीय संगीत की दो शैलियाँ — कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत के विषय में सीख रहे हैं।

कर्नाटक संगीत

आइए, हम दो गीतम सीखें जो कर्नाटक संगीत की सरल रचनाएँ हैं।

वर वीणा

राग— मोहना

ताल— रूपक

आरोहणम्

सा रे$_2$ ग$_3$ प ध$_2$ सां

अवरोहणम्

सां ध$_2$ प ग$_3$ रे$_2$ सा

ग	ग। प	,	प	,॥ ध	प। सां	,	सां	,॥
व	र। वी	–	णा	–॥ मृ	दु। पा	–	णी	–॥
रें	सां। ध	ध	प	,॥ ध	प। ग	ग	रे	,॥
व	न। रू	ह	लो	–॥ च	न। रा	–	णी	–॥
ग	प। ध	सां	ध	,॥ ध	प। ग	ग	रे	,॥
सु	रू। चि	र	बम्	–॥ भै	र। व	–	णी	–॥
ग	ग। ध	प	ग	,॥ प	ग। ग	रे	सा	,॥
सु	र। नु	त	कल	–॥ या	–। –	–	णी	–॥
ग	ग। ग	ग	रे	ग॥ प	ग। प	,	प	,॥
नि	रु। प	म	शु	भ॥ गु	ण। लो	–	ला	–॥
ग	ग। ध	प	ध	,॥ ध	प। सां	,	सां	,॥
नि	र। त	ज	या	–॥ प्र	द। शी	–	ला	–॥
ध	गं। रें	रें	सां	सां॥ ध	सां। ध	ध	ध	प॥
व	र। दा	–	प्रि	य॥ रं	ग। ना	–	य	कि॥
ग	प। ध	सां	ध	प॥ ध	प। ग	ग	रे	सां॥
वां	–। छि	त	फ	ल॥ दा	–। –	–	य	कि॥
सा	रे। ग	,	ग	,॥ ग	रे। प	ग	रे	,॥
स	र। सि	–	जा	–॥ स	न। ज	न	नी	–॥
सा	रे। सा	ग	रे	सा॥				
ज	य। ज	य	ज	या॥				

© NCERT not to be republished

पदुमनाभ

रागम्— मल्लहरि

तालम्— तिस्र जाति त्रिपुट ताल

रचनाकार— पुरन्दर दास

आरोहणम्

सा रे$_1$ म$_1$ प ध$_1$ सां

अवरोहणम्

सां ध$_1$ प म$_3$ ग$_3$ रे$_1$ सा

पल्लवी

रे	सा	ध़	।	सा	–	।	सा	–	॥	म	ग	रे	।	म	म	।	प	–	॥
प	द्	मा	।	न	–	।	भ	–	॥	प	र	म	।	पु	रू	।	षा	–	॥
सा	ध	ध	।	ध	प	।	म	प	॥	ध	ध	प	।	म	ग	।	रे	सा	॥
प	रं	–	।	ज्यो	–	।	–	ति	॥	स्व	रू	–	।	पा	–	।	–	–	॥
रे	सा	ध़	।	सा	–	।	सा	–	॥	म	ग	रे	।	म	म	।	प	–	॥
वि	दु	र	।	वं	–	।	ध्या	–	॥	वि	म	ल	।	च	रि	।	त	–	॥
सा	ध	ध	।	ध	प	।	म	प	॥	ध	ध	प	।	म	ग	।	रे	सा	॥
वि	हं	–	।	गा	–	।	–	दि	॥	रो	–	ह	।	णा	–	।	–	–	॥

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 13_Hindi.indd 117 15-Dec-25 12:29:21 PM

अनुपल्लवी

प	म	प	।	ध	सां	।	ध	सां	॥	रे	सां	धं	।	ध	सां	।	ध	प	॥
उ	द	धि	।	नि	वा	।	–	स	॥	उ	र	ग	।	स	य	।	–	न	॥
ध	प	ध	।	प	–	।	प	म	॥	रे	म	म	।	प	–	।	प	–	॥
उ	–	न्न	।	तो	–	।	न्न	त	॥	म	हि	–	।	मा	–	।	–	–	॥
ध	ध	प	।	प	–	।	प	म	॥	रे	–	म	।	म	ग	।	रे	सा	॥
य	दु	कु	।	लो	–	।	त्थ	म	॥	य	–	ज्ञ	।	र	–	।	क्ष	का	॥
सा	–	सा	।	ध	ध	।	ध	प	॥	प	–	प	।	म	ग	।	रे	सा	॥
आ	–	ज्ञ	।	शि	–	।	क्ष	क	॥	रा	–	म	।	ना	–	।	–	म	॥

© NCERT not to be republished

चरणम्

ध	सां	–	।	ध	प	।	म	प	॥	ध	ध	प	।	म	ग	।	रे	सा	॥
वि	भी	–	।	ष	ण	।	पा	–	॥	ल	का	–	।	न	मो	।	न	मो	॥
ध	सां	–	।	ध	प	।	म	प	॥	ध	ध	प	।	म	ग	।	रे	सा	॥
इ	भ	–	।	व	र	।	दा	–	॥	य	क	–	।	न	मो	।	न	मो	॥
प	म	प	।	ध	सा	।	ध	सां	॥	रें	सां	ध	।	ध	सां	।	ध	प	॥
शु	भ	–	।	प्र	द	।	सु	म	॥	नो	–	र	।	द	–	।	–	यसु	॥
ध	ध	प	।	प	–	।	प	म	॥	रे	–	म	।	प	–	।	–	–	॥
रे	–	द्र	।	म	–	।	नो	–	॥	रं	–	ज	।	ना	–	।	–	–	॥
ध	ध	प	।	प	–	।	प	म	॥	रे	–	म	।	म	ग	।	रे	सा	॥
अ	भि	–	।	ना	–	।	व	पु	॥	रं	–	द	।	र	–	।	–	वि	॥
सा	–	सा	।	ध	ध	।	ध	प	॥	प	–	प	।	म	ग	।	रे	सा	॥
ठ	–	ल	।	भल	–	।	ल	रे	॥	रा	–	म	।	ना	–	।	–	म	॥

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 13_Hindi.indd 119 15-Dec-25 12:29:21 PM

हिंदुस्तानी संगीत

आइए बंदिश के माध्यम से राग खमाज सीखते हैं।

बंदिश

नमन करूं मैं सद गुरु चरणा
सब दुःख हरना भव निस्तरणा

शुद्ध भाव धर अंत करना
सुर नर किन्नर वन्दित चरणा

राग खमाज

आरोह — सा ग म ध नि सां
अवरोह — सां नि ध प म ग रे सा
पकड़ — नि ध, म प ध, म ग

© NCERT not to be republished

स्थायी															
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								सां न	सां म	नी न	नी क	ध रू	प ऽ	म मैं	ग ऽ
ग	म	प	ध	नी	नी	सां	सां	सां	सां	गं	मं	गं	रें	नी	सां
स	द	गु	रू	च	र	णा	ऽ	स	ब	दु	ख	ह	र	ना	ऽ
नी	नी	सां	सां	नी	सां	नी	ध								
भ	व	नि	स	त	र	ना	ऽ								

अंतरा															
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
								ग शु	म ऽ	नी द्ध	ध भा	नी ऽ	नी व	सां ध्र	सां र
नी	नी	सां	सां	नी	सां	नी	ध	सां	सां	गं	मं	गं	रें	सांनी	सां
अं	ऽ	त	ऽ	क	र	णा	ऽ	सु	र	न	र	कि	ऽ	न्न	र
नी	नी	सां	सां	नी	सां	नी	ध								
वं	न	दि	त	च	र	णा	ऽ								

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 13_Hindi.indd 121 15-Dec-25 12:29:22 PM

गतिविधि 13.3 अभ्यास पत्रिका

- एक अभ्यास पत्रिका बनाइए। इसमें तिथि, समय, अवधि और आपने क्या अभ्यास किया आदि का उल्लेख कीजिए। स्वर-अभ्यास, नवीन रचनाएँ और अन्य अभ्यासों के लिए अलग-अलग समय रखें। इस पत्रिका में यह भी लिखिए कि अभ्यास करके आपको कैसा अनुभव हुआ— क्या आपने कुछ नया सीखा? क्या कुछ पहले से सरल हो गया? क्या आपने कुछ नया प्रयास किया?
- अभ्यास पत्रिका को नियमित लिखने से यह समझना सरल हो जाता है कि आपने कितना सुधार किया है। यदि आपको अभ्यास पत्रिका लाभदायक लगती है तो अन्य विषयों के लिए भी पत्रिका बना सकते हैं।

गतिविधि 13.4 शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम में सहभागिता

अपने अभिभावक या किसी शिक्षक के साथ किसी शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम में जाएँ। यदि आप व्यक्तिगत रूप से इसमें सहभागिता नहीं कर सकते हैं तो संगीत कार्यक्रम का पूरा वीडियो ऑनलाइन देखिए।

- मंच और कलाकारों का एक रेखाचित्र बनाइए।
- मंच पर कौन-कौन से वाद्ययंत्र बजाए जा रहे हैं?
- जिन रचनाओं को आपने सुना, उनके नाम और अन्य जानकारी, जैसे— राग या ताल आदि के विषय में लिखिए।
- मंच पर कलाकारों के बीच तथा कलाकारों और दर्शकों के बीच बातचीत का अवलोकन कीजिए और इसे लिखिए।

किसी भी कला के लिए नियमित अभ्यास आवश्यक है। इसे भारतीय शास्त्रीय संगीत में रियाज, अभ्यास या साधना कहा जाता है। बहुत-से सुविख्यात कलाकारों ने बचपन से ही प्रत्येक दिन 6–8 घंटे से अधिक अभ्यास किया है।

© NCERT not to be republished

आकलन

अध्याय 13 — स्वर-संरचना			
दक्षताएँ	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-3.1	गायन के लिए श्वास लेने की प्रक्रिया को सीखते हैं।		
C-2.2	भारतीय संगीत के कुछ स्वरों की संरचना सीखते हैं।		
C-3.2	निर्धारित अनुसूची के अनुसार अभ्यास और पूर्वाभ्यास करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 13_Hindi.indd 123 15-Dec-25 12:29:22 PM

अध्याय 14

विचार और प्रेरणा

0538CH14

शिशुर्वेत्ति पशुर्वेत्ति वेत्ति गानरसं फणिः।
एक बच्चा, एक जानवर, एक साँप, सभी संगीत पर प्रतिक्रिया दे सकते हैं और उसका आनंद ले सकते हैं।

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि व्यक्ति संगीत सुनते समय क्या करते हैं? कभी-कभी संगीत के साथ हम अपने पैर थपथपाते हैं या लय के साथ सिर हिलाते हैं या फिर हम धुन के अनुसार झूमते हैं अथवा अपनी उंगलियाँ हिलाते हैं। ये सभी ऐसे प्रकार हैं जिनसे हम स्वाभाविक रूप से संगीत पर प्रतिक्रिया करते हैं।

चर्चा—

- आप संगीत सुनना कब पसंद करते हैं?
- आपका मनपसंद गीत या संगीत कौन-सा है?
- इसे सुनकर आप कैसा अनुभव करते हैं?

गतिविधि 14.1 संगीत पर प्रतिक्रिया

- कक्षा में आराम से खड़े होने के लिए एक स्थान ढूँढ़िए। सभी विद्यार्थी एक-दूसरे से उचित दूरी बनाकर अपने नेत्र बंद करें।
- शिक्षक संगीत की धुन बजाएँगे।
- इस धुन को ध्यान से सुनें और अपने शरीर को इस पर स्वाभाविक रूप से प्रतिक्रिया करने दें। क्या आप अपने हाथों या सिर को हिलाना चाहते हैं? क्या आपको अपनी उंगलियाँ हिलाने या इधर-उधर घूमने का मन कर रहा है? यह सोचें कि आपको कोई भी नहीं देख रहा है, स्वतंत्र रूप से कक्षा के आयतन को जाँचकर कक्षा में इधर-उधर घूम सकते हैं।
- संगीत पर प्रतिक्रिया देने के अनुभव का आनंद लीजिए।

जब संगीत समाप्त हो जाए तो अपनी आँखें खोलें। क्या आपको अपने शरीर या भावनाओं में किसी प्रकार के परिवर्तन का अनुभव हुआ? चर्चा कीजिए।

शिक्षक-संकेत— इस गतिविधि के लिए लगभग 3 से 4 मिनट की संगीत की एक धुन चुनिए।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 14.2 संगीत का चयन

नीचे *पंचतंत्र* की एक कहानी दी गई है।

बंदर और मगरमच्छ

एक चतुर बंदर नदी के किनारे फल के वृक्ष पर प्रसन्नतापूर्वक रहता था। एक दिन उसने एक थके हुए मगरमच्छ को देखा और उसे मीठे फल दिए। वे दोनों मित्र बन गए। मगरमच्छ फलों को घर ले गया और उसकी पत्नी को फलों का स्वाद अच्छा लगा और उसे ईर्ष्या होने लगी। उसने कहा, "अगर फल इतने स्वादिष्ट हैं तो बंदर का हृदय तो और भी स्वादिष्ट होगा।" मगरमच्छ बंदर का हृदय नहीं लाना चाहता था परंतु अंत में वह सहमत हो गया।

अगले दिन उसने बंदर को नदी की सैर कराने के लिए आमंत्रित किया। नदी के बीच पहुँचने पर मगरमच्छ ने कहा कि उसकी पत्नी बंदर का हृदय खाना चाहती है। चतुर बंदर ने कहा, "अरे! मैं अपना हृदय तो पेड़ पर ही छोड़ आया हूँ, चलो वापस चलते हैं।"

मगरमच्छ ने उस पर विश्वास किया और वापस लौट गया। जैसे ही वे किनारे पर पहुँचे, बंदर पेड़ पर कूद गया और बोला, "तुमने मुझे धोखा दिया। कोई भी अपना हृदय पीछे नहीं छोड़ता। मैं तुम पर फिर से भरोसा नहीं करूँगा।" मगरमच्छ तैरकर चला गया और बंदर सुरक्षित हो गया और आनंद से रहने लगा।

- सबसे पहले कहानी पढ़िए और उसमें आने वाली विभिन्न भावनाओं, जैसे— आश्चर्य, भय, प्रसन्नता, दु:ख आदि को पहचानिए।
- अब कहानी के प्रत्येक भाग पर विचार कीजिए कि किस प्रकार के संगीत का उपयोग कर इस कहानी को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।
- संगीत के सभी भागों को एकत्रित कर कहानी को कक्षा के एक समूह में प्रस्तुत कीजिए तथा कहानी के विशेष बिंदुओं और रोमांचक क्षणों पर संगीत बजाइए।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 14_Hindi.indd 125 27-Nov-25 10:34:50 AM

गतिविधि 14.3 संगीत विश्लेषण

अब तक हम यह समझ गए हैं कि संगीत भिन्न-भिन्न भावनाएँ उत्पन्न करता है। विभिन्न प्रकार के संगीत को बार-बार सुनकर यह समझने का प्रयास कीजिए कि उनमें क्या समानताएँ और भिन्नताएँ हैं।

आगे अलग-अलग भाषाओं में दो गीत दिए गए हैं। इन्हें सुनिए और सीखिए।

गीत– आकाश गंगा
भाषा– गुजराती

आकाश गंगा सूर्य चंद्र तारे
संध्या उषारा कोई ना ना थी
कोनी भूमि कोनी नाधि कोनी सागर धारा
भेद केवल शब्द आमारा तमारा
एज हास्य एज रुदन आशा ए निराशा
एज मानव उर्मी फान मित्र भाषा
मेघधनु अंदर न होय कदी जांगो
सुंदरता काज वन्या विशद रंगो

अर्थ— आकाशगंगा, सूर्य, चंद्रमा और तारे, संध्या और भोर ये किसी एक के नहीं हैं। किसकी धरती, किसकी नदियाँ, किसका सागर और महासागर? ये केवल 'हमारे' और 'तुम्हारे' शब्दों से बाँटें गए हैं।

© NCERT not to be republished

गाना– कोडगाना कोली नुंगीटा
भाषा– कन्नड़
कवि– शिशुनाला शरीफा

कोडगाना कोली नुंगिथा
नोदव्वा तांगी
कोडागन्ना कोली नुंगीथा

आदु आनेया नुंगी
गोडे सुन्नवा नुंगी
आदालु बंदा पातरदावला
मददलि नुंगीथा तंगी

गुड्डा गवियान्नु नुंगी
गवियु इरुवेया नुंगी
गोविंदा गुरुविना पादा
नन्नाने नुंगिथा तांगी

- क्या आपको दोनों गीत एकसमान अथवा भिन्न लगे?
- किस गीत की गति अधिक थी?
- किस गीत में अधिक अवनद्ध (ताल) वाद्ययंत्र का प्रयोग हुआ?
- प्रत्येक गीत में किस प्रकार के वाद्ययंत्र का प्रयोग हुआ?

आपने इन सभी प्रश्नों के उत्तर दे दिए हैं तो अब आप चर्चा कर सकते हैं कि गीत को कौन-से तत्व विशेष अनुभूति देते हैं?

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 14_Hindi.indd 127 27-Nov-25 10:34:53 AM

प्रेरक संगीतकार

संगीतकार हमें विभिन्न रूपों से प्रेरित करते हैं। उनमें से कुछ संगीतकारों ने कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए अपनी रुचि का अनुसरण किया। वहीं कुछ संगीतकारों ने कठिन परिश्रम से उत्कृष्टता प्राप्त की।

डी. के. पट्टम्मल

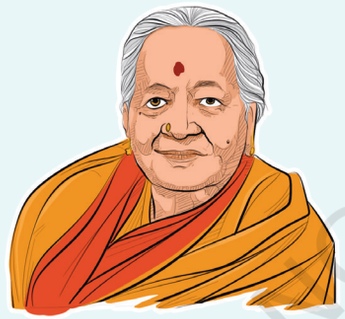

डी. के. पट्टम्मल एक प्रख्यात कर्नाटक गायिका थीं जिनका जन्म 1919 में हुआ था। उन्होंने भारत में स्वतंत्रता संग्राम के समय देशभक्ति का संदेश प्रसारित करने के लिए संगीत का उपयोग किया। बहुत-सी फिल्मों में उन्होंने अनेक देशभक्ति गीत गाए। उन्हें भारत की स्वतंत्रता के उपलक्ष्य में 15 अगस्त 1947 को आकाशवाणी में गाने के लिए आमंत्रित किया गया था।

संगीत की जटिल शैली, 'रागम तानम पल्लवी' को मंच पर गाने वाली वे प्रथम महिला थीं।

पूर्ण दास बाउल

पूर्ण दास बाउल का जन्म 1933 में हुआ था और वे आठवीं पीढ़ी के बाउल संगीतकार हैं। बाउल बंगाल का एक अनूठा समूह है जो यह मानता है कि संगीत आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का मुख्य रूप है। उन्होंने 168 से अधिक देशों में प्रस्तुतियाँ दीं और वैश्विक दर्शकों को बाउल दर्शन और संगीत से परिचित कराया।

पूर्ण दास बाउल ने अपने सामुदायिक कार्य को विस्तारित करते हुए बच्चों के संगठनों और चिकित्सालयों में प्रस्तुतिकरण को सम्मिलित किया है तथा पिछड़े वर्ग को सांत्वना और प्रेरणा प्रदान करने के लिए संगीत का उपयोग किया है।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 14.4

मेरा प्रेरणीय संगीतकार

हमारी संगीत की यात्रा में महान संगीतकारों की कहानियाँ मार्गदर्शक और प्रेरणादायक हो सकती हैं।

- अपनी पसंद के किसी संगीतकार का चयन कीजिए।
- उनके जीवन, संगीत शैली और उपलब्धियों के विषय में अधिक से अधिक जानकारियाँ एकत्रित कीजिए।
- उनके जीवन और योगदान पर आधारित एक संक्षिप्त भाषण तैयार कीजिए तथा उसे कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।
- वर्णन कीजिए कि संगीतकार की कौन-सी बातें आपको प्रेरित करती हैं।

मेरा प्रेरणीय संगीतकार

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 14_Hindi.indd 129 27-Nov-25 10:34:54 AM

आकलन

अध्याय 14 – विचार और प्रेरणा			
दक्षताएँ	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-4.2	भारत के महान संगीतकारों के विषय में जानते हैं।		
C-3.2	विभिन्न विकल्पों में संगीत का चयन सूझबूझ से करते हैं।		
C-4.2	संगीत पर स्वतंत्रता के साथ गति द्वारा प्रतिक्रिया करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

योगात्मक आकलन

संगीत	योगात्मक आकलन के उदाहरण	योगात्मक आकलन के लिए मापदंड
व्यक्तिगत	विद्यार्थी को दिए गए विषय पर एक गीत का चयन और प्रस्तुतिकरण करने के लिए कहा जाता है। विद्यार्थियों से एक तालिका प्रस्तुत करने को कहा जाता है जो दिन के विभिन्न प्रहरों में उनके आस-पास के वातावरण में सुने जाने वाले संगीत को दर्शाती हो। विद्यार्थियों को आरोह और अवरोह के साथ ताल का उपयोग करते हुए एक सरल शास्त्रीय रचना प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है।	उपयुक्त गीत का चयन करने और सुर एवं ताल में प्रवाहपूर्ण गाने की क्षमता प्रदर्शित करते हैं। अवलोकन और सुनने का कौशल, ध्वनि और संगीत के मध्य अंतर करने की क्षमता और तालिका प्रस्तुति में रचनात्मकता दिखाते हैं। राग को सही स्वरों एवं ताल में गाने की क्षमता प्रदर्शित करते हैं।
सामूहिक	विद्यार्थियों से कहा जाता है कि वे समूहों में कार्य करें और किसी दी गई कहानी को संगीत के माध्यम से अलंकृत करने के लिए उपयुक्त संगीत चुनें।	रचनात्मक विचार, सामूहिक कार्य और उत्साह दिखाते हैं।

© NCERT not to be republished

Part-3 Chapter 14_Hindi.indd 131 27-Nov-25 10:34:54 AM

नृत्य

प्रिय शिक्षक,

1. कृपया विद्यार्थियों के लिए विशाल एवं हवादार स्थान उपलब्ध कराएँ।
2. शिक्षणशास्त्र निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित है—
   - क्षेत्रीय प्रथाओं के अनुसार विभिन्न नृत्य सीखना।
   - देश के अन्य क्षेत्रों के नृत्यों के विषय में सीखना।
   - भावनाओं को व्यक्त करना और उन्हें व्यक्त करने में सहज होना सीखना।
   - अंग संचालन से गति और भावना को समझना।
   - संचालन के अभ्यास में सामंजस्य के महत्त्व को समझना।
   - नृत्य के विभिन्न तत्वों को एक साथ लाने के लिए रचनात्मकता का प्रयोग करना।
3. आकलन के लिए आगे दिए गए पाठ्यचर्या लक्ष्यों, दक्षताओं और अधिगम प्रतिफलों पर ध्यान दीजिए।
4. विद्यार्थियों के प्रयासों, नवीन अवधारणाएँ सीखने के प्रति उनके दृष्टिकोण, भावनाओं और अभिव्यक्तियों के साथ सहानुभूति प्रदर्शित करने, साझा करने और सहयोग करने की इच्छा पर ध्यान केंद्रित कीजिए।

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 15_Hindi.indd 133 07-Jan-26 2:18:59 PM

पाठ्यचर्या लक्ष्य और दक्षताएँ निम्नलिखित हैं।

CG-1 मानवीय अनुभवों को समझने के लिए आत्मविश्वास विकसित करते हैं और कला के माध्यम से उसे व्यक्त करते हैं।

C-1.1 जिन नृत्यों और गतियों से वे परिचित हैं, उनका अभ्यास और प्रदर्शन करने के लिए उत्साह प्रकट करते हैं।

C-1.2 समूह में कार्य करते हुए विचारों और प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करते हैं।

CG-2 कला में स्वतंत्र रूप से कल्पना और रचनात्मकता को व्यक्त करते हैं।

C-2.1 दैनिक क्रियाकलापों और व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित नृत्यों और गतियों के क्रम बनाते हैं और उनका अभ्यास करते हैं।

C-2.2 कक्षा में सिखाए गए विविध नृत्यों और गति शैलियों, तालों, मुद्राओं, प्रसंगों और अभिव्यक्तियों में तुलना एवं अंतर करते हैं।

CG-3 कला में मूल प्रक्रियाओं, सामग्रियों और तकनीकों को समझने का प्रयास करते हैं।

C-3.1 नृत्य एवं गति में प्रयुक्त पद गति, वाद्ययंत्रों, वेशभूषा एवं व्यवस्थाओं को सीखते हुए रुचि संवर्धित करते हैं।

C-3.2 प्रस्तुति के लिए नृत्य एवं गतियों के क्रम को चुनते समय अपने विचार साझा करते हैं और पूर्वाभ्यास में सहभागिता करते हैं।

CG-4 अपने परिवेश में सौंदर्य को जानने-समझने का प्रयास करते हैं और स्थानीय कलारूपों और सांस्कृतिक परंपराओं में रुचि विकसित करते हैं।

C-4.1 नृत्य और गतियों के तत्वों के स्वरूप और कलात्मक गुणों को पहचानकर वर्णन करते हैं।

C-4.2 स्थानीय कलारूपों और संस्कृति के प्रति जिज्ञासा प्रकट करते हैं।

** CG से तात्पर्य पाठ्यचर्या लक्ष्य और C से तात्पर्य दक्षताएँ हैं।*

© NCERT not to be republished

अध्याय 15

नृत्य के विभिन्न रंगों में मेरी दिनचर्या

0538CH15

आशा है कि नृत्य अब आपके जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया होगा और आपको प्रत्येक दिन कुछ नया सीखने में आनंद आ रहा होगा। आपने पिछली कक्षाओं में अनेक विधियों से नृत्य सीखा है, जहाँ आपने नृत्य की गतियों को दैनिक जीवन की गतिविधियों के साथ जोड़कर देखा।

शिक्षक-संकेत— विद्यार्थियों के नृत्य करने के लिए कोई भारतीय वाद्य संगीत बजाइए।

गतिविधि 15.1 आइए नृत्य करें

छुट्टियों के बाद आप वापिस आ रहे हैं तो चलिए एक स्वागत नृत्य की परिकल्पना हो जाए। ऐसा संगीत या गाना बजाइए, जो आपकी रुचि का हो और आप सभी कक्षा के साथियों के साथ उस पर नृत्य कर सकें। इस नृत्य में आप पिछली कक्षाओं में सीखे गए उपयुक्त पद संचालन, हस्त-मुद्राएँ (हस्तक) और गतियों को सम्मिलित कीजिए।

इस गतिविधि को पूर्ण करने के बाद आप कैसा अनुभव कर रहे हैं? क्या यह उससे भिन्न है जो आप प्राय: करते हैं?

© NCERT not to be republished

गतिशीलता और स्थिरता

दैनिक क्रियाकलापों में कुछ ऐसी गतिविधियाँ होती हैं जिनमें आप गति करते हैं और कुछ गतिविधियाँ ऐसी होती हैं जिनमें आप गति नहीं करते। आपकी गतिविधि एक स्थिर बिंदु से मिलकर बनती है जहाँ से आप गति करना प्रारंभ करते हैं और फिर रुकने की मुद्रा में वापस आ जाते हैं। आइए आनंददायी गतिविधियों से आरंभ करें और देखें कि वे नृत्य की गतियों से कैसे जुड़ती हैं।

शिक्षक-संकेत— 4-मात्रा की लय को निरंतर रखते हुए शिक्षक अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को चार या पाँच समूह में विभाजित करेंगे।

गतिविधि 15.2 मूर्ति खेल (स्टैचू गेम)

क्या आप मूर्ति का खेल खेलने के लिए तैयार हैं? आप पहले जिन गतियों, स्थिरता और भावों का अभ्यास कर चुके हैं, आइए उन्हें एक साथ जोड़ते हैं।

आपको संगीत की धुन पर नृत्य करना है। जैसे ही आपको शिक्षक से ध्वनि संकेत प्राप्त हो वैसे ही आप नृत्य मुद्रा में मूर्ति बन जाइए। यदि कोई विद्यार्थी नृत्य मुद्रा में मूर्ति ना बन पाए तो उसे शिक्षक से एक पर्ची लेनी होगी जिस पर एक भाव लिखा होगा। विद्यार्थी को उस भाव को अभिनय द्वारा दर्शाना होगा।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 15.3 दैनिक जीवन में हस्त-मुद्राएँ

जाने-अनजाने में आप अपनी दैनिक गतिविधियों में नृत्य से संबंधित हस्त-मुद्राओं का उपयोग करते हैं। आप पशुओं से संबंधित हस्त-मुद्राओं से भी परिचित हैं। आइए, अब नृत्य में उपयोग की जाने वाली अन्य हस्त-मुद्राओं के विषय में जानें जो सामान्यत: दैनिक जीवन में देखी या उपयोग की जाने वाली विभिन्न वस्तुओं का प्रतीक हैं।

हस्त-मुद्राएँ							
त्रिपताका		अर्धपताका		अंजलि		कपोत	
करतरीमुख		अर्धचंद्र		करकट		स्वस्तिक	
अराल		शुकतुण्ड		डोला	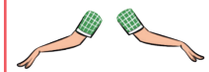	पुष्पपुता	
शिखर		कटकामुख		उत्संग		शिवलिंग	
सूची		पद्मकोश		कटकवर्धन		कर्तरी स्वस्तिक	
मृगशीर्ष		कंगुल		शंका	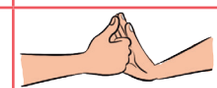	चक्र	
चतुरा		समदमशा		संपुटा		नागबंध	
त्रिशूला				खट्व	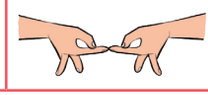	अवहिता	

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 15_Hindi.indd 137 07-Jan-26 2:19:15 PM

पिछले पृष्ठ पर दिखाई गई हस्त-मुद्राओं को देखिए। नृत्य में उपयोग की जाने वाली विभिन्न हस्त-मुद्राएँ संवाद करने एवं कहानियों के अर्थ व्यक्त करने की प्रभावशाली विधियाँ हैं। विचार कीजिए कि आप इन हस्त-मुद्राओं का उपयोग कहाँ कर सकते हैं? संभवतः जब आप नृत्य करते हैं, अपने मित्रों के साथ खेलते हैं या दैनिक गतिविधियों में मौज-मस्ती के लिए हस्त-मुद्राओं का उपयोग करते हैं। हस्त-मुद्राओं के उपयोग के लिए नीचे दिए गए उदाहरणों को देखिए।

हस्त-मुद्राएँ

ध्वज के रूप में *'त्रिपताका'*	कैंची के रूप में *'करतरीमुख'*	त्रिशूल अथवा तीन के रूप में *'त्रिशूला'*	कानों में पहनना के रूप में *'कटकामुख'*	अंगों को मोड़ने के लिए *'करकट मुद्रा'*	*'डोला मुद्रा'*, समान रूप में खड़े होना	गले लगाने के रूप में *'उत्संग'* मुद्रा	मगरमच्छ के रूप में *'स्वस्तिक'*
		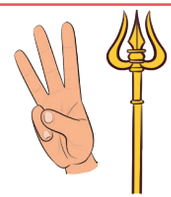			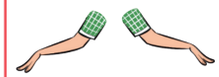		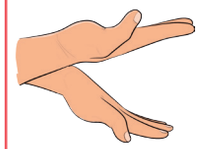

निम्नलिखित हस्त-मुद्राओं का उपयोग आप दैनिक जीवन में किस प्रकार करेंगे—

- शिखर _____
- अर्धचंद्र _____
- सूची _____
- चतुरा _____
- संपुटा _____
- पुष्पपुता _____
- शिवलिंग _____
- चक्र _____
- शंका _____

अब आप में से प्रत्येक विद्यार्थी सीखी हुई हस्त-मुद्राओं में से कम से कम एक हस्त-मुद्रा का उपयोग करते हुए एक वाक्य बनाइए और देखिए कि क्या आपके सहपाठी अनुमान लगा पाते हैं कि आप क्या कह रहे हैं।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 15.4 नृत्य में हाथों की स्थिति

क्या आपने देखा है कि नृत्य में हाथ विभिन्न प्रकार से घूमते हैं? ये क्षैतिजक, लंबवत, अर्ध वृत्ताकार, वृत्ताकार और विकर्णाकार संचालित हो सकते हैं।

अब आप नीचे दिए गए चित्रों में दर्शाए अनुसार अपने हाथों को ज्यामितीय आकारों में घुमाने का प्रयास कीजिए।

- **वृत्ताकार संचलन**— दोनों हाथों को नीचे से ऊपर की ओर घुमाकर वृत्ताकार आकृति बनाइए, जैसे कि आप एक बड़ा वृत्त बना रहे हो।

- **अर्ध-वृत्ताकार संचलन**— एक हाथ को नीचे से ऊपर की ओर गोलाकार तरीके से घुमाएँ, जैसे कि आप अक्षर C लिख रहे हों।

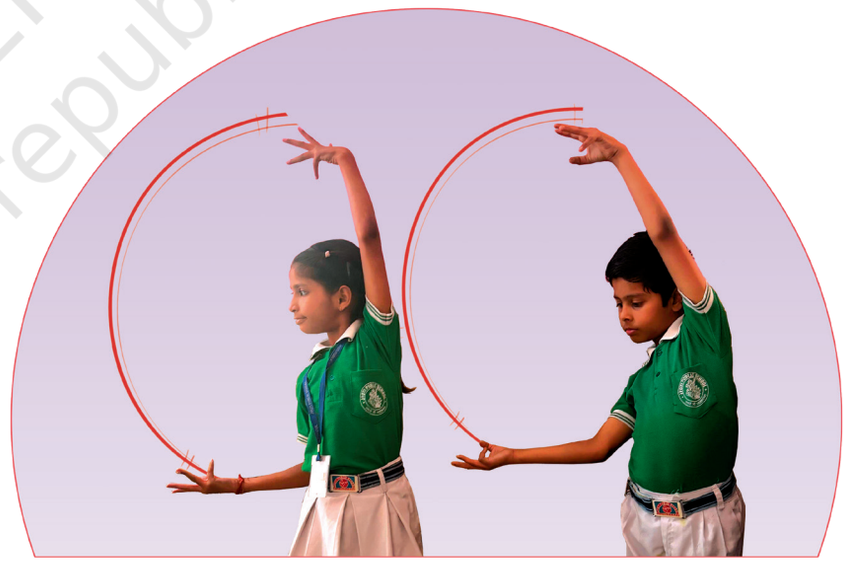

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 15_Hindi.indd 139 07-Jan-26 2:19:17 PM

क्षैतिजिक संचलन

(क) आगे बढ़ें और अपनी भुजाओं को एक सीधी रेखा में सामने से दोनों ओर फैलाएँ।

(ख) अपनी भुजाओं को सीधी रेखा में दोनों ओर फैलाएँ जिससे वक्र आकार बन जाए।

विकर्णाकार संचलन

विकर्ण आकार बनाने के लिए अपनी भुजाओं को विपरीत दिशाओं में फैलाएँ— एक ऊपर की ओर तथा एक नीचे की ओर।

लंबवत संचलन

दोनों भुजाओं को सीधी रेखा में नीचे और ऊपर ले जाएँ।

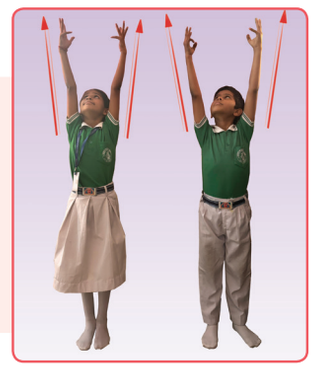

क्या आप नृत्य करते समय अपनी भुजाओं के अन्य रचनात्मक उपयोग पर विचार कर सकते हैं? अपनी भुजाओं से विशेष मुद्राएँ बनाकर उन्हें प्रदर्शित कीजिए।

© NCERT not to be republished

नेत्र और भौंहें

नेत्रों का उपयोग नृत्य करने और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए भी किया जाता है। क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि आप बात करते समय, नृत्य करते समय और भावनाओं को व्यक्त करते समय जब आप नेत्रों का उपयोग करते हैं तब एक साथ भौंहों का भी उपयोग करते हैं।

गतिविधि 15.5
नृत्य में नेत्रों की मुद्राएँ

आइए, हम काल्पनिक रेखाओं का अनुसरण करते हुए नेत्रों को घुमाने का प्रयास करें।

- समानांतर

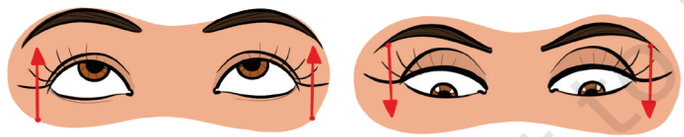

- क्षैतिजिक

- विकर्णाकार

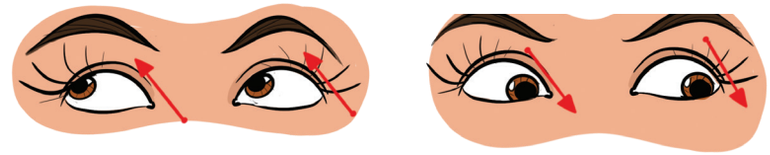

- वृत्ताकार

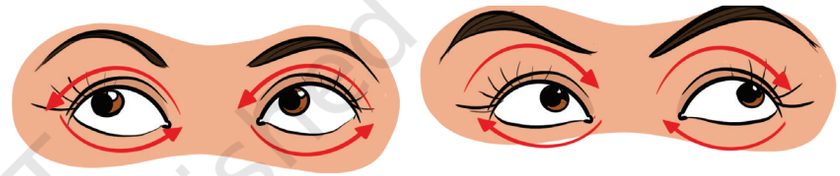

नेत्र गतियों के अभ्यास से नेत्रों की मांसपेशियाँ भी सुदृढ़ होती हैं।

स्तर 1

पूर्व में हाथों के लिए बताई गई गतियों को नेत्रों की गतियों के साथ करें।

स्तर 2

अब नेत्रों, हाथों और पैरों की गतियों को एक साथ करें और समान सरगम का उपयोग कर स्वयं की गतियाँ बनाएँ।

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 15_Hindi.indd 141 07-Jan-26 2:19:22 PM

आकलन

अध्याय 15 – नृत्य के विभिन्न रंगों में मेरी दिनचर्या				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.1	संगीत की लय पर उत्साहपूर्वक नृत्य करते हैं।		
CG-1	C-1.1	हस्त-मुद्राओं से ज्यामितीय स्वरूप को समझते हैं।		
CG-1, CG-2	C-1.1, C-2.1	नेत्रों की गति की विभिन्न पद्धतियों को समझते हैं।		
CG-2	C-2.1	स्थिरता से उभरने वाली गति की अवधारणा को समझते हैं।		
CG-2	C-2.1	कार्यों के लिए कल्पनाशील ढंग से हस्त-मुद्राओं का उपयोग करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

अध्याय 16

लय के साथ नृत्य

0538CH16

ताल क्या है?

किसी भी गति की निश्चित एवं नियमित शृंखला को ताल कहा जाता है। अब आप चार मात्रा में स्थिरता का अभ्यास सीख चुके हैं।

शिक्षक-संकेत— इस गतिविधि के लिए शिक्षक विद्यार्थियों के छोटे समूह बना सकते हैं और प्रत्येक समूह को यह गतिविधि करने के लिए कह सकते हैं।

गतिविधि 16.1 ताल के साथ नृत्य

शिक्षक आपको पूर्व में अभ्यास किए चार मात्राओं वाला ताल देंगे और आप परिचित पद संचलन के साथ ताल पर नृत्य करेंगे। शिक्षक के थम जाने पर भी आपको उसी ताल पर थिरकते हुए ताली, पैरों की थाप अथवा थाप के साथ अपनी लय बनाए रखनी होगी। इस गतिविधि को कई बार दोहराया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

लय क्या है?

संगीत में गति को लय कहते हैं। लय में तीव्र या धीमी गति के परिवर्तन को लय में परिवर्तन कहा जाता है।

गतिविधि 16.2 लय के साथ नृत्य

स्तर 1— पैरों की थाप करते हुए 'चलने' एवं 'तीव्र गति से चलने' जैसे अपने दैनिक क्रियाकलाप करने का प्रयास करें। ताली बजाते हुए स्पंदन को बनाएँ रखें। कक्षा में (4+4) अर्थात 8 मात्रा पर स्थिर गति से घूमें। अब उन्हीं 8 मात्राओं पर दोगुनी गति से चलें। क्या आप अंतर समझ पाए? जब आप चलते हैं तो गति धीमी होती है परंतु जब आप उसी मात्रा पर दोगुनी गति से चलते हैं तो लय तीव्र हो जाती है।

उदाहरण के लिए, साधारण चाल और तीव्र गति की चाल के थाप तुलना करने पर दोनों ही 8 मात्रा ताल में उपयुक्त होते हैं किंतु गति लय के साथ परिवर्तित होती है।

© NCERT not to be republished

आइए, ताल को और अधिक रोमांचक पद्धति से समझें।

स्तर 2— लय के साथ नृत्य आरंभ करें — लय को बाँधकर रखने के लिए ताली अथवा चुटकी बजाते हुए आठ मात्रा दोहराएँ।

लय 1— मात्रा के साथ चलना

आठ मात्राओं की ताल के अनुसार कक्षा में शिक्षक के निर्देशानुसार घूमें।

उदाहरण—

(1) पद (2) पद (3) एड़ी (4) पैरों की थाप (5) पद (6) पद (7) एड़ी (8) पैरों की थाप

दाहिना (दा) और बायाँ (बा)

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 16_Hindi.indd 145 07-Jan-26 2:21:07 PM

लय 2— मात्रा को दोगुना करें— आठ मात्रा में आठ पद के स्थान पर उन्हीं आठ मात्राओं में 16 बार जल्दी से पद उठाएँ। अब आप दोगुनी गति से आगे बढ़ रहे हैं। क्या आप ऊर्जा में परिवर्तन अनुभव कर सकते हैं?

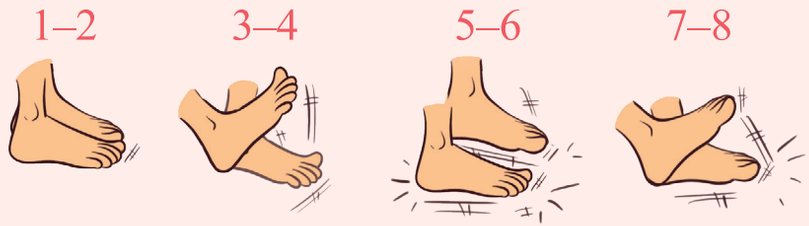

आप प्रत्येक लय में संचलन के समय कैसा अनुभव कर रहे हैं? आपको किसमें अधिक आनंद आया? क्या आप लय के साथ तालमेल बैठा पा रहे हैं? आइए, अब इसका संगीत के साथ प्रयास करें। आप अपने क्षेत्र या संगीत कक्षा से कोई ऐसा लोकगीत चुनें जो चार मात्रा की लय में निबद्ध हो और इसे ऊपर बताए गए अभ्यास के अनुसार धीमी और तीव्र लय के साथ अपने नृत्य में सम्मिलित करें।

गतिविधि 16.3 हाथ और पैरों के साथ जोड़ें

आइए, दो विभिन्न गतिविधियों का हाथों और पैरों का एक साथ उपयोग करते हुए प्रदर्शन करें।

हस्त संचालन के लिए चार-मात्रा का ताल जोड़कर संचलनों का एक क्रम बनाएँ और संगीत कक्षा में सीखी गई सरगम गाएँ। हाथ और पैरों के संचलनों का अभ्यास करने के लिए 'सा रे ग म प ध नी सां' का ताल के रूप में उपयोग करें और हाथों को दो अलग-अलग लय में घुमाएँ।

© NCERT not to be republished

उदाहरण के लिए—

लय 1— आइए 'सा रे ग म प ध नि सां' गाते हुए हाथों को नीचे से ऊपर की ओर गोलाकार गति में ले जाएँ और उसी प्रकार 'सां नि ध प म ग रे सा' गाते हुए हाथों को ऊपर से नीचे की और लाएँ।

हाथों की आरंभिक स्थिति

हाथों को उठाएँ

हाथों को नीचे लाएँ

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 16_Hindi.indd 147 07-Jan-26 2:21:11 PM

लय 2 — आइए गाएँ

सा रे ग म – हाथों को नीचे से ऊपर की ओर उठाएँ।

प ध नि सां – हाथों को ऊपर से नीचे की ओर लाएँ।

सां नि ध प – हाथों को नीचे से ऊपर की ओर उठाएँ।

म ग रे सा – हाथों को ऊपर से नीचे की ओर लाएँ।

हाथ की प्रत्येक गति के साथ विभिन्न लयों में सरगम गाने का प्रयास कीजिए और आनंद की अनुभूति कीजिए।

© NCERT not to be republished

उछलना और चक्राकार घूमना

क्या आपको कक्षा 4 में भिन्न-भिन्न प्रकार से उछलना और चक्राकार घूमना स्मरण है? इस गतिविधि में सीखी गई उछाल और चक्रगति को ताल के साथ करें ताकि नृत्य शैलियों का अधिकाधिक आनंद लिया जा सके।

शिक्षक-संकेत— पैरों की स्थिति के लिए कक्षा 4 की पुस्तक में दिए गए चित्र को देखें।

गतिविधि 16.4 निश्चित गति से उछलना

उछलते समय चार मात्राएँ गिनें। उछलने की तकनीक के लिए नीचे दी गई तालिका का पालन करें। उछलने के विभिन्न युग्मों को चार मात्राओं के साथ जोड़कर आनंद लें।

© NCERT not to be republished

दाएँ पैर से आरंभ करें				बाएँ पैर से आरंभ करें			
1. दायाँ (*झम*)	**2. दायाँ (*झम*)**	**3. बायाँ (*झम*)**	**4. दायाँ (*झम*)**	**1. बायाँ (*झम*)**	**2. बायाँ (*झम*)**	**3. दायाँ (*झम*)**	**4. बायाँ (*झम*)**
उछलना	पैरों की थाप	पैरों पर घूमना	पैरों की थाप	उछलना	पैरों की थाप	पैरों पर घूमना	पैरों की थाप

Part-4 Chapter 16_Hindi.indd 149 07-Jan-26 2:21:11 PM

गतिविधि 16.5 ताल के साथ घूमना

उछलने के पश्चात अब चार मात्रा की ताल में घूमने की प्रक्रिया को समझें।

दाएँ पैर से आरंभ करें				बाएँ पैर से आरंभ करें			
1. दाएँ (थेई)	**2. बाएँ (थेई)**	**3. दाएँ (थेई)**	**4. बाएँ (थेई)**	**1. बाएँ (थेई)**	**2. दाएँ (थेई)**	**3. बाएँ (थेई)**	**4. दाएँ (थेई)**
पैरों की थाप करते हुए घूमना	पैरों की थाप	पैरों की थाप	पैरों की थाप	पैरों की थाप करते हुए घूमना	पैरों की थाप	पैरों की थाप	पैरों की थाप

उछलने और घूमने के विभिन्न प्रकारों का चार मात्राओं के तालाघात के साथ प्रयास कीजिए।

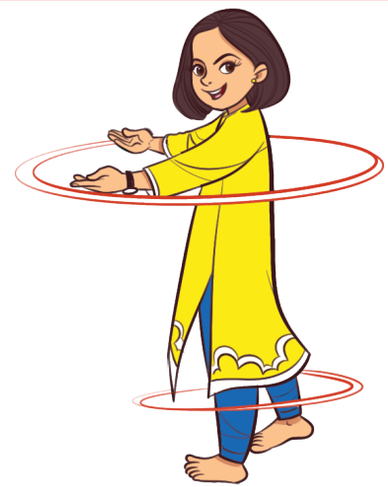

© NCERT not to be republished

गतिविधि 16.6

तीन मात्राओं के साथ पद संयोजन

अब तीन मात्राओं के आधार पर पैरों के संचलन का प्रयास कीजिए।

युग्म 1

दाएँ पैर से आरंभ करें			बाएँ पैर से आरंभ करें		
1. दायाँ (*दी*)	**2. बायाँ (*दी*)**	**3. दायाँ (*दी*)**	**1. बायाँ (*दी*)**	**2. दायाँ (*दी*)**	**3. बायाँ (*दी*)**
पैरों पर घूमना	पैरों की थाप	पैरों की थाप	पैरों पर घूमना	पैरों की थाप	पैरों की थाप

युग्म 2

दाएँ पैर से आरंभ करें			बाएँ पैर से आरंभ करें		
1.दायाँ (*दी*)	**2. बायाँ (*दी*)**	**3. दायाँ (*दी*)**	**1. बायाँ (*दी*)**	**2. दायाँ (*दी*)**	**3. बायाँ (*दी*)**
एड़ी सामने की ओर	पैरों की थाप	पैरों की थाप	एड़ी सामने की ओर	पैरों की थाप	पैरों की थाप

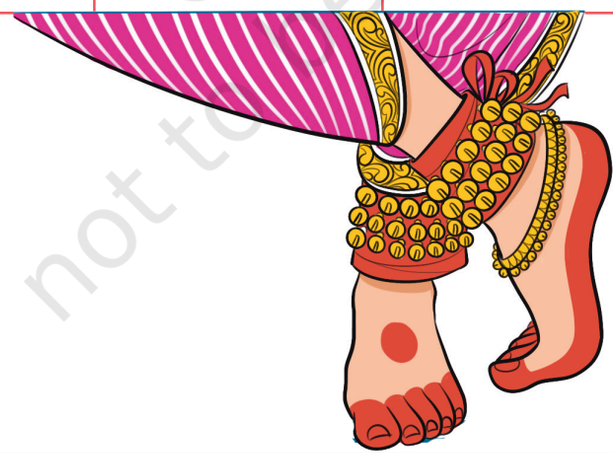

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 16_Hindi.indd 151 07-Jan-26 2:21:14 PM

आकलन

अध्याय 16 — लय के साथ नृत्य				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.2	हाथों और पैरों की गतियों के साथ ताल का समन्वय करते हैं।		
CG-1	C-1.2	विभिन्न तकनीकों को समझते हैं और उत्साहपूर्वक उनका उपयोग करते हैं।		
CG-2	C-2.2	ताल और लय की अवधारणा और संबंध को समझते हैं।		
CG-2	C-2.2	नृत्य में नियमित लय के साथ उछलना और चक्कर लगाना सीखते हैं।		
CG-2	C-2.2	अपनी कल्पनाशीलता और सचेतना से नृत्य में नए पदों का समावेश करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

अध्याय 17

राष्ट्रीय नृत्य

0538CH17

भारत में नृत्य की अनेक शैलियाँ प्रचलित हैं। इसके प्रत्येक क्षेत्र में नृत्य के विभिन्न प्रकार पाए जाते हैं। इनमें से कुछ नृत्य पारंपरिक हैं तथा कुछ लोक आधारित हैं तो कुछ आनुष्ठानिक हैं। इसके विषय में आपने अपनी पाठ्यपुस्तक *हमारा अद्भुत संसार* में भी सीखा है। आइए चित्रों, दिनदर्शक (कैलेंडर), वीडियो और जो भी अन्य रूप आप कक्षा में दिखाने के लिए ला सकते हैं, उनके माध्यम से भारतीय नृत्य शैलियों के विषय में सूचना प्राप्त करें।

गतिविधि 17.1 मेरा नृत्य कोलाज

- नृत्यों के चित्र एकत्रित कीजिए और उन्हें इस पृष्ठ के दाहिने भाग में चिपकाइए या हाथ से बनाइए।
- अध्याय 16 में नृत्य की विभिन्न गतियों एवं मुद्राओं के चित्र दिए गए हैं उनका अनुकरण कीजिए।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 17.2 मेरे नृत्य की तालबद्ध विविधता

नृत्यों को उनके भौगोलिक स्थानों से जोड़िए और राज्यों के अनुसार भारत के मानचित्र में अंकित कीजिए।

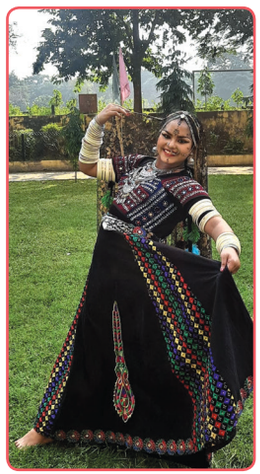

© NCERT not to be republished

गतिविधि 17.3

नृत्यों का राज्यों से मिलान

एक घूमने वाला पहिया बनाइए जिसमें तीररूपी संकेतक लगा हो। उस पहिए पर विभिन्न क्षेत्रीय नृत्यों के नाम लिखिए।

पहिए को घुमाइए और जब यह रुक जाए तो तीर के समक्ष इंगित नृत्य के अनुरूप क्षेत्र की पहचान कीजिए।

गतिविधि 17.4

अपने नृत्य में समाहित

प्रसार भारती अभिलेखागार से 'मिले सुर मेरा तुम्हारा' का वीडियो ऑनलाइन देखें।

आपने पूर्व में जो विभिन्न हस्त-मुद्राएँ और नृत्य के चरण सीखे हैं, उन्हें पहचानिए? अब अपनी रुचि की नृत्य शैलियों के साथ गीत पर अपनी नृत्य रचना कीजिए, जिसमें पहले सीखे गए नृत्य के सभी तत्व विद्यमान हों। यह भी सुनिश्चित कीजिए कि क्या आप वीडियो में देखे गए नृत्यों में से अपनी पसंद की पैरों की थाप और एक हस्त मुद्रा अपनी नृत्य रचना में सम्मिलित कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 17_Hindi.indd 155 07-Jan-26 2:18:06 PM

नृत्योत्सव

उत्सव सभी को प्रसन्नता एवं उत्साह का अनुभव कराते हैं। भिन्न-भिन्न प्रसंगों और अवसरों को मनाने की अनेक विधियाँ हैं। क्या आपने कभी राष्ट्रीय पर्वों के अवसर पर विशेष नृत्य की प्रस्तुति दी है? संभवत: आपने इन अवसरों को अपने परिवार, संबंधियों या मित्रों के साथ मनाया होगा।

क्या आपने कभी अनुभव किया है कि ये उत्सव नृत्य के बिना अधूरे हैं? नृत्य प्रत्येक प्रसंग और परिस्थिति में जीवंतता ला देता है। इसमें सभी आयु वर्ग के व्यक्तियों को एकजुट करने की शक्ति विद्यमान होती है।

गतिविधि 17.5 देशभक्ति नृत्य

आइए एक और नृत्योत्सव की चर्चा करते हैं। इस गतिविधि में आपको देश के प्रति सम्मान और प्रेम व्यक्त करते हुए हमारे राष्ट्रीय पर्वों को मनाना है। नृत्य कला के माध्यम से आप अपनी भावनाओं को सुंदरता से व्यक्त कर सकते हैं।

कक्षा के विद्यार्थियों को तीन या चार समूहों में विभाजित करें। प्रत्येक समूह को गीत से एक अंतरा चुनने के लिए कहें। सभी एक समूह के रूप में एक साथ आएँ और गीत के लिए उपयुक्त हस्त-मुद्राओं और गतियों की पहचान करें। अंत में गीत की लय, ध्वनि, संगीत के अनुसार भिन्न-भिन्न पैरों की थाप करें।

प्रत्येक समूह गीत की धुन पर अपने चुने हुए अंतरे पर प्रस्तुति देते हुए एक साथ मिलकर संपूर्ण नृत्य प्रस्तुत करे।

उदाहरण के लिए, आप 'वंदे मातरम्' अथवा सी. सुब्रमण्यम भारती का 'पारुकुल्ले नल्ला नाडु' या आपकी क्षेत्रीय भाषा का कोई देशभक्ति गीत प्रस्तुति के लिए चुन सकते हैं।

© NCERT not to be republished

आकलन

अध्याय 17 — राष्ट्रीय नृत्य				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-1	C-1.2	विभिन्न नृत्य शैलियों को जानने और सीखने की पहल करते हैं और प्रयास करते हैं।		
CG-1	C-1.2	सामूहिक रूप से एक देशभक्ति नृत्य का संयोजन कर उसकी प्रस्तुति देते हैं।		
CG-2	C-2.2	उत्साहपूर्वक विभिन्न क्षेत्रों के नृत्य सीखते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 17_Hindi.indd 157 07-Jan-26 2:18:08 PM

अध्याय 18

नृत्य द्वारा भावाभिव्यक्ति एवं कथावाचन

गतिविधि 18.1

भावनाएँ व्यक्त करना

जब आप कक्षा में आते हैं और अपने मित्रों से मिलते हैं तो क्या आप उनके मुख पर अलग-अलग भाव-भंगिमाएँ देखते हैं? कक्षा 4 में आपने विभिन्न भावों के विषय में पढ़ा और उन्हें व्यक्त करना सीखा है। हमने यह भी देखा कि विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के भावों का अनुभव होता है — चाहे वे परिस्थितियाँ सकारात्मक हों अथवा अवांछनीय। आप प्रायः वांछनीय अथवा अवांछनीय परिस्थितियों को नृत्य के माध्यम से विभिन्न भावों में व्यक्त कर सकते हैं। नृत्य आपको मनोभावों का अनुभव करने और उन्हें व्यक्त करने का माध्यम बनता है।

हास्य

विस्मय

विरुचि

0538CH18

© NCERT not to be republished

गतिविधि 18.2

नेत्रों एवं भौंहों द्वारा भावाभिव्यक्ति

दु:ख

भय

सराहना

क्रोध

क्या आप यह मानते हैं या अनुभव करते हैं कि हमारे नेत्र हमारी भावनाओं का दर्पण हैं? नेत्रों एवं भौंहों की गतिविधियों को हस्त-मुद्राओं के साथ समायोजित करते हुए अग्रलिखित भावों को व्यक्त करने का प्रयास कीजिए।

- क्रोध में नेत्र फैलाते हुए — "दूर जाओ" कहने के लिए 'सुचि' हस्त-मुद्रा का उपयोग।

- हर्ष में नेत्र चमकदार हो जाते हैं — 'पुष्पपुट' हस्त-मुद्रा में सुंदर फूलों को पकड़ना।

- दु:ख में नेत्र सिकुड़ जाते हैं — गले लगने की अभिलाषा के लिए 'उत्संग' मुद्रा का उपयोग।

- कनखियों से देखना — 'सम्पुट' हस्त-मुद्रा में कुछ छुपाते हुए चोरी-छिपे देखना।

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 18_Hindi.indd 159 15-Dec-25 12:36:11 PM

गतिविधि 18.3
दो विपरीत भावों को व्यक्त करना

अपने साथी का चुनाव कर एक सुखद भाव पर तथा एक ऐसे भाव पर चर्चा करें जो आपको व्याकुल कर रहा हो। अभिनय के माध्यम से भावों का उपयोग करते हुए अपने मित्र को आपकी स्थिति को समझाने का प्रयास कीजिए।

सजग रहें और अपने नेत्रों व हस्त-मुद्राओं का उपयोग करें। उन इंद्रियों की पहचान करें जिनका उपयोग भाव-विशेष के लिए किया गया है। अब आप अन्य मित्रों के साथ मिलकर उन स्थितियों तथा व्यक्त किए गए भावों पर एक रचनात्मक कथा का निर्माण कीजिए।

विपरीत भाव

साहस

भय

विपरीत भाव

आनंद

क्रोध

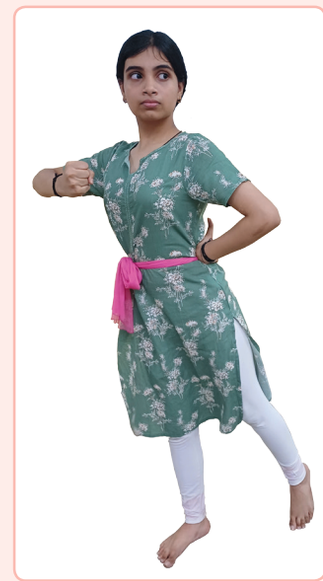

© NCERT not to be republished

कक्षा में उपर्युक्त गतिविधियों पर विचार-विमर्श कीजिए तथा अपने भावों को चित्रित कर कक्षा में साझा कीजिए।

उदाहरण— आप बोतलों के ढक्कनों को एकत्रित कर उन पर अपने भाव (इमोजी) को चित्रित कर सकते हैं। इस प्रकार बनाए गए भाव प्रदर्शित करने वाले ढक्कनों को अपने मित्रों के साथ साझा करें तथा इन ढक्कनों को एक-दूसरे के साथ परिवर्तित करें।

शिक्षक-संकेत — भावों को चित्रित करने के लिए किसी भी सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।

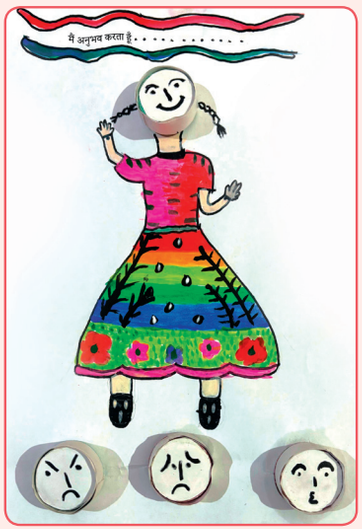

गतिविधि 18.4 नृत्य में प्रयुक्त मंच-सामग्री

दुपट्टे का उपयोग मोरपंख के रूप में किया जाता है।

रबर बैंड का उपयोग कठपुतलियों की तरह नृत्य करने के लिए किया जाता है।

देश के विभिन्न नृत्य रूपों में मंच-सामग्री का उपयोग किया जाता है। मंच-सामग्रियों में गुजरात के 'गरबा' नृत्य में डांडियाँ और मिजोरम के 'चेराव' नृत्य में बांस के डंडे उल्लेखनीय हैं। पहले की गई गतिविधियों में आपने विभिन्न क्षेत्रों के नृत्यरूपों में ऐसी मंच-सामग्रियों का उपयोग होते अवश्य देखा होगा। मंच-सामग्रियों का उपयोग नृत्य संरचना में भी किया जाता है।

Part-4 Chapter 18_Hindi.indd 161 15-Dec-25 12:36:21 PM

गतिविधि 18.5 काल्पनिक मंच सामग्रियाँ

मोहिनीअट्टम के पंथट्टम गेंद के साथ खेलते हुए कलाकार

क्या आप जानते हैं?

क्या आप कृष्ण और उनके मित्रों के गेंद खेलने की कहानी जानते हैं?

- ऐसी गतिविधियाँ कीजिए जिनका उपयोग आप काल्पनिक गेंद खेलते हुए दिखाने के लिए कर सकते हैं।
- फिर इन गतिविधियों को नृत्य के चरणों के साथ जोड़िए तथा हस्त-मुद्राओं का उपयोग करके कृष्ण और उनके मित्रों द्वारा गेंद खेलते हुए दिखाने के लिए नृत्य की रचना कीजिए।
- क्या चार तालों वाला मधुर बाँसुरी संगीत इस नृत्य के अनुकूल हो सकता है?

आप काल्पनिक मंच-सामग्रियों का भी उपयोग कर सकते हैं। कई भारतीय नृत्य शैलियों में ऐसे दृश्य होते हैं जिनमें नर्तक व नर्तकियों को काल्पनिक गेंद के साथ खेलते हुए दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, मोहिनीअट्टम का पंथट्टम या मणिपुरी का कंदुक खेल।

शिक्षक-संकेत— शिक्षक सरलता से उपलब्ध किसी भी बाँसुरी संगीत का उपयोग कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

गतिविधि 18.6

पाँच इंद्रियों द्वारा अभिव्यक्ति

क्या आप पाँच इंद्रियों के विषय में जानते हैं? ये पाँच इंद्रियाँ दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद और स्पर्श हैं। आप इन इंद्रियों का उपयोग सदैव करते हैं।

आइए इन इंद्रियों को ऋतुओं, क्रियाओं और नृत्य की भाव-भंगिमाओं से जोड़ें। अपने क्षेत्र की किसी एक कहानी या प्रकृति गीत को चुनें। अब अपने भावों को इंद्रियों के माध्यम से उस कहानी द्वारा व्यक्त कीजिए।

प्रश्नों के उत्तर नीचे दिए गए स्थान में लिखिए—

- आपने क्या देखा?
- आपने क्या सुना?
- आपने कैसी सुगंध का अनुभव किया?
- आपने कैसा स्वाद अनुभव किया?
- आपके शरीर ने क्या अनुभव किया?

अब उपर्युक्त नृत्य-चरणों को हाथों की गतियों, उचित हस्त-मुद्राओं, नेत्राभिनय और मुख के भावों के साथ जोड़िए ताकि आप उपर्युक्त सभी इंद्रियों को नृत्य के माध्यम से व्यक्त कर सकें।

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 18_Hindi.indd 163 15-Dec-25 12:36:24 PM

गतिविधि 18.7 कथावाचन नृत्य

अब इस कहानी को नृत्य के विभिन्न चरणों, जैसे— उछलना, हस्त-मुद्राएँ, पैरों एवं हाथों की गति, भावों, नेत्रों एवं भौंहो की अभिव्यक्ति आदि के साथ प्रस्तुत करें। इसके लिए संगीत का भी चयन करें। आप चाहें तो अपनी कहानी के लिए एक गीत तैयार कर सकते हैं जिसमें आप संगीत-कक्षा में सीखी गई स्वरलिपियाँ या ढोलक अथवा लकड़ी की छड़ियों से उत्पन्न तालाघातों का उपयोग कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

आकलन

अध्याय 18 – नृत्य द्वारा भावाभिव्यक्ति एवं कथावाचन				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-2	C-2.1	विभिन्न भावों को सरलता से व्यक्त करते हैं।		
CG-2	C-2.1	रचनात्मक रूप से नेत्रों, भौंहों और हस्त-मुद्राओं के माध्यम से भावों को व्यक्त करते हैं।		
CG-2	C-2.2	कहानी सुनाने के लिए विभिन्न भावों का उपयोग करते हैं।		
CG-3	C-3.1	वास्तविक और काल्पनिक सामग्री का उपयोग कर रचनात्मकता प्रदर्शित करते हैं।		
CG-4	C-4.1	नृत्य के माध्यम से पाँचों इंद्रियों को प्रस्तुत करने के प्रति उत्सुकता प्रदर्शित करते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 18_Hindi.indd 165 15-Dec-25 12:36:26 PM

अध्याय 19

अपना एवं दूसरों का नृत्य

0538CH19

गतिविधि 19.1 मेरा क्षेत्रीय नृत्य

क्या आप अपने क्षेत्र की किसी नृत्य शैली का अभ्यास करते हैं? क्या आपने कभी नर्तक-नर्तकियों को आपका क्षेत्रीय नृत्य करते हुए देखा है? अब आप किसी क्षेत्रीय नृत्य कलाकार से मिलिए और उनसे उस नृत्य को सीखिए।

शिक्षक-संकेत— किसी क्षेत्रीय नृत्य कलाकार या समूह से मिलने जाने का प्रबंध कीजिए।

उनके नृत्य की विशेषताओं की सूची बनाइए।

- नृत्य का नाम _____
- प्रस्तुति के समय कौन-सी वेशभूषा धारण की जाती है? _____
- क्या आपने किसी नृत्य-सामग्री का उपयोग किया? _____
- यह नृत्य किस अवसर पर किया जाता है? _____
- नृत्य में उपयोग किए गए वाद्ययंत्रों की सूची बनाइए। _____

© NCERT not to be republished

गतिविधि 19.2 मेरे पड़ोसी क्षेत्रों के नृत्य

अपने शिक्षक और सहपाठियों के साथ आस-पास के क्षेत्रीय लोक नृत्यों पर चर्चा कीजिए और उनकी सूची बनाइए। विचार कीजिए कि आप कौन-सा नृत्य सीखना चाहते हैं।

किसी कार्यशाला में भाग लेकर या किसी कलाकार से अपने पड़ोसी क्षेत्र की नृत्य शैली सीखें।

अपने क्षेत्रीय लोक नृत्य और पड़ोसी क्षेत्रीय लोक नृत्य की तुलना कीजिए और उसे तालिका में भरिए।

	मेरा क्षेत्रीय लोक नृत्य	पड़ोसी क्षेत्रीय लोक नृत्य
1. नाम		
2. वेशभूषा		
3. मुख्य वाद्ययंत्र		
4. नृत्य सामग्री		

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 19_Hindi.indd 167 28-Nov-25 10:35:44 AM

गतिविधि 19.3 अंतिम प्रस्तुति

अपने क्षेत्रीय नृत्य या पड़ोसी क्षेत्रों के नृत्यों को विद्यालय में प्रस्तुत कीजिए।

आकलन

अध्याय 19 — अपना एवं दूसरों का नृत्य				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**अधिगम प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
CG-3	C-3.1	अपने क्षेत्रीय नृत्य को सीखने में रुचि दिखाते हैं।		
CG-3	C-3.2	नृत्य प्रस्तुत करने के लिए सम्मिलित प्रयास करते हैं।		
CG-4	C-4.2	पड़ोसी क्षेत्रों के नृत्यों के संबंध में सक्रिय रूप से चर्चा करते हैं और उन्हें सीखते हैं।		

शिक्षक-अवलोकन

अन्य टिप्पणियाँ

© NCERT not to be republished

Part-4 Chapter 19_Hindi.indd 169 28-Nov-25 10:35:48 AM

योगात्मक आकलन

नृत्य	व्यक्तिगत	सामूहिक – 4 या 5 समूहों में विभाजित
	1. हाथ, पैर और नेत्रों के साथ गति दर्शाता है।	प्रत्येक समूह को भारत की एक नृत्य शैली की कुछ पंक्तियाँ प्रदर्शित करनी होंगी।
	2. स्वयं के अनुभव के आधार पर या हस्त-मुद्राओं से प्रकृति के संबंध में चयन की भावना प्रदर्शित करता है।	प्रत्येक समूह एक भाव का चयन करेगा तथा उस भाव से जुड़ी भावना को हाव-भाव और हस्त-मुद्राओं का उपयोग करते हुए एक वाक्य में दर्शाएगा।

© NCERT not to be republished